विचार दृष्टि

वर्ष : 5 | अंक : 16 | जुलाई–सितंबर 2003 | 15 रुपये

कोसी रेल महासेतु का शिलान्यास प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा

अनंत यात्रा पर प्रस्थित गीतकार गोपीवल्लभ को प्रणाम ....

स्मृति चित्र

रोटी पर भूखे का नाम, लिखती सुबह मिटाती शाम
रोटी चाबुक, भूख गुलाम, नेताओं को करो प्रणाम।

गीत दो लिखे मैंने जन्म के मरण के
एक तुम न सुन सकी, एक मैं न गा सका।

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-5 जुलाई-सितंबर, 2003 अंक-16

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

उप संपादक : **धनंजय श्रोत्रिय**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्द संयोजन : **सोलूसंस प्वायंट**

(शशि भूषण, दीपक कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652

फैक्स: (011)22530652

E-mail vicharbharat@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 28897962

कोलकाता: जितेन्द्रधीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676

अहमदाबाद: वीरेंद्र सिंह ठाकुर☎22870167

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फ़ेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक :

कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली

दूरभाष: 27666084 (P.P.)

मूल्य: एक प्रति 15 रुपये

द्विवार्षिक: 100 रुपये

आजीवन सदस्य: 1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $3, द्विवार्षिक:US $20,

आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /3

विचार प्रवाह :

आज की सभ्यता और अनास्था के चक्रव्यूह–कुमार रवीन्द्र /6

साहित्य :

कुछ पल अपने लिए–कहानी /9
गिरीशचंद्र श्रीवास्तव

काव्य-कुंज :

सनातन गंध,स्वप्न-तख्ते ताउस का, हंसी आपकी, वाण, जिंदगी तलाश है /13

दृष्टि :

अनवरत शोषण– एक मौलिक विचार– डॉ.एस. एस. सक्सेना त्यागी /15

आधी आबादी

दहेज लोभियो को सबक....../16

समीक्षा :

सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का चिंतन
नवल किशोर गौड़ /19

समाज:

भारतीय हिंदू-समाज और डॉ.अम्बेडकर
रामचरित्र दास 'अचल' /21

आतंकवाद:

आतंकवाद का स्वरूप......
ज्योतिशंकर चौबे /24

कला-संस्कृति :

भारतीय संस्कृति का बिगड़ता स्वरूप
सिद्धेश्वर /26

व्यंग्य :

हिंदी प्रेमी-शो- डॉ. शाहिद जमील /28

डोन्ट टच माइ बॉडी मोहन रसिया–
डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव /32

सेहत-सलाह:

विकलांगों के उपचार में युगांतकारी परिवर्तन
डॉ. अवनीश रंजन /34

देश-विदेश :

थापा नेपाल के नए प्रधानमंत्री /37

वाजपेयी की चीन यात्रा /37

विश्व हिंदी सम्मेलन का सातवां सफर /38

बिहार :

बिहार को भारतीय रेलों के दो और उपहार –
सिद्धेश्वर /38

साहित्य-समाचार :

अपराध नहीं, आपराधिक मनोवृति बढ़ रही /44

राष्ट्र में शांति के लिए शांति मिसाइल / 45

विकलांगों के पुनर्वास /47

राजनीतिक नजरिया :

भाजपा का सत्ता चिंतन / 48

गतिविधियां :

साहित्य की समृद्धि में व्यंग्य.... /49

हम कहां सुन सकेंगे गीत गोपीवल्लभ के/50

स्मृति-शेष :

गीत चेतना के सृजनधर्मी कवि गोपीवल्लभ
– सत्यनारायण /51

शोकोद्गार–केदारनाथ सिंह /52

श्रद्धांजलि : टूट गई गीत परंपरा की एक और मजबूत कड़ी–सिद्धेश्वर /53

साभार स्वीकार /54

समाज

आधी आबादी

भारतीय रेल

स्मृति-शेष

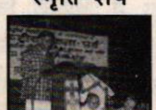

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि' ❑प्रो .रामबुझावन सिंह ❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

श्रेष्ठ सामग्री और सुष्ठ प्रस्तुति

अधिवेशन अंक की सामग्री और साफ-सुथरी, लगभग त्रुटिहीन छपाई ने प्रभावित किया। अपने विचारोत्तेजक प्रखर संपादकीय में आपने बिना किसी लाम-लपेट के हमारी आज की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय विचार मंच की मुख्य पत्रिका होने के नाते पत्रिका की विचार-दृष्टि और वैचारिक पृष्ठभूमि का सुदृढ़ होना जरूरी है। संपादकीय में उसी के दर्शन हुए।

पत्रिका की साहित्यिक दृष्टि भी राष्ट्रीय है, इस बात का संकेत डॉ. एस. एन. चंद्रशेखरन नायर के आलेख से भली-भाँति मिला। आधुनिक भारतीय वाग्मिता के प्रतीक पुरुषों-जी. शंकर कुरुप, कवीन्द्र रवीन्द्र एवं पंत की कविता की तुलनात्मक व्याख्या इस आलेख को अंक की उपलब्धि बताता है।

विचार ही हमारी पूंजी रही है और आज के समय में वैचारिक धरातल पर जो शून्यता आई है, उसे शीघ्र दूर करने की आवश्यकता है। वस्तुत: मीडिया और अन्य संचार-तंत्रों के माध्यम से पूरे वैश्विक स्तर पर विचार-वैविध्य को समाप्त किया जा रहा है। इस गहरी साज़िश के तहत विचारों की निश्चित एकरुपता का जो संकट उपस्थित हो गया है, उस से जूझने की नितांत आवश्यकता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय विचार मंच और उसके मुख-पत्र **विचार दृष्टि** की भूमिका अभिनंदनीय है-विचार-शून्यता और भाव-शून्यता के दोहरे संकट के इस काल में।

-कुमार रवींद्र, क्षितिज, 310 अर्बन एस्टेट-2, हिसार-125005, हरियाणा

जनजागरण अभियान जरूरी

मित्र-संगम पत्रिका में आपके विचार पढ़े। आपने सही सोचा है कि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, राजनीतिक प्रदूषण को हटाने के लिए जनजागरण अभियान आवश्यक है। सभी प्रबुद्धजनों को योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़कर कार्य करने होंगे। मुझे खुशी है कि आपका मंच एवं उसकी पत्रिका इस ओर अग्रसर है। पत्र-पत्रिका प्रकाशन के साथ-साथ जन-कल्याण व राष्ट्र गौरव बढ़ाने हेतु हमलोग कदम से कदम मिलाएं, यही अनुरोध है आपसे।

-मुरारि पचलंगिया, 658 सरस्वती बिहार पो.गुरुग्राम 122002 हरियाणा

प्रेरणा की प्रतीक पत्रिका

प्रेरणा की प्रतीक पत्रिका 'विचार दृष्टि' का अप्रैल-जून 2003 अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय के रूप में अपने हृदय के उद्‌गारों की सामंजस्यपूर्ण किंतु साहसिक अभिव्यक्ति के लिए आपको साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि लोक कल्याण हेतु निर्भीक मन से आप अपनी विचार दृष्टि को इसी प्रकार शब्द देते रहेंगे। हिंदी जगत में इस प्रकार की पत्रिकाओं का नितांत अभाव है। चाहे जैसे भी हो इस विचार को जगाए रखना है कि 'बुझती नहीं इंसानियत की लौ कभी हिंसा से।'

-डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी, इलाहाबाद

विचार दृष्टि से सही दिशा

नवंबर 2002 में मंच एवं विचार दृष्टि द्वारा नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत विचारों को सुनने का योग मुझे मिला। संयोगवश मैं बालभवन के अंतर्राष्ट्रीय बालसभा में भाग लेने के लिए दिल्ली में था। देश में सांप्रदायिकता का दौर चल रहा है, मंदिर बनाने की होड़ शुरू हो गई है। इस माहौल में सामाजिक मूल्यों की रक्षा करना तथा धर्मनिरपेक्षता कायम रखना बहुत ही आवश्यक हो गया है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय विचार मंच एवं विचार दृष्टि द्वारा भारतवासियों को सही दृष्टि और सही दिशा देने का प्रयास सराहनीय है। मेरी शुभकामना आपके साथ है।

-शशिकान्त पुनाजी, बालभवन, कांपाल, पणजी, गोवा

पाठकों से

पत्रिका के विभिन्न स्तंभों में छपी रचनाओं पर आपके विचारों व प्रतिक्रियाओं का स्वागत है क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें --

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92,
दूरभाष-011-22530652

जरा इनकी भी सुनें

भारत के खिलाफ तीन युद्ध हार चुका पाकिस्तान अब छद्मयुद्ध में चौथी पराजय की तैयारी कर रहा है।

-अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री

कारगिल जैसी घटना के दोबारा होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

-पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ

भारत व पाकिस्तान के बीच कोई सार्थक बात नहीं हो सकती।

- लालकृष्ण आडवाणी

पार्टी ने मंदिर मुद्दे को नहीं छोड़ा है पर यह चुनावी एजेंडे में नहीं है।

-भाजपा अध्यक्ष वैंकेया नायडु

अगर केंद्र सरकार राजग के ऐजेंडे से हटती है तो राजग से बाहर आने का विचार करेंगे।

-द्रमुक अध्यक्ष के करुणानिधि

इराक में सेना भेजना कहीं बेवकूफी तो नहीं?

-ब्रिगेडियर बी. के. नायर

भाजपा ने वाजपेयी के अलावा किसी दूसरे को नेतृत्व सौंपा तो उनका दल केंद्र सरकार को समर्थन देने पर पुनर्विचार कर सकता है।

-मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला

अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को एफ-16 विमान देने से न तो भारत-पाक शांति प्रक्रिया बाधित होगी और न ही भारत-अमेरिकी संबंध।

- रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडीस

आजादी के छप्पन वर्ष और हमारा संसदीय लोकतंत्र

आजादी के 56 वर्ष पूरे हुए और भारत के संसदीय लोकतंत्र ने पिछले वर्ष अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई, किन्तु इतने वर्ष बाद भी यहाँ की जनता उन सभी समस्याओं से मुक्त नहीं हो पाई है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान भी मुँह बाए खड़ी थीं। आज भारतीय लोकतंत्र अनेक ऐसी बुराईयों से ग्रस्त हो गया है जो देश की प्रगति में बाधक बन रही है। भारत ने ब्रिटेन के ढाँचे और तौर-तरीके वाले लोकतंत्र की जिस संसदीय प्रणाली को अपनाया वह दिन प्रतिदिन विकृतियों का शिकार होती चली जा रही है।

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की अहम भूमिका होती है। उसका प्रमुख काम है जनता को राजनीतिक तौर पर शिक्षित करना। लेकिन आज राजनीतिक दलों की प्राथमिकताएं बदल गयी हैं। प्रख्यात जर्मन राजनीतिशास्त्रवेत्ता डमवर्जर का मानना है कि विधायिका और कार्यपालिका मुखौटा है, असली भूमिका राजनीतिक दलों की है। संविधान का शपथ लेकर सत्ता में राजनीतिक दलों के लोग आज जिस प्रकार धर्मनिरपेक्षता का मखौल उड़ा रहे हैं और खुलेआम राजनेताओं का रूझान राजनीति का उपयोग वैयक्तिक एवं पारिवारिक आकांक्षाओं की पूर्ति करने की तरफ होता जा रहा है इससे राजनीति में खानदानशाही लगातार बढ़ रही है। यह मजा सिर्फ कांग्रेस पार्टी में ही नहीं बल्कि भाजपा, समता एवं वामपंथी पार्टियों को छोड़ प्राय: अधिकतर पार्टियों में दिखाई दे रहा है। चाहे अजित सिंह का राजनीति में अपने पिता का स्थान लेने का सवाल हो या बीजू पटनायक के बाद उनके सुपुत्र नवीन पटनायक का, एन. टी. रामाराव के बाद उनके दामाद चंद्रबाबू नायडू हों या देवीलाल के पुत्र ओमप्रकाश चौटाला। समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव के पुत्र अखिलेश सिंह यादव का सवाल हो अथवा लालू प्र० यादव के स्थान पर उनकी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री की कुर्सी देने का, सभी उसी मर्ज की दवा है। इस प्रकार देखा जाए तो जनतंत्र के तहत राज्यों में राजनीति धीरे-धीरे राजतंत्रके सांचे में ढल रही है और इस राजतंत्र के भीतर दरबारीपन का माहौल है। इससे प्रशासनिक प्रक्रिया भी प्रभावित होती है। जनतंत्र भी अपना चरित्र तभी कायम रख सकता है जब शासन और प्रशासन में सभी स्तर पर निर्वैयक्तिता और निष्पक्षता बनी रहे, किंतु आज जो स्थितियां बन रही हैं उसमें लोकतंत्र के अस्तित्व पर गंभीर खतरा उपस्थित हो गया है। क्योंकि अब सेवा-भाव और जन-कल्याण के स्थान पर सत्तालोलुपता का बोलबाला है। येन केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करना राजनीतिक दलों का अभिष्ट बन चुका है।

लोकतंत्र की पहली आवश्यकता है अनुशासन जिसका सर्वथा अभाव यहाँ सर्वत्र नजर आता है। अनुशासन न तो जनता के स्तर पर दिखता है और न ही राजनीति के धरातल पर। भारतीय लोकतंत्र की एक विडम्बना यह भी है कि इस देश में चुनावों में वमुश्किल 50% जनता की ही भागीदारी हो पाती है। यही नहीं अनेक बार तो 20-25% वोट पानेवाले दल भी सत्ता पर काबिज हो जाते हैं। सबसे विचित्र बात तो यह है कि यहाँ चुनाव विकास के मुद्दों पर नहीं बल्कि जाति, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर ही अधिक लड़े जाते हैं और मतदान भी इन्हीं आधारों पर होता है। निश्चय ही इस स्थिति को लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं माना जा सकता है।

देश का लोकतंत्र उसके एक अरब लोगों के दिल-दिमाग में बसता है, उसकी रगों में फड़कता है और उसकी सांसों में प्रवाहित होता है। हमारा मानना है कि आज लोकतंत्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियाँ भीतरी हैं। भारत के मौजूदा राजनीति परिदृश्य और उसके स्तर को देखते हुए लोकतांत्रिक प्रणाली की विश्वसनीयता और प्रमाणिकता गहरे संदेह का शिकार हो रही है। संसद तथा विधानसभाओं में आज जिस प्रकार गुंडे, बदमाश, बाहुबली से लेकर बिचौलियों, दलालों, अपराधियों और धनपशुओं तक का बेधड़क प्रवेश हो रहा है उससे समूची राजनीतिक व्यवस्था थर्रा रही है। प्राय: प्रत्येक राजनीतिक दल में तपे-तपाए और सार्वजनिक जीवन के अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपेक्षा हो रही है और उनकी जगह बाहुबली और अपराधी तत्व के लोग हावी हैं। ऐसे लोग राजनीतिक शक्ति अर्जित करके वैसे सभी सहयोगी लोकतांत्रिक संस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने में जुट गए हैं जिससे हमारा लोकतंत्र परिभाषित होता है। यह भीतरी चुनौती दीमक की तरह पूरी लोकतांत्रिक प्रणाली को अंदर से खोखला बना रही है। स्वाभाविक है भीतर से कमजोर और संदिग्ध लोकतंत्र आतंकवाद तो क्या किसी भी 'वाद' का देर तक मुकाबला नहीं कर सकता।

ऐसी भयावह परिस्थिति में लोकतंत्र को अधिक गतिशील, पारदर्शी और जिम्मेदार बनाने के लिए यदि चुने हुए जन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का विचार बनता है तो उसका स्वागत किया जाना चाहिए। क्योंकि जो चुना हुआ प्रतिनिधि मतदाता की आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतरता हो या प्राप्त जनादेश का दुरूपयोग कर रहा हो तो उससे बीच में ही जनादेश छीनने का अधिकार जनता को देकर लोकतंत्र को ज्यादा जबावदेह और परिपक्व बनाया जा सकता है।

संपादकीय..............

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पिछले वर्षों में भारतीय लोकतंत्र का आधार पहले की तुलना में ज्यादा व्यापक हुआ है। दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों और औरतों की राजनीति में भागीदारी बढ़ी है जिसका असर काफी हद तक राजनीतिक नेतृत्व के सामाजिक चरित्र पर भी पड़ा है। पूरे देश में जनांदोलनों के स्वरूप में बदलाव आया है। आम जनता के दु:ख-दर्द को इन जन आन्दोलनों ने एक नई और सार्थक दिशा दी है। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि वोट की राजनीति और पद एवं पैसे की लिप्सा ने देश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने और गंगा-जमुनी संस्कृति को बहुत नुकसान पहुँचाया है। एक नए किस्म के सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का प्रयास किया जा रहा है। हाल के वर्षों में जातियों का ध्रुवीकरण एक नए तरीके से होते देखा जा रहा है। अब पहले की तरह जनता को बहला-फुसलाकर नहीं बल्कि एक दूसरे के खिलाफ भड़काकर वोट हथियाने की राजनीति चल रही है जिसके परिणामस्वरूप समाज छिन्न-भिन्न होता चला जा रहा है। आज लगभग सारे राजनीतिक दल जाति एवं संप्रदाय को राजनीतिक सफलता के लिए एक साधन के रूप में अपना रहे हैं। चुनाव में टिकट आवंटन के समय, मंत्रिमंडल के गठन के समय जिस प्रकार जातीय एवं धार्मिक आधार अपनाए जाते हैं उससे अंतत: जातीयता एवं सांप्रदायिकता को ही बढ़ावा मिलता है। बजाय देश की समस्याओं को हल करने की राजनेताओं को चिंता है केवल अपनी सत्ता सुरक्षित रखने की। यही कारण है कि आम जनता का लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं से विश्वास उठता जा रहा है।

वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के चलते लगातार बढ़ती बेरोजगारी और घटती नौकरियों के अवसर तथा ठेके पर काम करने की मानसिकता ने लोगों में एक नई तरह की असुरक्षा की भावना उत्पन्न की है। यह सत्य है कि साक्षरता के मामले में हमारा प्रतिशत बढ़ा है पर प्रभावी साक्षरता आज भी कम है। एक ओर चीन और कोरिया जैसे देशों ने 1965 में ही पूर्ण साक्षरता हासिल कर लिया था, वहीं हम आज भी इस समस्या से जूझ रहे हैं। जहाँ तक महिलाओं के उत्थान का सवाल है पिछले दस वर्षों में उनकी स्थिति में बहुत फर्क आया है। महिलाएं, आज अपने अधिकारों के प्रति ज्यादा जागरूक और सतर्क हैं। वे काफी हद तक आजाद हैं और अपने कैरियर के प्रति सजग भी। हालांकि नई उपभोक्तावादी संस्कृति ने इनका बाजारीकरण भी किया है। नए पूंजीवाद ने स्त्री-स्त्री की गोपनीयता को उघाड़कर बेपर्दा कर दिया है।

पिछले वर्ष भारत के संसदीय लोकतंत्र की स्वर्ण जयंती के एक वर्ष बाद जब हम देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का जायजा लेते हैं तो बहुत आशाजनक तस्वीर नहीं दिखती। यह बात ठीक है कि हमारे अन्न के भण्डार भरे हुए हैं और विदेशी मुद्रा का भंडार भी 70 अरब डालर से ऊपर पहुँच गया है। लेकिन इसके बावजूद देश की एक तिहाई आबादी को भरपेट भोजन नहीं मिलता है। उधर देश पर भी 100 अरब डालर से ज्यादा विदेशी कर्ज है। इसके अतिरिक्त हमारी तमाम योजनाएं विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की सहायता से चल रही हैं। इस कर्ज की वापसी जनता की जेब से की जानी है जबकि आम जनता पर करों का बोझ पहले से ही ज्यादा है।

इस देश के करोड़ों लोग देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में लगातार पीछे छुटते जा रहे है।, कारण कि चुनाव इतने मंहगे हो गए हैं कि आम जनता चाहकर भी उसमें भाग नहीं ले सकती। बिखराव और बर्बादी की अंतहीन श्रृंखला में मजदूर, किसान, गरीब और पढ़े-लिखे बेरोजगार लोग पीसे जा रहे हैं। हर रोज दलित जलाए जा रहे हैं। दूरदर्शन पर जो चकमकाहट दिखती है, वह इस देश की सच्ची कहानी नहीं है बल्कि सच तो यह है कि इस पूरे दृश्य में आम जन कहीं नहीं है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि 1950 में भारतीय गणतंत्र के जो वादे थे, उनसे हम भटक गए हैं। मसलन समाज परिवर्तन का हमने जो संकल्प लिया था और संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांतों के तहत जन कल्याण की बातें की थीं उससे हम पीछे हटते चले गए। और तो और आज आम जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों को भी सरकार पूरा नहीं कर पा रही है। दूसरी ओर देश के एक प्रतिशत धनाढ्य परिवार जनता के पच्चीस प्रतिशत से ज्यादा संपत्ति के मालिक हैं। सात करोड़ लोग बेरोजगार हैं, तीस करोड़ गरीबी रेखा के नीचे हैं और चालीस करोड़ में दस हजार से अधिक किसानों ने आत्महत्या की। लोकतंत्र संपत्ति और सत्ता के कुछ हाथों में सिमट जाने से अपनी असलियत खो बैठा है।

जहाँ तक भ्रष्टाचार का सवाल है भारत का स्थान छियानवें देशों में इकहत्तरवाँ है। भूमण्डलीकरण और निजीकरण के जरिए सत्ताधारियों ने लोकतंत्र को दुर्बल ही बनाया है। जब उच्च-मध्य वर्ग उपभोगवाद में तल्लीन हो जाए, जन संचार माध्यम गांव-गांव में विलासी जीवन की चकाचौंध दिखाकर शोषित-पीड़ितों के दिलों में भारी असंतोष की चिनगारियों को सुलगाते रहें, नेता स्वार्थ व सत्ता सुख और बुद्धिजीवी परजीवी जीवन के चलते पूर्णत: आत्मकेन्द्रित हो जाएं तो नफरत के सौदागरों और दुनिया भर के मुनाफाखोरों की साजिशों का मुकाबला करेगा ही कौन? लोकतंत्र और इसकी दीर्घकालिक सफलता के लिए जानकार और सचेत नागरिकों का होना बुनियादी जरूरत है। पूर्वी यूरोप, आयरलैंड, पूर्वी तिमोर और दक्षिण अफ्रीका में मौलिक राजनीतिक बदलाव सिर्फ इसीलिए संभव हुआ कि वहाँ की सरकार लाख कोशिश करके भी समाजों को मिलनेवाली आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक सूचनाओं के पैदा होने और लोगों तक पहुँचने पर रोक नहीं लगा सकी।

दूसरी बात यह है कि लोकतंत्र की शक्ति असहमति की जो आज हिंसक प्रवृत्ति बढ़ रही है वह चिंता का विषय है। सहमतियाँ-असहमतियाँ तो अपनी जगह हैं और सहमत-असहमत लोग तो इस देश में रहेंगे ही, किन्तु असहमति जतानेवालों पर जो आतंकवादी हिंसक संस्कृति पैदा की जा रही है उसका मुकाबला कैसे किया जाएगा। यह प्रश्न अहम और चिंतनीय है। जिस देश की व्यवस्था कमजोर होती है वह देश अपराधियों का गढ़ बन कर विनाश की ओर अग्रसर होने लगता है। आज लगभग ऐसी ही स्थिति हमारे देश की है, क्योंकि यहाँ के लोकतांत्रिक शासन में दंड मिलने का भय खत्म हो रहा है। आखिर तभी तो बेईमानी, भ्रष्टाचार, अपराध व आतंकवाद का भय समाप्त-सा होता जा रहा है। आज अपराधी, भ्रष्टजन आर्थिक, राजनीतिक या मानसिक दबावों के कारण आसानी से कानून की आँखों में धूल झोंककर बच जाते हैं और दूसरी ओर साधारण मुलजिम बिना दोष सिद्ध हुए कई-कई सालों तक जेलों की सलाखों के पीछे बदतर जीवन जीने को अभिशप्त हो जाते हैं। हमारा कानून इतना कमजोर, लचर व गूंगा हो गया है कि अपराधी खुलेआम घूम रहे हैं। अत: अपराधों में कमी लाने के लिए व राष्ट्र विकास के लिए लोकतांत्रिक प्रणाली में बदलाव व कानूनी दंड व्यवस्था में सुधार व सख्ती आवश्यक है। यदि आवश्यक हुआ तो भारत को नई क्रांति से गुजरने के लिए संविधान में भी उसकी आत्मा और दर्शन के अनुरूप परिवर्तन करना होगा। हमें राष्ट्र में एक ही गीत गाना होगा, एक ही स्वर में गुनगुनाना होगा।

अनंत यात्रा पर प्रस्थित गीतकार गोपीवल्लभ को प्रणाम

31 मई, 2003 की मनहूस सुबह एक अत्यंत दु:खद खबर लेकर आई। जे. पी. आंदोलन के चर्चित कवि तथा 'विचार दृष्टि' के एक लंबे अरसे तक परामर्शी रहे गोपीवल्लभ सहाय का जमशेदपुर में देहावसान हो गया। कई वर्षों से पार्किंशन की बीमारी से वे पीड़ित थे। उनके असामयिक देहावसान से इस पत्रिका ने एक सच्चा मार्गदर्शक खो दिया। इसके नियमित एवं स्तरीय प्रकाशन में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा, विशेषकर इसकी कविताओं की भाषा को संवारने में वे काफी अभिरूचि लेते थे। शब्द-विवेक सिद्ध साहित्यकार की पहली पहचान है। किस शब्द का कहाँ प्रयोग हो, जो सटीक, सक्षम और प्रभावोत्पादक हो, संदर्भ को ज्योतिर्मय बनाने में समर्थ हो, इसके लिए प्रत्येक सिद्ध सर्जक जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है। गोपीवल्लभ जी एक ऐसे ही असाधारण सर्जक थे, जो शब्द-विवेक के द्वारा साधारण शब्दों में नयी प्राण प्रतिष्ठा कर देते थे। इस पत्रिका के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा इसके उन्नयन के लिए निर्बाध रूप से काम करना पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों के लिए प्रेरणादायक रहा। उनकी कमी हमेशा हम सभी को सलती रहेगी। विचार दृष्टि ने गोपीवल्लभ जी को खोकर बहुत कुछ गंवाया है।

हिंदी के मंचों पर गोपीवल्लभ की उपस्थिति कवि सम्मेलन की कामयाबी मानी जाती थी। उन्होंने विगत चार दशक से लगातार भारत के विभिन्न मंचों से न केवल अपने गीतों का सस्वर पाठ कर आम जनमानस को झकझोरा बल्कि आखिरी दम तक हिंदी साहित्य की सेवा की। गोपीवल्लभ जी स्वयं अपने आप में एक महफिल थे। मित्रों से, सहकर्मियों से, अपने से छोटे व बड़ों तक किससे कैसी बात करनी चाहिए, इस फन से वे भलीभांति अवगत थे। गोपीवल्लभ जी उन गीतकारों में थे, जो अपने सशक्त गीत के साथ ही अपने मानवीय सद्गुणों की छाप भी मुझ जैसे कितने ही लोगों के मन पर गहराई तक छोड़ गए। उनके जैसे सरल, सात्विक, आत्मीय और निश्छल व्यक्ति आज की स्वार्थ से भरी और प्रपंचलिप्त भीड़ में इने-गिने ही मिलेंगे। मुझे अच्छी तरह याद है वह दिन जब उन्होंने अपनी अस्वस्थता के बावजूद पटना के मेरे 'बसेरा' आवास में आने की जिद्द कर दी थी और हमनें सादर घर ले जाकर उन्हें वापस उनके निवास पहुंचाया था। यह उनकी आत्मीयता का एक ज्वलंत उदाहरण है। 22 मई को जब वे अपनी बेटी के घर जमशेदपुर गये थे मात्र उसके दो दिनों पूर्व ही पटना के गर्दनीबाग आवास में मैं उनसे मिला था। उनके मुंह से निकले शब्द और भाव मुश्किल से पकड़ में आते थें। मुझे उसी दिन ऐसा लगा कि यह शख्स शीघ्र ही अपनी अनंत यात्रा पर निकल पड़ेगा। मुझे 'नूर' की वह पंक्ति याद आई-

जिंदगी मौत तेरी मंजिल है, दूसरा कोई रास्ता ही नहीं।
चाहे सोने के फ्रेम में जड़ दो, आईना झूठ बोलता ही नहीं।

आखिर सुख-दु:ख का एक लंबा सफर गीतकार गोपीवल्लभ ने तय कर ही लिया। अनंत यात्रा पर प्रस्थित गीतकार कवि गोपीवल्लभ को प्रणाम और विचार दृष्टि परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

आज की सभ्यता और अनास्था के चक्रव्यूह

✍ कुमार रवीन्द्र

आज की सभ्यता वैश्विक होते हुए भी मूलतः पाश्चात्य है। सभ्यता के जिन मूल तत्वों पर पश्चिम में जोर दिया गया और जिनसे वैज्ञानिक विकास और प्रगति को बल मिला, वे मुख्य रूप से दैहिक और भौतिक रहे हैं, आध्यात्मिकता के जो अंश उनमें कभी-कभी पनपे भी, उनका दूरगामी प्रभाव नहीं बन पाया और इसी कारण वे धीरे-धीरे गौण होते गए और अंततः बिला गए। पन्द्रहवी-सोलहवीं शताब्दी की यूरोपीय वैचारिक क्रांति से जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपजा, वह मूलतः शंकालू और नास्तिक था। प्रारंभ में अंधकाल की अंधी आस्तिकता के बरकस उसकी जरूरत भी थी किंतु बाद में प्रायोगिक वैज्ञानिकी के उद्‌भव से पदार्थपरक अंधश्रद्धा ही पनपी और अभूतपूर्व प्रौद्योगिकी सफलता के इस अंधे युग की शुरूआत हुई, जिसमें सारी मानवी दृष्टि दैहिक-भौतिक-आर्थिक विकास के आपाधापी भरे व्यूह में फँसकरउसके पार न देख पाने, सीमित दायरे में सिमट जाने को अभिशप्त हो गई। वह दृष्टि प्रगतिकामी तोथी, पर इतने से वे मानवीय अंश धीरे-धीरे विलुप्त होते गए, जिन्हें मनुष्य ने अपनी दैवी संपदा के अंतर्गत विकसित किया था। धर्म-आस्था-सहजआस्तिकता की मूल प्रवृत्तियाँ अतिगतिशील अर्थतंत्र के दबाव के कारण क्षरित होकर मृतप्रायः हो गई। आसुरी संपदा की संशयवादी असहिष्णु अधिभौतिक प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बलवती होती गई। आज की वैश्विक सभ्यता इसी आसुरी संपदा की देन है।

मनुष्य की सात्विक मूल्य चेतना, जिसमें अंर्तमंथन, आत्मसंयम और आत्मसंतोष-अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा आदि की प्रमुख भूमिका रही है और जिसके माध्यम से मानव ने एक ऐसे समाज की संरचना चाही थी, जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्ति सुखिन की संभावना निरंतर बनी रही। कब कहाँ बिला गई कहना कठिन है।

आसुरी संपदा का एक प्रमुख लक्षण होता है देह और उससे जुड़ी भौतिक उपलब्धियों को ही चरम सत्य मानना। पराभौतिकी आस्था, जिसमें मनुष्य देवत्व को प्राप्त करता है, आसुरी संपदा के तहत आहत और अंततः हद होती है। यही आज की सभ्यता के अंतर्गत हुआ है और इसी कारण चरम सुख की तलाश में भटकाव और पलायन की एक ऐसी संस्कृति का जन्म हुआ है, ज़िसने एक गहरे असंतोष, अनास्था, आपसी वैमनस्य, हिंसात्मक क्रिया-प्रतिक्रिया, अनवरत आपाधापी एवं संघर्ष की ही सृष्टि की है। ऐसा मानवीय अर्थान्तों के अवमूल्यन और ह्रास के कारण हुआ है। संचार प्रौद्योगिकी के क्रांतिकारी विस्तार से आज मानव अनंतचक्षु तो हो गया है, पर वह प्रज्ञाचक्षु होने की अपनी क्षमताएँ खो बैठा है। सभ्यता के जिस शीर्ष पर हम खड़े हैं, वह बुरी तरह क्षत-विक्षत एवं खण्डित है। विश्व हाट की मीनारें ध्वस्त पड़ी है। हमारी त्रासदी यह है कि हम सूचनाओं के अंबार में भी अज्ञानी होने को अभिशप्त हैं। असीम भौतिक उपलब्धियों ने

हमें दंभी बनाया है और हमारे विवेक को धुंधला दिया है। मानव होने की हमारी परिभाषाएँ विकृत हो गई हैं। श्रेय और प्रेय के द्वन्द और समन्वय से जिस दार्शनिक प्रज्ञा और संज्ञान का विकास सदियों में हुआ था वह आज प्रश्न चिन्हित है। केवल एवं शुद्ध संशय ही हमारी आज की वैज्ञानिक दृष्टि का पर्याय है। ऐसे में आस्था का कोई भी केंद्र नही रह गया है। तेजी से भौतिक विकास और विकास-अनवरत भौतिक विकास ही आज की सभ्यता का मूल मंत्र हो गया है। हमारी यह विकास यात्रा अंधी भूल-भूलैया में अनवरत भटकन बनकर रह गई है। इससे उस वास्तविक सुख शांति की सृष्टि नहीं हो पाई है, जिनपर कुछ लोग कब्ज़ा करके श्रेष्ठत्तम होने का दंभ भर रहे हैं। दूसरी ओर अभाव, भुखमरी, कष्ट, संताप के महासागर लहरा रहे हैं। समृद्धि के स्रोतों पर जिनका कब्जा है, वे भी यदि सही मायने में सुखी हो पाते तो भी कुछ बात बन पाती किन्तु वे भी अविरल असंतुष्टि के चपेट में है। अभावग्रस्त अधिकांश मानवता समृद्धि के सुनहरे श्रृंगों को दूर से ललचाई निगाहों से देखकर और अधिक संताप होने, निरंतर संतप्त रहने की नियति से पीड़ित हैं। उधर उन रेशमी चमकीले श्रृंगों पर टिके रहने, उन श्रृंगों से ऊपर और नये श्रृंगों की सृष्टि करने का लगातार और तेज - और तेज होता जा रहा है।

सभ्यता के उस सम्मोहक कगार पर हम खड़े हैं, जहां से नीचे कूदने, तेजी से नहुष या त्रिशंकु की भांति अधः पतित होने के अतिरिक्त कोई गति नहीं है। ऐसे में टूकड़े-टुकड़े होने के अलावा और किया ही क्या जा सकता है ? भौतिक उपलब्धियां, अस्वाभाविक-अप्राकृतिक, अभीप्साओं, असंभाविक संभावनाओं एवं अतिविकास का दंभ ही तो है, जो विनाशकारी शक्तियों के बड़बोलेपन में व्यक्त हो रहा है। विखंडन-सतत विखंडन ही हमारे अणु वैज्ञानिक समारोह एवं उत्सवाग्रही विश्व समुदाय का मूल मंत्र है। ऐसे में मानुषी संचेष्टाओं के आस्तिक बने रह पाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। जिस प्रयोजनहीन बर्बरता से हम आज रू-ब-रू हैं, वह हमारी सभ्यता की प्रयोजनहीन नास्तिक उत्सवी दृष्टि से ही उपजी है। कुछ लोगों की समृद्धि-अकुत समृद्धि भी अपने आप में एक बर्बरता ही है। पिछली शती के दौरान मनुष्य का

आशययुक्त हो जाना एक बहुत बड़ी दुर्घटना है। उसी से उपजा वह आचारहीन समाज, जिसमें व्यक्ति पर लगे सारे अंकुश खुद-व-खुद ढेर हो गये। मनुष्य का संस्कारविहीन हो जाना उसके मनुष्य से पशु हो जाने की आदिम वासता से जुड़ा है। मनुष्य का आशययुक्त हो जाना एक महान दार्शनिक उपलब्धि, एक महती मूल्य दृष्टि हो सकती है। यदि ऐसा होना दैवी संपदा से प्रेरित हो और देवत्व की ओर उन्मुख हो अन्यथा आशय-मुक्ति पशुता से संयुत होकर मनुष्य को मात्र जैविक प्राणी बना डालेगी। मनुष्य को शुद्ध पशु मानने का आग्रह भी पाश्चात्य चिंतन का ही देन है। विज्ञान के माध्यम से जितनी भी अलौकिकताएं रची गई हैं, वे सभी मनुष्य नामधारी जैविक पशु की वासनाओं की तृप्ति के लिए हीं है, किन्तु उनसे एक अनंत अतृप्ति ही उपजी है। मुश्किल यह है कि इस अतिशय अतृप्ति को ही मनुष्य को मूल-भाव और मानव-सभ्यता के विकास का मूल-मंत्र और मूल्यांक मान लिया गया है। मनुष्य की सात्विक मूल्य चेतना, जिसमें अंतर्मथन, आत्मसंयम और आत्मसंतोष-अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा आदि की प्रमुख भूमिका रही है और जिसके माध्यम से मानव ने एक ऐसी समाज की संरचना चाही थी, जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्ति सुखिन की संभावना निरंतर बनी रही। कब कहाँ बिला गई कहना कठिन है। मनुष्यता को मापने की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही कसौटियाँ भी आज विभ्रम की स्थिति में है। ऐसे में प्रयोजनहीनता या आशय-मुक्ति किस प्रकार के मनुष्य की रचना करेगी, इसका अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है। मनुष्य की बर्बरता पशु की बर्बरता से अधिक भयावह होती है, अधिक मारक और विध्वंशक होती है, क्योंकि मनुष्य के लोभ के आयामों का कोई अंत नही है। उसकी वासना केवल नैसर्गिक एवं जैविक आवश्यकताओं तक ही सीमित नहीं है। अपनी बुद्धि से वह अनावश्यक आवश्यकताओं की सृष्टि करता चला जाता है। दरअसल मनुष्य की जटिल बहुआयामी वासनाओं से ही उपजते हैं उसके दुराग्रह, जो उसकी बर्बरता को भी जटिल बहुआयामी बनाते हैं। असंतुष्टि के निरंतर बढ़ते क्षितिजों के साथ मनुष्य की वासनाओं के निरावरण निरंकुश हो जाने की स्थिति महाविनाशक हो सकती है। आज के अनुशासनहीन उच्छृंखल परिवेश में यह महाविनाश कभी भी उपस्थित हो सकता है, आज अभी भी।

वैचारिक हिंसा और तज्जन्य अनास्था के चक्रव्यूहों से मुक्ति अनिवार्य है, इसके लिए। जिस इक्कीसवीं सदी को 'चेतना के उत्सव पर्व' के रूप में मनाने की बात कही जा रही है, वह कहीं विद्वेष, हिंसा एवं अपराध-बोध का उत्सव पर्व न बन जाय, इसकी आशंका अधिक है।

एक और खतरा है। पिछली सदी के मध्य में राजनैतिक उपनिवेशवाद की समाप्ति से एक नए, अधिक न्यायोचित, अधिक सुसंस्कृत एवं मानवीय विश्व समुदाय के सपने ने जन्म लिया था, किन्तु जल्दी ही पहले राष्ट्रों के स्तर पर और बाद में वैश्विक स्तर पर उस सपने से मोहभंग प्रारंभ हो गया। चतुर-चुस्त उपनिवेशवादी एवं साधन सम्पन्न राष्ट्रों ने एक नये प्रकार के औपनिवेशिक तंत्र की संभावना तलाश हुई जिसमें अतिविकसित समाजों द्वारा अल्पविकसित या अविकसित समाजों के अर्थतंत्र का शोषण एवं दोहन वैसे ही संभव बना रहा, जैसे उपनिवेशवाद के उत्कर्ष-बिन्दु पर था। इसमें अल्पविकसित समाजों की, उनके अपने शासकों की अक्षमताएँ भी सहयोगी बनी। विकसित राष्ट्रों की आर्थिक विकास की गति और तेज-और तेज होती गई और अर्द्धविकसित राष्ट्र पिछड़ते गये। इससे नवउपनिवेशवाद को और भी गति मिली। तारीफ यह है कि नये-नये मुक्त हुए उपनिवेश राष्ट्रों में अपने पूर्व शासकों, उनकी शासन-पद्धति, उनकी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मोहन का भाव बरकरार ही नही रहा, अपितु उसमें समय बीतने के साथ बढ़ोतरी भी हुई। अपनी जिस राष्ट्रीय अस्मिता को जगाकर उन्होंने अपनी औपनिवेशिक ताकतों को उन्हें मुक्त करने को विवश कर दिया था, उसके प्रति धीरे-धीरे एक शंका का भाव भी उनमें पनपा। फलस्वरूप, उन्हीं ताकतों के आर्थिक सांस्कृतिक मुखापेक्षी होने में उन्हें गर्व महसुस होने लगा। वैश्विक स्तर पर जब वे नव-मुक्त राष्ट्र अपने पूर्व शासकों के वरक्स खड़े हुए तो उन्हें वे ही श्रेष्ठ लगने लगे जिनके दासत्व से मुक्ति के लिए उन्होंने बर्षों जद्दोजहद की थी। उन्होंने स्वशासन में भी उन्हीं पद्धतियों को अपनाया, जिन्हें वे औपनिवेशिक शासकों का हथकंडा कहा करते थे। नव उपनिवेशवाद इसी मानसिकता से फला-फूला। स्वदेशी से विदेशी की ओर उन्मुख होते जाने की यह प्रक्रिया बड़े ही चतुर ढंग से हमारी मानसिकता में यों समाई कि हम इसे ही अपना स्वाभाविक विकास मानने लगे।

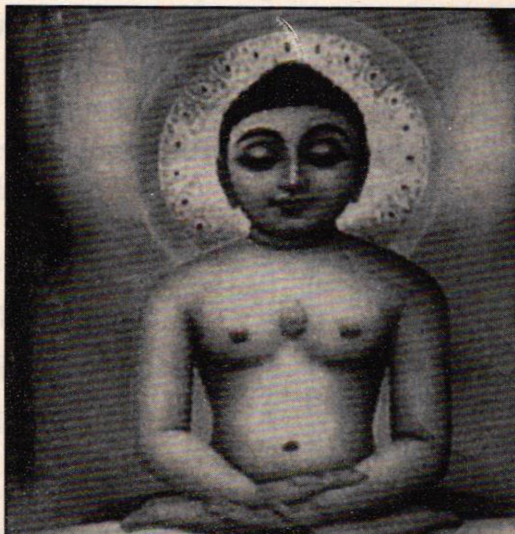

इसी से जुड़ी एक और समस्या है। अलग-अलग मानव-समुदायों के सांस्कृतिक वैविध्य से जो बहुरंगी समृद्धि राष्ट्रों के समूह में पहले दिखाई देती थी, वैश्विकता के दबाव के तहत उसका क्रमशः ह्रास होता गया। एक प्रकार की सांस्कृतिक एकरूपता का पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार हुआ। मानसिकता के धरातल पर यह एकरूपता एक समग्र बहुमुखी विशद दृष्टि की विरोधी हैं, जिसमें भाव-वैविध्य,

विचार-वैविध्य एवं संस्कार वैविध्य के लिए स्थान हो। संपूर्ण मानवता एक ही प्रकार से सोचे, एक-सा ही महसूसे, एक ही तरह से व्यवहार करे और वह सोच, वह एहसास, वह व्यवहार क्या हो, इसका निर्णय करने का अधिकार अर्थतंत्र के नव मसीहाओं को हो, आज की वैश्विकता के माने यही हो गये हैं। इससे कई बार सांस्कृतिक विद्रूपता ही अधिक उपजी है। संस्कृतियों के अधकचरे मिश्रण से उपजी यह विद्रूपता कितनी हास्यास्पद है, कहने की आवश्यकता नहीं है। यह एक खतरनाक स्थिति है, इसमें भी कोई दो रायें नहीं है, मानव-स्वभाव, उसकी प्रकृति के खिलाफ तो है ही। उन्नीसवीं शताब्दी के अभियांत्रिक यूरोपीय पूंजीवादी व्यवस्था के मुकाबिल जो एक आदर्शोन्मुखी, साम्यवादी या सामाजवादी चिंतन-शैली और प्रविधि विकसित हुई थी। आर्थिक मोर्चे पर उसके विफल हो जाने पर पूंजीवादी अर्थतंत्र का दंभ असीम और असंतुलित हो गया। यह आज की सभ्यता का एक और खतरनाक पहलू है। पूंजी केंद्रित प्रौद्योगिकी को मानव-सभ्यता के विकास का एकमात्र नुस्खा मान लेने से विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया, जो मानव-केंद्रित थी, होनी चाहिए थी, भी पथ-विचलित और विखंडित हो गई। और इसी से पैदा हुई एक अविकसित अर्थतंत्र में एक अर्द्ध-विकसित या अविकसित-अवैज्ञानिक सोच की समस्या, जो आज के विश्व समुदाय को विक्षिप्त-विश्रंखलित कर रही है। अतिविकास की दिशा यदि सही न हो, तो वह कैसे मानव-विरोधी अतएव आसुरी हो जाती है। समकालीन संदर्भ में इसे समझना बेहद जरूरी है।

यह सही है कि आज की भौतिक उपलब्धियां अभूतपूर्व है और यदि उनका संतुलित समन्वयन और वितरण हो सके, तो अभाव, भुखमरी, कष्ट, संताप एवं त्रिविध तापों से पूरी मानवता को मुक्ति मिल सकती है, किंतु इसके लिए एक सात्विक आस्तिक दृष्टि चाहिए, जो विज्ञान द्वारा सिरजी मरीचिकाओं को पहचानकर ठोस धरातल पर मानवीय स्थिरत्व दे सके। एक उपभोक्तावादी विकलांग संस्कृति के स्थान पर एक मानवतावादी भाव-बोध का पुनःसृजन हो, तभी यह संभव होगा। वैचारिक हिंसा और तज्जन्य अनास्था के चक्रव्यूहों से मुक्ति अनिवार्य है, इसके लिए। जिस इक्कीसवीं सदी को 'चेतना के उत्सव पर्व' के रूप में मनाने की बात कही जा रही है, वह कहीं विद्वेष, हिंसा एवं अपराध-बोध का उत्सव पर्व न बन जाय, इसकी आशंका अधिक है। मनुष्य के पदार्थ बन जाने की भी व्यक्तित्व-मुक्त, संदर्भ-मुक्त, काल-निरपेक्ष हो जाने की उत्तर आधुनिक परिकल्पना सुखद लग सकती है किन्तु यह श्रेयष्कर भी है, इस पर चिंतन करना होगा। हर व्यक्ति अपने-आप में एक पूर्ण ब्रह्मांड है, अछूता एवं अनूठा है, मनुष्यता की यह भारतीय अवधारणा एक ओर और दूसरी ओर निर्वैयक्तिक अर्द्ध-पशुताबोध जिसमें हम पूरी तरह एक निरंकुश अवचेतना-तंत्र के दास है। इन दोनों के बीच मनुष्य की सही पहचान क्या है, यह भी जानना होगा। सभ्यता के आवरण से ढँके बर्बर अर्द्ध चिंतन पशु के हिंसक विद्रोह के अतिरिक्त मनुष्यता के विकास के और कौन से सकारात्मक आयाम हो सकते है , इसकी भी खोज करनी होगी। मनुष्यता के नये पुनरुत्थान, उसके देवत्व के पुनजागरण के लिए सक्रिय प्रयास करने होंगे, जिससे अवतार पुरुष की अवधारणा सर्व व्यापक हो सके, तभी चेतना का वास्तविक उत्सव पर्व हो सकेगा।

संपर्क: क्षितिज, 310 अर्बन एस्टेट-2,
हिसार-125005 (हरियाणा)

शब्दकर्मियों/कलाकारों को आमंत्रण

मुख्यत: मैत्री/भाईचारे/ सामाजिक/सांप्रदायिक सौहार्द एवं पारस्परिक सहयोग की भावना रखनेवाले लेखन / रंगमंच आदि किसी भी कला से जुड़ी नई - पुरानी प्रतिभाओं के लिये प्रकाशित भारत सरकार से पंजीकृत मासिक बुलेटिन **हम सब साथ-साथ** एवं उसके अनोखे **कला परिवार** की सदस्यता हेतु / एवं अपने शहर-कस्बे/स्कूल/कॉलेज आदि का प्रतिनिधित्व करने व इसके संरक्षक / सलाहकार मण्डल में शामिल होने की इच्छुक नई-पुरानी प्रतिभायें सादर आमंत्रित हैं।

पूर्ण विवरण, सदस्यता प्रपत्र एवं बुलेटिन की नमूना प्रति नीचे लिखे पते पर 8/- रुपये के डाक टिकट भेजकर मंगवाई जा सकती है। बुलेटिन का वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 50/- रुपये है।

पता: श्रीमती शशि श्रीवास्तव, संपादक, **हम सब साथ साथ,** प्लाट सं-175, गुरुद्वारे से पहले, आनन्दपुर धाम, कराला, दिल्ली-110081. फोन नं.-25954586

अगले अंक में

- बापू, जे.पी, शास्त्रीजी तथा सरदार पटेल की जयंती पर विशेष
- क्या कामायनी का भाषा संशोधन आचार्य शिवपूजन सहाय ने किया था।
- कृष्ण कुमार राय की मार्मिक कहानी
- दलित साहित्य में संघर्ष के विद्रोही स्वर - डॉ. रामदेव प्रसाद
- रामसंजीवन शर्मा की काल समीक्षा
- सेहत-सलाह, कला-संस्कृति, आधी-आबादी आदि स्थायी स्तंभों पर उपयोगी सामग्रियाँ।

कहानी

कुछ पल अपने लिये

✍ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

गोपीनाथ जी सोचते थे कि आयु बढ़ने के साथ-साथ पति और पत्नी के संबंधों में और निकटता आती है और विशेष कर बच्चों के विवाह आदि संबंधी अनेक जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाने के कारण दोनों में एक दूसरे के प्रति समझ की भावना बढ़ जाती है। लेकिन इधर कुछ समय से वह देखते आ रहे हैं कि उनकी पत्नी निर्मला अपनी बेटियों, उनके बच्चों और उनसे जुड़े हुए बहुत सारे कामों में ही व्यस्त होकर रह गई है और सब कुछ पहले जैसा होते हुए भी वे अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। उसी दिन उन्होंने निर्मला से कहा था---

'निर्मला, इधर देख रहा हूँ बड़ी व्यस्त रहती हो। कभी अपने लिये भी समय निकाला करो।' निर्मला ने कहा था---

'क्या करूँ, आप तो जानते हैं नयनिका अपनी डेलिवरी के लिए आ रही है। अगले माह ही तो है। सभी तैयारियाँ करनी हैं।'

नयनिका उनकी सबसे छोटी बेटी थी और यह उसकी पहली डेलिवरी थी। गोपीनाथ जी कुछ क्षण सोचते रहे फिर बोले थे---

'ठीक है, पर क्या यह नहीं हो सकता कि किसी समय हम मुक्त मन से अपने आप हो कर रहें और थोड़ी देर के लिए सांसारिक जिम्मेदारियों से दूर हो वर्तमान को भोगें।'

निर्मला उनकी बड़ी बेटी निहारिका के पुत्र सुकान्त के बचपने के बहुत सारे स्वेटर, झबले, चादरें, गिलाफ आदि कपड़ों को धोने का काम कर रही थी। कपड़ों से पानी निचोड़ते हुए वह बोली---

'जरा, यह काम खतम कर लूँ नहीं तो धूप चली जायेगी और यह फिर कल पर टल जायेगा। कितने दिनों बाद तो आज इतनी अच्छी धूप निकली है।'

गोपीनाथ जी बालकनी में जाकर कुर्सी पर बैठ गये और सुबह से कई बार पढ़ चुके अखबार को दुबारा पढ़ने लगे। रिटायर हो जाने के बाद अखबार पढ़ने में सुबह का उनका कुछ समय बीत जाता था, लेकिन कोई कब तक उससे चिपका रह सकता है? आखिर उलट-पलट कर उन्होंने अखबार अलग रख दिया और बालकनी से नज़र आने वाले साफ नीले आसमान की ओर मुंह करके बैठ गये। कुछ ही क्षणों में वह

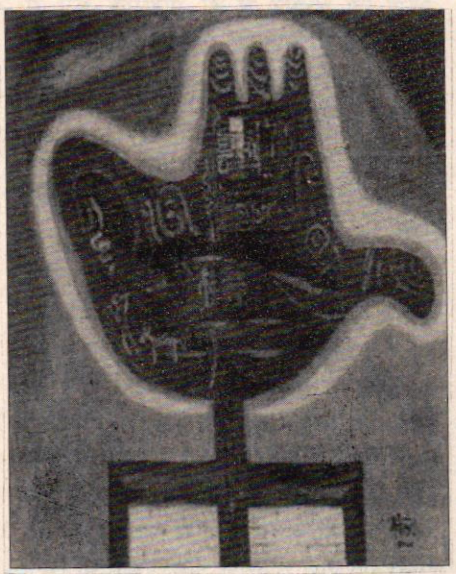

अपने विचारों में खो गये और देखते ही देखते अतीत के बहुत सारे पुराने प्रसंग उनकी आँखों के आगे से गुज़रने लगे।

तब उन्हें रिटायर होने में कई वर्ष थे और वह सोचते थे कि बड़ी बेटी निहारिका का विवाह कर देने के बाद वह मानसिक और आर्थिक रूप से हल्के हो जायेंगे क्योंकि उसके बाद छोटी बेटी नयनिका को व्याहने में काफी समय बचता था, जिस बीच वह आवश्यक धन भी जमा कर लेते और समय आने पर इत्मीनान से उसका विवाह भी कर देते। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया था। विवाह के बाद से ही निहारिका को लेकर समस्याएं शुरू हो गई थी। एक दिन अचानक उसका फोन आया था और उसने निर्मला से कहा था---

'मम्मी, तुरंत यहाँ चली आवो।'

निर्मला और गोपीनाथ जी भागकर उसके पास जयपुर गये थे। निहारिका अपनी मम्मी से लिपटकर रोने लगी थी और बोली थी---

'मम्मी, मैं यहाँ नहीं रह सकती। मुझे यहाँ से ले चलो।' उस समय उसका पति श्रीकान्त घर पर नहीं था और बेटी ने माँ को बड़ी देर तक अपनी व्यथा की कहानी बताई थी। बात बहुत छोटी थी। निहारिका काफी पढ़ी लिखी थी, वह आगे पढ़ना चाहती थी और नौकरी करना चाहती थी। श्रीकान्त उसके सख्त विरूद्ध था और चाहता था कि वह घर पर ही रहकर अन्य लड़कियों की तरह घर गृहस्थी संभाले। निर्मला ने कहा था---

'बेटी, तुम शान्त हो जावो, मैं श्रीकान्त को समझाऊँगी।' लेकिन श्रीकान्त पर समझाने-बुझाने का उल्टा असर हुआ था और वह बोला था---

'मम्मी जी, मैंने अपने पापा को देखा है, मां की नौकरी के कारण उन्हें कितना अपमान सहना पड़ा। घर में बिल्कुल गुलाम की तरह रहे। मैं नहीं चाहता कि मेरी भी वही स्थिति हो जाये।'

गोपीनाथ जी ने कहा था ---

'पर बेटा, निहारिका एक पढ़ी-लिखी लड़की है। दिन भर घर में रहेगी तो उसकी प्रतिभा कुंठित हो जायेगी।'

श्रीकान्त ने कहा था ---

'घर में भी बहुत काम होते हैं पापा जी, वह करे। और फिर यदि कभी आवश्यक हुआ तो घर में ही रहकर कोचिंग कर सकती है या कोई और काम कर सकती है।'

'मम्मी, मैं यहाँ नहीं रह सकती। मुझे यहाँ से ले चलो।' उस समय उसका पति श्रीकान्त घर पर नहीं था और बेटी ने माँ को बड़ी देर तक अपनी व्यथा की कहानी बताई थी। बात बहुत छोटी थी। निहारिका काफी पढ़ी लिखी थी, वह आगे पढ़ना चाहती थी और नौकरी करना चाहती थी। श्रीकान्त उसके सख्त विरूद्ध था और चाहता था कि वह घर पर ही रहकर अन्य लड़कियों की तरह घर गृहस्थी संभाले। निर्मला ने कहा था---

किसी तरह समझा-बुझाकर गोपीनाथ जी और निर्मला लौट आये थे, लेकिन आये दिन किसी न किसी बात को लेकर दोनों में कहा सुनी हो जाती कभी श्रीकान्त के माता पिता को लेकर कभी उसके छोटे भाइयों को लेकर। निर्मला निरन्तर पत्र द्वारा अथवा फोन पर दामाद और बेटी को समझाते रहते किन्तु कटुता बढ़ती ही गई। जब भी निर्मला जयपुर फोन करती पता लगता कि दोनों में कहा सुनी हुई है। गोपीनाथ जी समझाने का प्रयास करते तब श्रीकान्त निहारिका और उसके घर वालों की शिकायत करने लगता और जब निर्मला बात करती तब बेटी श्रीकान्त और उसकी मां व बहन आदि के नीच व्यवहार की शिकायत करती। एक दिन तो उसने कह ही दिया ---

'मम्मी, तुने क्या देख-समझ कर मेरा विवाह किया है। इनके घर और हमारे घर के संस्कारों में कोई मेल नहीं है।'

निर्मला ने बहुत समझाया था और कहा था ---

'बेटी, विवाह के बाद तो समझौता करना ही पड़ता है।'

'पर मम्मी कब तक ? बेटी ने तड़प कर पूछा था। कुछ देर मौन रह कर निर्मला बोली थी ---

'धीरज रखो बेटी।'

इसी बीच निहारिका मां बनने वाली हो गई और श्रीकान्त उसे मायके छोड़ गया। सुकान्त को जन्म देने को बाद निहारिका कुछ महीने मायके में ही रही। उसकी अनुपस्थिति में श्रीकान्त के पास उसकी मां छुट्टी लेकर रहीं और उन्होंने अपनी बहू के विरूद्ध काफी भड़काया। उसी के बाद श्रीकान्त अचानक निहारिका को लेने आ गया और ढाई माह के बच्चे सुकान्त के साथ उसे ले गया। गोपीनाथ जी को याद है निर्मला उन दिनों बड़ी तनाव-ग्रस्त रहा करती थी और प्राय: रात के समय यकायक उठ कर कहती थी ---

'फोन बजा क्या ? जरा पता कीजिए निहारिका कैसी है ?' गोपीनाथ जी कहते ---

'निर्मला, तुम इतना सोचती रहोगी तो पागल हो जावोगी। जरा सोचो सब कुछ तुम्हारे हाथ में तो नहीं है।'

निर्मला कहती ---

'श्रीकान्त अचानक आकर निहारिका को ले गया। पता नहीं क्या बात है, डर लगता रहता है। मेरी बच्ची मर जायेगी आप उसे यहां ले आइये।'

उसके बाद निहारिका के जीवन में एक भयानक तूफान आया। श्रीकान्त का छोटा भाई मॉन्टी जो बचपन से ही मानसिक रूप से कुछ-कुछ विक्षिप्त था अचानक जयपुर पहुँच गया और निहारिका के साथ गाली-गलौज करते हुए बोला ---

'बड़े घर की बेटी है तू, हमें अपने भइया से अलग करना चाहती है। मैं तुझे ठीक कर दूँगा।'

भय के मारे वह सुकान्त को लेकर पड़ोस के घर में चली गई और उसने वहीं से श्रीकान्त को फोन किया। वह दौड़ कर आया और मॉन्टी को समझाने-बुझाने का प्रयास करने लगा पर वह अपने आपे में नहीं था। उसने घर के सोफे कुर्सी आदि तोड़ दिये और खिड़कियों के परदे फाड़ दिये। श्रीकान्त ने जब डांटा-फटकारा तब उसने उसे भी अपनी बेल्ट से मारना शुरू कर दिया। शोर-गुल सुनने पर पास-पड़ोस के लोग आ गये, लेकिन मॉन्टी को कोई काबू नहीं कर पाया। अन्त में हार कर पुलिस की सहायता से उसे अस्पताल भेजा गया। घटना के दो-तीन दिन बाद श्रीकान्त ने सुकान्त के साथ निहारिका को उसके मायके भेज दिया।

फिर धीरे-धीरे श्रीकान्त की भी आँखें खुली और उसने यह महसूस किया कि उसकी मां के निरंतर भड़काने से ही मॉन्टी का मस्तिष्क पूरी तरह से उलट गया था और वह धीरे-धीरे सचमुच विक्षिप्त हो गया था। अन्त में उसने अपना तबादला त्रिवेन्द्रम करवा लिया था और अपने घर से बहुत दूर निहारिका और सुकान्त के साथ चला गया था।

लेकिन निर्मला की चिन्ता अभी भी दूर नहीं हो पाई थी और वह प्राय: फोन पर पूछती --- 'बेटी, अब कैसी हो।' बेटी कहती ---

'मम्मी, अब सब ठीक है। तुम चिंता मत करो।'

गोपीनाथ जी को याद है कि जब निर्मला निहारिका की ओर से कुछ-कुछ निश्चित होने लगी तभी सुकान्त बीमार पड़ गया और उसे अस्पताल में भरती कराना पड़ा। निर्मला बोली थी - 'मैं उसे देखने जाना चाहती हूँ। आप मेरे जाने का रिजर्वेशन करवा कीजिए।'

गोपीनाथ जी खुश हुए कि पत्नी को इत्मीनान हो गया। लेकिन उसी रात वह बोली--- 'सुनते हैं, सो गये क्या ?' वह जग गये और बोले ---

'क्या हुआ ?' वह बोली --- 'सुकान्त की याद आ रही है। मेरे ही पास सोता था। सो रहा होगा।' उन्होंने कहा ---

'सो जावो निर्मला। नींद नहीं आयेगी तो तुम्हारा ब्लड-प्रेशर बढ़ जायेगा और पेलपिटेशन शुरू हो जायेगा।'

उसने कहा --- 'नींद कहाँ आती है ? और फिर सचमुच निर्मला बीमार पड़ गई थी। डाक्टरों ने संपूर्ण चेकअप के बाद बताया कि उसके गुर्दे खराब हो रहे हैं और ब्लडप्रेशर को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। तब से उसका नियमित इलाज चलने लगा था।

तभी नयनिका का विवाह तय हो गया और उसकी सगाई के दिन से लेकर विवाह तक यही विषय निर्मला के मन पर स्थायी रूप से छाया और वह उससे जुड़ी हुई छोटी से छोटी समस्या को लेकर जूझने लगी और जब-तब तनावग्रस्त और बीमार रहने लगी।

गोपीनाथ जी ने सहसा अपने मस्तिष्क को झटका दिया और सोचने लगे आखिर पुरानी बातों को लेकर सोचने से क्या लाभ ? लेकिन इस मन को आदमी अपने शरीर से कैसे काट कर फेंक दे कि कटु प्रसंग जब-तब उसे न झिंझोड़ पायें ? निर्मला तो स्त्री है, उनके बेटियों की मां है और उसके मन में अभी भी नयनिका के विवाह से जुड़ी हुई अनेक कटु स्मृतियाँ बिच्छू की तरह डंक मारती रहती हैं। लेकिन उनका स्वयं का मन ? क्या उनके मन में इस संबंध में कोई विकार नहीं रहा है ? सोचते-सोचते उनका मन तिलमिला उठा और स्मृतियों की बंद पड़ी खिड़की से अनेक कटु प्रसंग आँखों के आगे आने लगे।

नयनिका को अभिनव ने पसंद कर लिया था और गोपीनाथ जी निर्मला के साथ उसके माता पिता से आगे की बात-चीत करने गये थे। लौटते समय वह दोनों खुश था कि लड़के वालों ने पैसे आदि की कोई मांग नहीं की और सोचते थे कि इस बार स्वेच्छा से यथा-संभव बहुत अच्छा विवाह करेंगे और थोड़ा खुले हाथ खर्च करेंगे। गोपीनाथ जी ने कहा था ---

'निर्मला, देखा कितने अच्छे लोग हैं ?' उसने कहा था ---

'हाँ, फिर भी आप अपना एस्टीमेट उन्हें बता दीजिएगा, ताकि बाद में कोई शिकायत न हो।' उन्होंने अगली मुलाकात में अपना एस्टीमेट बता दिया था और अभिनव की मां ने कहा था--- 'देखिए, हमारी कोई भी मांग नहीं है। बस, मैं चाहती हूँ कि बारात की खातिर ऐसी हो कि लोग बहुत दिनों तक याद रखें।'

वह खुशी-खुशी लौट आये थे और बड़े उत्साह से विवाह की तैयारियों में लग गये थे। लेकिन जैसे-जैसे विवाह की तारीख पास आन लगी लड़के वालों का मुंह बड़ा होता गया। उन्हें याद है निर्मला ने बताया था ---

'बहड़ोर में इक्कीस साड़ियां चाहिए और वह भी केवल खादी सिल्क की। सास के लिए बनारसी और मेहमान लोगों के लिए सत्रह ऊनी सूट।'

गोपीनाथ जी कई कई बार हिसाब-किताब कर चुके थे और सोचते थे कि उधार बाढ़ी करके किसी तरह पूरा करेंगे।

तिलक के समय निर्मला ने समधी के लिए नगद नज़राना एक सुन्दर रेशमी बटुए में सिल कर कपड़े के हाथी के ऊपर रख कर भेजा था। लेकिन दूसरे दिन फोन पर अभिनव की मां ने कहा था ---

'अरे बहन जी, बटुए में क्या भेजा था ? निर्मला सोचती थी कि शायद वह लोग खुश होंगे और चहक कर बोली थी --- 'आप और समधी जी के लिए नज़राना था।'

दूसरी ओर से अभिनव की मां ने व्यंग्य मारा था --- 'मैंने सोचा नौकरों-चाकरों के लिए था।'

निर्मला का मन बैठ गया था और वह बोली थी --- 'क्या बात करती हैं ? नौकरों के लिए तो अलग से दे दिया था।'

'अच्छा, कोई बात नहीं। हमारे यहाँ तो भाई बड़ा परिवार है। बहुत रिश्तेदार हैं। कोई बात नहीं हम लोग नहीं लेंगे, अपनी ओर से कुछ और मिला कर मामा-चाचा को दे देंगे।'

निर्मला बेहद उदास हो गई थी और गोपीनाथ जी का तो पारा ही चढ़ गया था। वह पत्नी से बोले थे ---

'जो जो तय हुआ था वह सब मैंने दिया है। नज़राने के संबंध में कुछ भी तय नहीं हुआ था फिर भी ग्यारह हजार दिये हैं। क्या यह कम है ? एस्टीमेट से बाहर हम बहुत पहले ही जा चुके हैं। मैं अभी फोन करता हूँ।'

निर्मला ने उन्हें रोक दिया था पर इस

घटना से दोनों के मन में बड़ी गहरी ठेस लगी थी। गोपीनाथ जी कहाँ तक याद करें ? कुछ घटनाएँ तो बरछी की तरह उनके मन के भीतर चुभी हुई हैं।

नयनिका की बारात काफी देर से लगभग ग्यारह बजे रात को दरवाजे लगी थी। प्रतीक्षा करते-करते जब गोपीनाथ जी के अपने अतिथि ऊब गये तब उन्हें खाने के लिए उठा दिया गया था और उसी के कुछ देर बात बारात पहुँच गई थी। द्वारपूजा के बाद बारातियों को खाने के लिए अनुरोध किया गया, तभी अभिनव की बड़ी बहन अनुराधा आपे से बाहर हो गई अपने और हाथ हिला-हिलाकर कहने लगी ---

'यह अच्छा तमाशा है। सब खाने के लिए उठ गये और हमारा इंतजार भी नहीं किया।' गोपीनाथ जी के एक मित्र ने कहा ----

'बारात आने में बड़ी देर हो गई थी, काफी लोग तो बिना खाये ही चले गये।' तभी गोपीनाथ जी ऊधर पहुँच गये, अनुराधा कह रही थी ---

'देख लिया, देख लिया। सब बड़े लोगों के चोंचले हैं।' उसके पास जाकर उन्होंने पूछा था---

'क्या बात है बिटिया ?' अनुराधा का चेहरा फक हो गया और खिसियाती सी बोली थी --- 'कुछ नहीं अंकल जी .... कुछ नहीं।' लेकिन उनके मन पर जैसे किसी ने चाबुक की मार का निशान बैठा दिया और वह चुपचाप अलग हट गये थे।

विदाई के समय निर्मला ने सभी सगे-संबंधियों का टीका किया और भेंट दी थी। तभी अभिनव के पिता गोपीनाथ जी के पास आये और उनके कान में फुसफुसाये थे---

'कुछ लोग नहीं आ पाये। उनकी भी विदाई दे दीजिए।'

गोपीनाथ जी को आश्चर्य हुआ पर वह निर्मला के पास गये और उससे मांग कर उनकी विदाई का हिस्सा भी उन्हें थमा दिया था। अभिनव की मां ने मुंह पर जबरन मुस्कान लाकर कहा था --- 'अब यह सब तो रस्में हैं। करना ही पड़ता है।'

निर्मला कुछ नहीं बोली और गोपीनाथ जी भी उदास मन से खड़े रह गये थे। गोपीनाथ जी सोचने लगे कि कहाँ तक याद करें ? जीवन में धोखा ही धोखा खाते आये हैं। प्रायः सभी ने उनसे लाभ लेकर उन्हीं को बदनाम किया है।

उनकी चचेरी बहन इंदिरा का बेटा संजू बहुत बीमार हो गया, उसके इलाज के लिए वह अपने दोनों बच्चों और एक नौकर को लेकर उनके पास आई थी। लगभग छः महीने इलाज चलता रहा और इस बीच इंदिरा बराबर अपने बच्चों के साथ उनके घर पर रही। उनके खाने-पीने का प्रबंध और दवा-दारू आदि का जुगाड़ करते-करते निर्मला थक जाती। संजू ठीक हो गया और वह लोग वापस चले गये, लेकिन उसी इंदिरा ने बाद में गोपीनाथ जी की भाभी से कहा था ---

'बस भाभी, बच गया संजू। नहीं तो वहाँ इतने दिन किस तरह नरक में बीते हैं यह मैं

ही जानती हूँ।' सुनकर गोपीनाथ का मन फट गया था और निर्मला रो पड़ी थी।

उनके फूफा शारदा बाबू अपना मकान बनवाने के लिए उन्हीं के घर पर ही रहे थे। लगभग आठ महीने मकान का काम चलता रहा और फूफा और उनका नौकर कैलाश उन्हीं के साथ रहते रहे और उन्हीं की गाड़ी इस्तेमाल होती रही। बाद में बुआ ने उन्हीं भाभी से कहा था --- 'भई बस, झेल गये। अब काम खतम हुआ तो जान में जान आई।' भाभी ने पूछा था ---

'पर आप तो निर्मला के घर पर थे।'
'अरे वही तो, बहुत छोटे दिल के लोग हैं।'

गोपीनाथ जी के चाचा शदर बाबू का मकान मुकदमें में फंस गया था, चार-पांच साल अदालत की दौड़ लगती रही। इस बीच वह नौकरी से रिटायर हो गये और किराये का मकान लेकर रहने लगे। एक बार जब गोपीनाथ बाबू उनके यहां गये थे तब उन्होंने देखा कि उनका मकान बहुत टपक रहा था और उन्होंने अपना मकान खाली कराकर उनके रहने के लिए दे दिया था। लेकिन बड़े भइया अनिरूद्ध बाबू ने चाची से कहा था ---

'अरे चाची, इसमें गोपीनाथ की कोई चाल है। आप उसका मकान ठीक-ठाक करवा देंगी और कुछ कमरे आदि बनवा देगी तो उसका पैसा बच जाएगा।' चाची के मुंह से यह बात सुनकर गोपीनाथ जी को बहुत दु:ख हुआ था। उन्हें याद आया कि चाचा ने किराये का मकान लेने से पहले अनिरूद्ध भइया से कहा था ---

'अनिरूद्ध, तुम्हारा मकान तो यहाँ खाली पड़ा है। अभी तो तुम्हारा रिटायरमेंट दूर है। मुझे दे दो, जो कहोगे मैं किराया दे दूँगा।'

अनिरूद्ध भइया ने कहा था --- 'अभी उसमें कुछ काम करवाना है। पाँच-छह महीने तो लग ही जायेंगे।' और चाचा को किराये का मकान लेना पड़ा था।

गोपीनाथ जी सोचने लगे कि स्मृतियों के कितने ही पड़ाव ऐसे हैं जहाँ अनेक काँटे उन्हें लहू-लुहान कर जाते हैं। ऐ कितने ही पड़ावों को अपने-अपने कंधे पर ढोते वह और निर्मला अपने जीवन की शाम तक पहुँच गये हैं। तीस-पैंतीस वर्षों का यह जीवन इसी प्रकार की कटुताओं और दूसरों के मुंह से अपनी आलोचना सुनने में ही बीतता आया है। धीरे-धीरे उनके भीतर का सारा रस सूखता गया है।

गोपीनाथ जी का मन खिन्न हो गया और

वे उठकर निर्मला के पास आ गये। तब तक वह अपना काम समाप्त कर चुकी थी और धूप में कपड़े फैलाने के लिए बालकनी की तरफ ही आ रही थी। बोली ---

'बस, काम खतम हो गया। दो मिनट में आ जाती हूँ।' गोपीनाथ जी उसके पीछे-पीछे बालकनी में चले आये और पत्नी द्वारा सारे कपड़े फैला दिये जाने के बाद वह बोले---
'अब, जरा बैठो।' वह कुर्सी खींच कर बैठ गई और अपना हाथ पोंछती हुई बोली --- 'हाँ, कहिए। आप कुछ कह रहे थे।' वह सोचने लगे कि इतनी देर तक स्मृतियों की कंटीली झाड़ियों में उलझ कर उन्होंने कितना कष्ट उठाया है। यदि उसकी बात बताते हैं तब पत्नी भी दुखी हो जायेगी, अत: बोले ---

'कुछ नहीं, यूं ही सोच रहा था कि इतनी बड़ी जिन्दगी में हमने क्या पाया ?' निर्मला ने पूछा ---

'क्यों, ऐसा क्यों कहते हैं ?' उन्होंने कहा--- 'तुम जानती हो मैं क्यों कह रहा हूँ।' उसने अपनी आँखें सहसा आकाश की ओर घुमाई और एक लम्बी सांस खींच कर बोली---

'हाँ, समय तो काफी बीत गया। हम सदा समस्याओं से ही जूझते रहे और अकारण काफी अपमान और दु:ख उठाते रहे।' गोपीनाथ जी ने पत्नी की ओर देखा और बोले ---

'हां, तुम ठीक कहती हो। पर अब शांति चाहता हूं। कुछ पल ऐसे पाना चाहता हूँ जो केवल हमारे और तुम्हारे हों।'

वह मुस्कुराने लगी और बोली ---
'कुछ वर्षों पहले मैं कहती थी कि आप दफ्तर के बाद भी फाइलों में व्यस्त रहते हैं। मेरे लिए समय ही नहीं है। तब आप कहते थे क्या करूँ काम है। अब आप को लगता है मैं बहुत व्यस्त रहती हूँ और आप को समय नहीं दे पाती हूँ।'

पत्नपी की बात ठीक लगी और वह सोचने लगे कि रिटायर हो जाने के बाद भी वह समस्याओं से मुक्त नहीं हो पाये हैं। क्या यह सोचना कि जीतन में आदमी कभी निर्द्वन्द और मुक्तत हो नितान्त अपना होकर रह पायेगा कल्पना मात्र है। ? पति को मौन देख कर निर्मला को लगा जैसे उसकी बात से उन्हें ठेस पहुँची है। तनिक पास आती हुई वह बोली ---

'आप क्यों दुखी होते हैं ? यह सब तो जीवन के अंग हैं। जब तक संसार में हैं तब तक तो दु:ख-सुख लगा ही रहेगा। किन्तु इन्हीं के बीच अपने लिए कुछ पल भी मिल जाये तो हमें खुश होना चाहिए।'

उन्हें लगा पत्नी की बात में सच्चाई है और उन्होंने निर्मला का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा - 'तुम ठीक कहती हो। जैसे आज का यह पल, हमें केवल अपने लिये कितने दिनों बाद मिल पाया है।'

गोपीनाथ जी को लगा जैसे वर्षों पहले की निर्मला उनके सामने बैठी है और उन्होंने उठकर उसे अपने सीने से लगा लिया।

संपर्क:सदस्य (प्रशासन), कैट, अहमदाबाद बेंच, सरदार पटेल स्टेडियम के सामने, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-9

❖❖❖

काव्य-कुंज

सनातन गंध

✍ प्रो. लखन लाल सिंह
"आरोही"

चाहे तुम
कितने बाड़ लगाओ
या दिखाओ
उँगलियाँ!
तुम चाहे
आँखें
लाल-पीली ही
क्यों न करो
परन्तु मेरा मन
गुलाब से
उलझ ही जाता है
लटके इन्द्रधनु पर
टँग ही जाता है!
आखिर कब तक
झुठलाते रहोगे
गुलाब और इन्द्रधनु को?
कब तक भरमाते
तुम अपने मन को?
मन को घेरे से निकलकर
फिरने दो
फूलों की क्यारियों में!
मन का जहर
धुल जाने दो
गंधों की धारा में!

संपर्क: ऋतंवरा, खैरा, पतझौरी खैरा, बांका

स्वपन-तख्ते ताउस का

✍ अजय कुमार

स्वपन रहा है
सदियों से कुर्सी का
आदमी के ऊपर बैठने का
अजब है भाग्य की विडम्बना
लिखा है उसमें सिर्फ रोना
उसके लिए।
यदा कदा
जब बैठ जाता है
आदमी कुर्सी पर
रोने लगती है कुर्सी
पूज रहे हैं सभी उसे
नहीं देखता कोई
इस रत्न जड़ित सिंहासन को।
चला जाता है आदमी
खाली नहीं रहती कुर्सी
बैठ जाती है एक साया
पर नहीं देखता कोई
उसकी ओर
कुर्सी रोती रहती है।

संपर्क: सचिव, नगर विकास विभाग,
बिहार सरकार, पटना

मत खेलो इतनी घृणित राजनीति

✍ डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी

मत खेलो इतनी घृणित राजनीति
बंद करो चरित्र हनन की प्रथा।
अरे चाँद पर थूकनेवालो।
उसका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा
उल्टे तुम्हारा ही मुख-वंसन मैला होगा।
तुम्हें नहीं दिखायी, पड़ती अपनी चादर
तो यह मत समझो कि दूसरा भी नहीं देखेगा।
तुम कैसे छिपाओगे काले धब्बों को ?
हो सके तो अपने चरित्र को उठाओ
इतना ऊँचा कि दूसरे का चरित्र बौना हो जाए
तुम्हारे चरित्र के सामने।
तुम मन वाणी और कर्म से
बन जाओ इतने निश्चछ, निर्मल एवं उज्ज्वल
कि तुम्हारे व्यक्तित्व में आ जाए आकर्षण
लोग अपने आप अपने अपनों को छोड़कर
तुम्हारी ओर खिंचे चले आएंगे;
इसी में है तुम्हारा भला और इसी में है
इस देश का, विश्व का, और मानवता का कल्याण।

संपर्क: गर्ल्स हाई स्कूल एंड कॉलेज, 25 एल्गिन रोड, पो. बॉक्स-3, इलाहाबाद

गीत

हँसी आपकी

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

आप हँसें तो डर लगता है।
अदा आपकी अजब निराली
जन-मन मोहित करनेवाली
देख मदारी के करतब ज्यों
बच्चे पीटें जी भर ताली
वशीभूत कर देने वाला
अपनों जैसा स्वर लगता है।
आप विदूषक के हैं आका
कौन बाल कर सकता बाँका
हों कृपालु तो कटती चाँदी
वरना साँस-साँस पर डाका
अट्टहास की अनुगूँजों से
कंपित हर पत्थर लगता है।
हर मुजरिम को पदक दिलाते
सच को सूली पर लटकाते
हो चौकस अँधेर नगरी के
हर निरीह की नींद उड़ाते
शातिर मुसकानों से सहमा-
सहमा महानगर लगता है।
हम निबलों के आप चहेते
थकते नहीं चरण-रज लेते
तिल को ताड़ बनानेवाले
राई को पर्वत कर देते
चकित करिश्मों से करता जो
पहुँचा जादूगर लगता है।
हम खुद ही मखौल बन जाते
आप ठठाकर हँसी उड़ाते
दिखती मगर सुगबुगाहट तो
आपे से बाहर हो जाते
खुद पर भी तो हँसकर देखें
कैसा महासमर लगता है!

संपर्क: कार्यालय, प्रधान महाप्रबंधक,
दूरसंचार जिला, टेलीफोन
भवन, पटना-1

काव्य-कुंज

ग़ज़ल

✍ कृपाशंकर शर्मा "अचूक"

फैला हुआ धुँआ है सियासत का दोस्तो
मसला उठाए कौन? हिफाज़त का दोस्तो
मंदिर बहुत हैं और बहुत गिर्जा मस्जिदें
है पास किसके वक्त इबादत का दोस्तो
नादानियों में हमने आजतक जो खो दिया
मौका दिया नहीं है शिकायत का दोस्तो
भूला जो रास्ता है शराफत का दोस्तो
हम किसको कहें अच्छा बुरा किसको छोड़ दें
जो फैसला मिलेगा अदालत का दोस्तो
कहने की बात को 'अचूक' कहता अदब से
आता जुबां पे जिक्र कभी खत का दोस्तो

संपर्क: 38, विजय नगर, करतारपुरा
जयपुर-322006 (राज.)

नर-संहार जो रोका चाहो.......

✍ राजभवन सिंह

जात-पाँत जो नहीं मिटी तो देश यह मिट जाएगा।
यह सारा भारत कुछ दिन में ही मरघट बन जाएगा।
नर-संहार जाति-संघर्षों का अंतिम परिणाम है।
जाति-जाति में द्वेष बढ़ाना नेताओं का काम है।।
जात-पाँत के बल पर ये चुनाव जीतकर आते हैं।
एक जाति को अन्य जाति से स्वार्थ हेतु लड़वाते हैं।
कहा कभी था लोहिया जी ने जाति तोड़ों औ दिल जोड़ो।
कर विवाह भिन्न जाति से ऊँच-नीच का गढ़ तोड़ो।
मानव की है एक जाति, मजहब का भेद भी झूठा है।
दोनों के प्रपंच में पड़ मानव मानव से रूठा है।
नर-संहार जो रोका चाहो, जाति-प्रथा को नष्ट करो।
देश बँट रहा टूट रहा है, मित्रों, अब कुछ कष्ट करो।
बेटी और रोटी का रिश्ता भिन्न जाति से जब होगा।
तभी शान्ति का स्वर उठेगा, मेल-जोल भी तब होगा।

संपर्क: पोस्टल पार्क, बुद्ध नगर
पथ सं.-2 ,पटना-1

वाण

✍ दुर्गाशरण मिश्र

दम तोड़ रहे
शब्दों में
छटपटाहट है
संवाद करने की
पर जुबान
ताला जड़े है
वह जानती है
विरोधी हवा का
घातक स्पर्श होते ही
शब्दों का
विच्छेद हो जाएगा
पर वर्णों में
शब्दभेदी वाण बनने की
बड़ी बेचैनी है
उनकी योजना है
विस्फोटक बनकर
फटने की
सूर्य की किरणों पर
चढ़कर
दुनिया को
चुंधियाने की।

संपर्क: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय
हवाई अड्डा, पटना-14

जिंदगी तलाश है

✍ डॉ. शिवचंद्र प्रताप

जिंदगी तलाश है, अबूझ-सी तलाश है
दूर बहुत लगती है, क्योंकि बहुत पास है
आदमी मुसाफिर है,
सफर और मंजिल भी,
बहता-सा दरिया है,
ठहरा-सा साहिल भी;
आदमी ही पानी है, आदमी ही प्यास है,
जिंदगी तलाश है।

आदमी खिलावट की
घुटती अकुलाहट है,
इंतजार अपना है,
पासे को पानी की तड़प का एहसास है
जिंदगी तलाश है।
सत्य के सफर में तो
चलना है रूक जाना
रूकना है परिधि पर से
केंद्र पर सिमट आना,
केंद्र की ही माया तो परिधि, वृत्तकार है,
जिन्दगी तलाश है।

संपर्क: अरुणाचलम, नक्षत्रलोक
बेलन बाजार, मुंगेर

फूलों के लिए

✍ कौशिक भट्टाचार्य

तुम फूल हो फूलो
प्यार है तुम्हें
फूल से
तो काँटों से बचकर
कहाँ जाओगी!!!
क्योंकि तुम्हारा फूल
रह नहीं सकता
बगैर काँटों के
नफरत मत करो उनसे
जो फूल को बनाते हैं फूल.........

संपर्क: 10/13, रामकृष्णपरमहंस
देब रोड,कोलकाता-35

अनवरत शोषण - एक मौलिक विचार

डॉ. एस. एस. सक्सेना 'त्यागी'

समाज में शोषित वर्ग के उत्थान के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर को जब 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जा सकता है तो लेखक को पूर्ण विश्वास है कि सामाजिक न्याय की अवधारणा को सुगठित करने के लिए उसके मौलिक सुझावों के लिए निश्चय ही उसे कभी ना कभी पुरस्कृत किया जायेगा। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति, जिनका सदियों से शोषण होता आ रहा है, आज भी शोषण से मुक्त नहीं हो पाये हैं। छोटी-छोटी बातों पर ही गौर करिये तो आप पायेंगे कि हर जगह-हर स्तर पर, चाहे वह आर्थिक स्तर पर हो या सामाजिक स्तर पर, उनको बारम्बार प्रताड़ित किया जा रहा है। अब आप तमाशा देखिए कि जयपुर से पटना जाने के लिए जो रेलगाड़ी का किराया स्वर्ण जाति के व्यक्ति को देना होता है उतना ही किराया अनु. जाति या जनजाति के गरीब व्यक्ति को भी देना होता है। ऐसा का ऐसा ही परोप्लेन व बस की यात्रा में होता है। जब रेलवे विकलांगों एवं बीमारों के लिए किराया कम कर सकता है तो उनके लिए भी कम कर सकता है। इसके अलावा यह भी देखिए कि जब रेलवे विभाग महिलाओं तथाविकलांगों के लिए अलग से सीट या डिब्बे रख सकता है तो ऐसा क्या कारण है कि इस वर्ग के गरीब व्यक्तियों के लिए अलग से डिब्बे या सीट आरक्षित नहीं रखी जा सकती। आप कभी बस में बैठिये तो पायेगें कि उसमें सीट नं-1 व 2 सदैव ही विधायक या मंत्री महोदय के लिए आरक्षित हो है, किन्तु परिवहन विभाग के किसी अधिकारी को आज तक यह बात समझ में नहीं आई कि कम से कम 4 सीट तो अनु. जाति/जनजाति के व्यक्तियों के लिए भी आरक्षित कर दी जाये। होना तो यह चाहिये कि रेल में वातानुकूलित-स्लीपर कोच का आरक्षण निम्न प्रकार होना चाहिये यथा: 2 डिब्बे अनु. जाति के लिए-1 डिब्बा अनु. जनजाति के लिए-1 डिब्बा अन्य पिछड़ी जाति के लिए तथा 2-3 डिब्बे सामान्य जाति के लिए। तब ही इनकी भीड़ से मुक्ति व बैठने के लिए सीट मिल सकती है। अनु. जाति/जनजाति के लिए किराया तो निश्चित रूप से सामान्य श्रेणी से आधा होना चाहिये।

कभी भी आप किसी सरकारी अस्पताल में जायेंगे तो आप पायेंगे कि वहां लम्बी-लम्बी कतारें लगी होती है, जिनमें प्राय: शोषित वर्ग के व्यक्ति ही अधिक होते हैं। अब न तो उनकी वहां कोई सुनने वाला होता है ना ही कोई अलग से डाक्टर या वार्ड होता है। इस समस्या का समाधान केवल यह है कि बड़े-बड़े सरकारी अस्पतालों में वर्तमान प्रथा को समाप्त करके एक जनरल वार्ड तथा एक सर्जीकल वार्ड भी इनके लिए आरक्षित करना चाहिये तथा इसी प्रकार एक एक वार्ड अनु. जनजाति के लिए भी आरक्षित होना चाहिये। इनके लिए डाक्टर भी इसी जाति के अलग से पदस्थापित होने चाहिये, ताकि उनका इलाज भी उन्हीं चिकित्सकों द्वारा किया जा सके तथा इनके लिए सरकारी दवाएं एवं ऑपरेशन आदि नि:शुल्क होने चाहिये। इससे इस जाति के रोगियों को यह शिकायत करने का मौका नहीं मिलेगा कि उनको किसी गलत डाक्टर के हाथों जान गंवानी पड़ी या एक्सपायरी डेट की दवायें मंगा ली या ऑपरेशन के लिए मंहगा सामान मंगवा लिया या उनको ठीक प्रकार से नहीं संभाला। इस वर्ग के विद्यार्थियों की प्रतिभा को देखते हुए ही तो 10 प्रतिशत अंक पाने के बाद इनको मेडिकल कॉलेज में तथा इंजीनियरिंग में 5 प्रतिशत वाले को प्रवेश दिया जाता है। अभिप्राय यह है कि इनमें प्रतिभा तो है, कि उसके विकास के अवसर तथा उनको अच्छी तरह तराशने के मौके नहीं मिले। 100-50 ऑपरेशन करने के बाद अपने आप अनुभव आ जायेगा। एस्कॉर्ट के डॉ. नरेश त्राहेन ने भी जब पहला ऑपरेशन किया होगा तो हाथ कांपे ही होंगे, वह निय इन पर भी तो लागू होगा।

और छोटी-छोटी बातें देखिये-पोस्टकार्ड 50 पैसे में पूरे भारत में जाता है। अरे भाई- जब सरकार अनु. जाति/जनजाति के उम्मीदवारों के लिए परीक्षा शुल्क शून्य या कम कर सकती है तो पोस्ट ऑफिस भी रजिस्ट्री, लिफाफे, पोस्टकार्ड आदि के लिए आधी राशि क्यों नहीं कर देता।

और तो और न्यायपालिका में देखिये - दिल्ली के तीसहजारी कोर्ट में कम से पचास हजार व्यक्तियों से अधिक की भीड़ होती है। इस भीड़ में पता ही नहीं चलता कि कितने मुकदमें लड़ने वाले हैं और कितने पैरवी करने वाले हैं। अब आप कैसे कल्पना कर सकते हैं कि अनु. जाति का व्यक्ति एक मंहगे वकील को नियुक्त कर सकता है और उसको कैसे न्याय मिलेगा। इसलिए न्याय का तकाजा यह है कि न केवल न्याय ही मिले बल्कि मिलना प्रतीत भी होना चाहिये। इसलिये इनके वकीलों की जमात भी अलग होनी चाहिये, इनके न्यायाधीश भी अलग होने चाहिये। जब महामहिम पूर्व राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय में अनु. जाति के न्यायाधीश की नियुक्ति की वकालत कर सकते हैं तो उनका यही तो तर्क था कि इनको न्याय शीघ्र, अच्छा व समय पर मिलने वाला होना चाहिये। इनके न्यायाधीशों की योग्यता व निष्ठा में किसी को किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिये। लेखक भी तो यही कहना चाह रहा है कि छोटे-छोटे मुकदमें जिनका अम्बार लगा हुआ है, छोटे-छोटे न्यायालय में होने चाहिये, ताकि वहां न्याय शीघ्र ही, न्यूनतम खर्च पर मिल सके, जिसके लिए यह आवश्यक है कि इनके लिए न्यायालय अलग से हो, जिसमें अनु. जाति/जनजाति के ही न्यायाधीश व कर्मचारी कार्यरत हो। तब ही ऐसे शोषितों को उचित, समय पर व कम खच्र में सही न्याय मिल सकता है।

लेखक ने पिछले दस वर्षों से इस विषय पर शोध किया और यह पाया कि हर स्तर पर, हर जगह पर इनके साथ अन्याय हो रहा है। आप किसी प्राईवेट कम्पनी में जायेंगे तो पायेंगे कि वहां पर आरक्षण की कोई नीति निर्धारित नहीं है भला हो माननीय रामविलास पासवान का जिन्होंने केन्द्रीय मंत्री रहते हुए यह मांग उठाई थी कि प्राईवेट कंपनियों में भी आरक्षण होना चाहिये। आप इनको प्राईवेट कंपनियों में रोजगार तो दीजिये, तभी तो 'गुदड़ी के लाल' सामने आयेंगे। आप इनको मौका ही नहीं देंगे तो ये अपनी कार्यक्षमता का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं।

कुछ दिन पहले कुछ मजदूरों ने अल्पाहार का आयोजन किया था, वहां कुछ रेल कर्मचारी भी मौजूद थे, उस समय कुछ रेल दुर्घटनायें भी हुई थी, सामान्य वार्ता के दौरान यह बात भी हुई कि रेलवे में जो भर्ती हुई, उनमें आरक्षण के कारण कुछ ऐसे भी व्यक्ति नियुक्त एवं पदोन्नत कर दिए गए, जो कि सक्षम नहीं थे तथा उनकी

शेष पृष्ठ-20 पर.....

दहेज लोभियों को सबक सिखाने के लिए निशा की राह पर चलना होगा लड़कियों को

विचार कार्यालय, दिल्ली

यदि समाज बदलना हो और दहेज लोभियों को सबक सिखाना हो तो निशा की राह पर चलना होगा यहाँ की लड़कियों को। पिछले दिनों नोएडा से मिली खबर के अनुसार निशा द्वारा शादी से इनकार करने पर वर पक्ष को बारात वापस लौटने को मजबूर होना पड़ा। किस्सा यूँ है कि कई लाख रुपये तथा दहेज में अनेकों कीमती-सामान देने के बावजूद बारात लेकर आए दूल्हा सहित उसकी माँ-पिता मुंहमांगा, दहेज न मिलने पर कन्या पक्ष की बेइज्जती करने पर आमादा हो गए। कहा तो यहाँ तक जाता है कि निशा के पिता मिन्नतें की पर उन्होंने एक न सुनी बल्कि वे लोग पाँच लाख और नकद लेने पर अड़ गए और आपे से बाहर आकर कन्या के पिता पर हाथ उठा दिए तथा वर की माँ ने उनके ऊपर थूक दिया। जबकि निशा के पिता डी.डी.शर्मा ने टीवी, फ्रिज से लेकर नई मारुति एस्टीम कार वर को देने के लिए पहले ही खरीद रखी थी और वह विवाह समारोह स्थल पर सजी खड़ी थी।

ज्योंहि निशा को अपने पिता की बेइज्जती की जानकारी मिली वह पिता की जिल्लत को बर्दाशत नहीं कर पायी और वह ऐसे दहेज लोभियों और अमर्यादित व्यवहार करनेवालों के घर की बहू बनने से इनकार कर गयी। उसने तुरंत अपने पिता के मोबाइल पर अपने फैसले की जानकारी दी और पुलिस को भी खुद ही सूचना दी। इसके बाद दूल्हे व उसकी माँ को भी बारात समेत बैरंग वापस लौटना पड़ा। निशा ने अपने परिवार व रिश्तेदारों को समझाया कि समय रहते जो कुछ हुआ वह अच्छा हुआ और उसे अपने किए पर गर्व है।

सच तो यह है कि निशा के इस कदम पर सारे समाज को गर्व होना चाहिए और अन्य लड़कियों को निशा से पाठ लेनी होगी तथा दहेज लोभियों को सबक सिखाने के लिए कमर कसना होगा तभी दहेज की इस कुप्रथा से निजात मिल सकेगा।

निशा के इस सराहनीय कदम पर दूसरे दिन बधाई देनेवालों का तांता लगा रहा। सवाल यह उठता है कि दहेज के इस कुकर्मों द्वारा जो लगातार नया रिकार्ड बन रहा है और जो सामाजिक शर्म की पराकाष्ठा है फिर भी पूरा समाज क्यों इसे अघोषित स्वीकृति दिए हुए है। क्या यह सही नहीं कि सभ्य एवं सुसंस्कृत कहलानेवाले आज के इस समाज में एक जिंदगी की कीमत मोटर साइकिल, फ्रिज या टेलीविजन भर रह गयी है ?

निशा के इस कदम के थोड़े ही दिनों बाद एक और 'आइरन गर्ल' अनुपमा भी पति योगेन्द्र द्वारा 8 लाख रुपये की माँग पर उसके साथ जीवन न बिताने का निर्णय लेकर निशा की राह पर चल पड़ी। इसी तरह के और हादसे में जनपद बुलंदशहर के बुगरासी कस्बे में मोहम्मदपुर गांव के असगर द्वारा निकाह के पूर्व स्कूटर माँगने पर दुल्हन गुलिस्तां ने न केवल शादी करने से इनकार कर दिया बल्कि दुल्हे की चप्पलों से पिटाई कर उसके होश उड़ा दिए।

इसमें कतई संदेह नहीं कि निशा, अनुपमा तथा नीलम जैसी कई लड़कियों ने देश भर की लड़कियों के लिए दहेज जैसी कुप्रथा को समाप्त करने में उदाहरण पेश किया है। इनके साहसिक पहल से निश्चित ही न केवल दहेज के विरूद्ध एक माहौल बनेगा बल्कि प्रकारांतर से संपूर्ण विवाह पद्धति पर भी नए सिरे से बहस छिड़ेगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दहेज के पीछे भी एक सामंती मानसिकता ही काम करती है। दहेज में अधिक से अधिक रकम लेने पर लोग गर्व करते हैं। ऐसी स्थिति में इन लड़कियों ने जो नई चेतना जगायी है उसे और फैलाने के लिए संचार माध्यमों के साथ-साथ स्वैच्छिक संगठनों तथा उन तमाम लोगों को आगे आना होगा जो सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर हैं।

असल इस सामाजिक कुरीति को खत्म करने के बारे में किसी भी स्तर पर कोई सार्थक पहल का नहीं हो पाना भी दुर्भाग्य की बात है। इसमें कतई संदेह नहीं कि दहेज की इस बीमारी ने तमाम समाज शास्त्री अवधारणाओं को किनारे कर दिया है। शिक्षा में बढ़ोत्तरी होने के साथ यह रोग और बढ़ता जा रहा है। सच तो यह है कि इस सामाजिक विसंगतियों के मूल में फिजूलखर्ची और दिखावे की प्रवृति काम कर रही है। इस लिए जरूरत इस बात की है कि परस्पर समझ और दहेज की इस धारणा को बदल कर ही इस रोग का निदान निकाला जा सकता है।

❖❖❖

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,
Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES

Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)

Offers a wide range of mother Tinchers, Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad
D.M.S. (Patna)

Dr. Arun kumar
D.H.M.S (Patna)

Spcialist in chronic Diseases

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।

(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।

(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।

(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाऐगी।

(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।

(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।

(10) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका **E-mail - vicharbharat@hotmail.com**

सिद्धेश्वर

सम्पादक, विचार दृष्टि दृष्टि 6, विचार बिहार,
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92,
दूरभाष: (011) 22530652

सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का चिंतन

समीक्षकः नवल किशोर गौड़

उपन्यासकार

मेरी आँखों के सामने टेबुल पर वन्दना वीथिका का उपन्यास 'स्वरूपा: एक स्मृति' खुला पड़ा है। मेरी आँखें उसके शब्दों को सिर्फ पढ़ ही नहीं रही हैं, वे उन शब्द-चित्रों को मुग्ध होकर देख भी रही हैं जो इस पुस्तक के बहुचित्रदर्शक (कैलियोडायस्कोप) के माध्यम से मेरे मन के पर्दे पर उतरते जा रहे हैं।

पटना विश्वविद्यालय-छात्र-छात्राओं की उमंगभरी गहमागहमी-वर्त्तमान सामाजिक-राजनैतिक परिवेश की काली छाया को चुनौती देती हुई प्रतिक्रियाएँ-जातिवाद एवं फॉरवर्ड-बैकवर्ड के संघर्षों का अंतर-विरोध-कर्मचारियों-अध्यापकों की हड़ताल-वाइस-चांसलर का दुमुँहापन-छात्रावास में बम-विस्फोट-छात्रसंघ पर बैकवर्ड छात्र-नेता का कब्जा-क्षत्रांत में छात्र-जीवन के केन्द्र में उभरती हुई स्वरूपा और उसके इर्द-गिर्द नई पीढ़ी के आक्रोश-भरे ऐंग्री-यंगमैन का जमघट-और इस जलती हुई मरुभूमि में ओएसिस की तरह स्वरूपा के पिता प्रो. बख्शी के बैठकखाने की शीतल छाया ....

......विवाहोपरान्त पूर्व छात्रा कामिनी की दहेज-प्रताड़ना और हत्या-बलात्कार की घटनाएँ-इन घटनाओं का रहस्योद्घाटन करने वाले निर्भीक पत्रकार का अपहरण और हत्या-अपराधियों-अधिकारियों-राजनेताओं की घिनौनी मिलीभगत-आतंक और उत्पीड़न की मंडराती हुई काली घटाएँ-ग्रामीण कंचलों में जातीय संघर्ष की लपटें-भीषण नर-संहार की घटनाएं-देश-विदेश के समाचार-पत्रों में भर्त्सनाएँ-'देश-देशान्तर' अखबार के तेजस्वी स्तंभकार का अपहरण- और अन्तिम दृश्य-जहानाबाद के निर्भीक कर्मनिष्ठ पुलिस-इंस्पेक्टर के सरकारी आवास में, कर्फ्यू के दौरान, अपनी दीदी से मिलने गई हुई स्वरूपा की, अपने राखी -बन्द भाई स्निग्ध यादव को सुरक्षा-प्रदान करने के प्रसंग में, बैकवर्ड युवा-नेता द्वारा गोली मारकर हत्या-खून की होली.....

प्रारंभ कितना आकर्षक, ... अन्त कितना दर्दनाक !

शिल्प-विधान की दृष्टि से इस उपन्यास की अपनी एक विशेषताई।

यह वर्णनात्मक नहीं, चित्रात्मक उपन्यास है। इसमें न कोई अध्याय है और न कोई परिच्छेद। फिर भी यह संपूर्णता की एक सुसंबद्ध इकाई है। इसके प्रथम पृष्ठ का प्रारंभ स्वरूपा की अधूरी डायरी से उद्धृत इस वाक्य से होता है-

''कभी-कभी ऐसा लगता है, जिंदगी चलते-चलते बिल्कुल ठहर गई है।'' उपन्यास के अंतिम पृष्ठ की समाप्ति भी अत्यंत कलात्मक ढंग से इसी वाक्य की आवृति के साथ होती है। यह वाक्य जैसे वह धुरी है जिसके वादों और इस उपन्यास की कथावस्तु नाच रही है। चलती हुई जिंदगी के पैरों में एक स्फूर्ति थी पर अब जिसमें सामाजिक-राजनैतिक मैगजीन के मवाद भर गए हैं। इसलिए जिंदगी बिल्कुल ठहर गई-सी लगती है। अधूरी डायरी का यह वाक्य ही इस उपन्यास की एक-सूत्रता का रहस्य है। उस अधूरी डायरी के शेष सादे पन्ने स्वरूपा के खून के छींटों से भरे हुए हैं। संकेत यह है कि इस मैगजीन की एकमात्र दवा है आत्म-बलिदान!

समीक्ष्य उपन्यास- स्वरूपाः एक स्मृति	
उपन्यासकार: वन्दना वीथिका	
प्रकाशक: दरअसल प्रकाशन,	
दक्षिणी मंदिरी, पटना-1	
पृष्ठ: 96	मूल्य: महज पचास रुपये

कथा-वस्तु का प्रस्तुतीकरण भी विस्मय-जनक कलात्मक नवीनता का परिचायक है। उपन्यास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दर्जनों स्त्री-पुरुष पात्र आए हैं-विक्षुब्ध युवा-वर्ग, धूर्त अधिकारी, कुटिल स्वार्थी राजनेता, निर्भीक पुलिस-पदाधिकारी, उत्पीड़ित महिलाएं, निर्भय पत्रकार, भविष्य-द्रष्टा चिंतक-विचारक और खूंखार हैवान। किन्तु किसी भी पात्र की शारीरिक आकृति रंगों और रेखाओं में उकेती नहीं गई है। सभी पात्रों का अपना एक व्यक्तित्व है किन्तु वह व्यक्तित्व उभरता है उनके भावों और उक्तियों से। व्यक्तित्व का निर्माण उतना ही कठिन है। कठिन को सहज बनाने की यह कला लेखिका की निजी विशेषता है।

यह उपन्यास यथार्थ का दिग्दर्शक-मात्र नहीं है। यथार्थ की लपटों में जलते हुए सामाजिक-राजनैतिक परिवेश में फूटता हुआ यह वह अग्नि-स्फुलिंग है जिसकी दहकती हुई चमक इसके पात्रों की उक्तियों में दिखाई देती है-

(i) 'आज की परिस्थिति में लाठी चलानेवाला कलम चलानेवाले से ज्यादा शक्तिशाली है'-शैलू

(ii) 'रही बात पत्रकारिता की। तो वह राजनीति की जूठन परोसने को विवश है।'-राजरत्न

(iii) ईमानदारी अब खामोशी की ओढ़कर कोने में दुबक कर सोने को विवश है।'-सौरभ

(iv) 'न्याय के लिए लड़ सकता है, परन्तु फैसला तो बिकता है, चाहे जो खरीद ले।'-सौरभ

(v) सच कहा जाए तो यह उग्रवाद हमारे लोक-तंत्र के गाल पर जबर्दस्त तमाचा है।'-हर्ष

(vi) 'परिवार वाले व्याह कर लाई गई लड़की को भरे नौकर की नाभी समझते हैं।'-स्वरूपा

(vii) 'हमारे पिता को अपनी सच्चाई का पुरस्कार मिल गया। पहले अपहरण, फिर हत्या।'-हर्ष

(viii) 'ये राजनेतागण दुमुँहे साँप हैं, जो कभी इधर कभी उधर डँसे जा रहे हैं।'-हर्ष

(ix) 'कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि हमारे देश के हर अंग में कैंसर हो गया है।'-राजरत्न

यह उपन्यास है या सिल्वेसेरियस ग्रैण्डिफलोरा(कैक्टस) का वह नायाब फूल जिसके चारों ओर काँटें भरे रहते हैं ? सिर्फ छियासी पृष्ठों का यह उपन्यास शायद सबसे छोट आकार का यह हिन्दी उपन्यास है जिसने किसी स्थान-विशेष के पृष्ठाधार पर संपूर्ण देश की वर्त्तमान दुरवस्था का मार्मिक चित्र प्रस्तुत कर दिया है। हिन्दी-उपन्यास का यह वामानावतार अपने एक पैर से बिहार को और दूसरे पैर से सारे देश को नाप गया है। किमाश्चर्यं यत: परम्!

बीसवीं सदी का प्रथम चरण हिन्दी-उपन्यास का जुरासिक-युग था जिसमें 'चन्द्रकान्ता-सन्तति' जैसे मौलिक वृहदाकार औपन्यासिक डायनोसोर दिखाई दिए थे। इक्कीसवीं सदी ई-मेल, इंटरनेट और वेबसाइट का युग है। जिंदगी और जमाना आज हवा की गति से चल रहा है। वक्त की कीमत अब मिनटों में सिमट गई है। वक्त के इस सिमटे हुए दायरे में भागती हुई ज़िंदगी में नई प्रेरणा, नई गति और उत्साह भरने के लिए उपन्यास-विधा को अब अपना डायनासोर वाला पुराना रूप छोड़कर मधु-क्षिका का रूप ग्रहण करना होगा। डायनासोर जमीन पर ही चल सकता है। मधु-मक्षिका व्योम-विहारी होती है। उपवन की डाल-डाल पर उड़-उड़ कर फूल-फूल से वह मधु-संचय करती है। उसका अग्र-भाग रस-संचय करता है और पृष्ठ-भाग उसे छेड़नेवालों को डंक मारता है। मधु-मक्षिकाएं मधु-चक्र का निर्माण करती है। सहस्रों कोष्ठ-प्रकोष्ठों में विभाजित मधु-चक्र जीवन की 'अविभक्तं विभक्तेषु' की समग्रता की साकार प्रतिमा है। वह मधु का भण्डार भी है। मधु और जल के मिश्रण से मधु-पर्क बनता है जिसे संजीवन-रस भी कहते हैं। ऐसे मधु पर्क के उपचार से ही हमारे विचार, उग्रवाद, आचार, समाज, राजनीति, पर्यावरण आदि के सारे प्रदूषण धूल जाएंगे और हम प्रभावित स्वरों में अपनी अस्मिता का उद्घोष कर सकेंगे-'मधु वाता ऋतायते मधु सरन्ति सिन्धव:'।

मुझे विश्वास है कि इस शताब्दी के प्रथम वर्ष में प्रकाशित वन्दना वीथिका का यह प्रथम उपन्यास 'स्वरूपा: एक स्मृति' हिन्दी उपन्यास की नई यात्रा का मील-स्तंभ सिद्ध होगा।

संपर्क: नवल किशोर गौड़, पूर्व कुलाधिपति, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर, बिहार

मंगल-कामना के अक्षत

नवल किशोर गौड़

डॉ० दीनानाथ 'शरण' द्वारा प्रस्तुत 'माँ की आत्म-कथा' का मुद्रण-प्रकाशन एक साथ ही एक वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक मंगल-अनुष्ठान है। वैयक्ति इसलिए कि इसके प्रस्तोता, हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० दीनानाथ 'शरण' की हृत्तंत्री में वर्षों से दिवंगत माता जी द्वारा लिखित 'आत्म-कथा' के जो तार झंकृत हो रहे थे उनसे सहसा, उन्हीं के शब्दों में-"एक रात मुझे आत्म-बोध हुआ कि माँ की इस आत्म-कथा का साहित्यिक मूल्य चाहे हो, न हो, इससे आर्थिक लाभ-आर्थिक क्षति ही क्यों न हो-परन्तु इसका प्रकाशन होगा और अवश्य होगा"। यह रचना इस संकल्प की ही परिणति है।

'माँ की आत्म-कथा' पारिवारिक स्मृति-तर्पण का एक मंगल-अनुष्ठान भी है। इसका प्रारंभ डॉ० दीनानाथ 'शरण' द्वारा अपने जीवन-संघर्ष और पारिवारिक संकटों से जूझने में अपनी माँ की महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका के प्रति मार्मिक श्रद्धांजलि-समर्पण के साथ हुआ है। और अन्त पुत्र-वधु शैलजा शरण 'जयमाता', पौत्र शंभु शरण अमिताभ, पौत्रियाँ तनुजा सुभाषिणी और वन्दना 'वीथिका' एवं पौत्र डॉ० कौशल अजिताभ के स्मृति-तर्पण से हुआ है। बीच में मंगल-वेदिका पट' 'माँ की आत्म-कथा' अधिष्ठित है जिसके चतुर्दिक पारिवारिक स्मृति-तर्पण की अगुरु-वर्तिकाएँ धूमामित्र हो रही हैं।

यह रचना एक सामाजिक अनुष्ठान भी है। पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध के बिहारी ग्रामीण एवं नागरिक जीवन और उसका परिवेश इसका पृष्ठाधार है। 'इति+ह+आस (अस्-लिट्) से विपन्न इतिहास का शब्दार्थ है-'ठीक ऐसा ही था।' यह रचना तात्कालिक सामाजिक इतिहास की जीवंत प्रतिभा है।

इतिहास की तथ्यात्मकता, उपन्यास की रोचकता, भाषा की सहज स्वाभाविकता और भाव-व्यंजना की मार्मिकता के 'पत्रं-पुष्पं-फलं-तोयम्' से रस-स्निग्ध 'माँ की आत्म-कथा' का लोकार्पण निस्संदेह अभिनंदनीय है क्योंकि 'स्वान्त: सुखाय' के इस मंगल-दीप में 'लोक-हिताय' का सुखद प्रकाश भी है।

इसके अभिनन्दन में मेरी मंगल-कामना के अक्षत समर्पित हैं।

संपर्क: 19, गोकुल नगर, उदयपुर (राजस्थान)-313001

....पृष्ठ 16 का शेषांश

गलती से यह भारी रेल दुर्घटनाएं हुई होगी। मुझे यह सुनकर दुख एवं काफी झल्लाहट हुई, क्योंकि लेखक प्रारंभ से ही शोषित वर्ग का पक्षधर रहा है। मैंने कहा-यह भी कोई बात हुई। क्या सामान्य श्रेणी के किसी कर्मचारी से कोई गलती नहीं होती या उनसे कभी कोई दुर्घटना नहीं होती, तब तो कोई कुछ नहीं कहता। यदि शोषित वर्ग में से किसी को जल्दी पदोन्नति मिल गई तो कुछ अनुभव की कमी रह जाने के कारण या गलत संकेत दे दिये जाने के कारण से दो रेलें आपस में भिड़ गई तो ऐसा क्या हो गया। अधिक से अधिक 100-200 लोग ही तो मरे हैं। 100 करोड़ की जनसंख्या में 100-200 का कोई महत्व नहीं होता और फिर निपुणता तो अनुभव से ही आती है ना। आज 100-200 मरे हैं, आगे तो कोई नहीं मरेगा, तब तक प्रतीक्षा करने में कोई हर्ज नहीं है।

सार यह है कि सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए हर स्तर पर छोटी-छोटी बातों का रिव्यू होना चाहिये, नीतियां बदलनी चाहिये एवं ऊपर दिये गये सुझावों पर ठोस कार्यवाही होनी चाहिये, तब जाकर हम सामाजिक न्याय की दिशा में एक कदम बढ़ा सकेंगे। इसके अतिरिक्त और भी सुझाव हो सकते हैं किन्तु प्रारम्भ तो किया जाये और प्रारम्भ के लिए विलम्ब नहीं होना चाहिए, तभी सदियों से हो रहे अनवरत् शोषण पर विराम चिन्ह लगेगा। ❖❖❖

संपर्क: बी-16, चोमू हाउस, सी-स्कीम, जयपुर-302001

भारतीय हिंदू-समाज और डॉ० अम्बेडकर

राम चरित्र दास 'अचल'

हमारे देश के अंतर्गत आज जो हिंदू-समाज की स्थिति है, यह आदिकाल में नहीं थी। अभी-समाज हजारों हजार विभिन्न जातियों में बँटकर सर्वथा छिन्न-भिन्न और शक्तिहीन अवस्था में है। हमारी स्वतंत्रता प्राप्ति के पचपन वर्षों के बाद जब यह स्थिति है, तो हम समझ सकते हैं कि सौ वर्ष पहले क्या हालत रही होगी। अभी सभी जातियाँ एक दूसरे की विरोधी हैं। यह हालत न केवल सामाजिक स्तर पर है, बल्कि धार्मिक और राजनीतिक स्तरों पर भी इसकी स्थिति उतनी ही चिंताजनक है। विधानसभा तथा लोकसभा में जाने के लिए जातीय आधार पर उम्मीदवारों का चयन होता है और उनके निर्वाचन के लिए जातीय आधार पर मत भी मांगे जाते हैं।

पर जब हम अपने प्राचीन इतिहास पर नजर डालते हैं, तो हम पाते हैं कि उस समय आर्य-समाज सर्वथा स्वस्थ और जीवंत था। जाति एवं आपसी भेदभाव का नामोनिशान नहीं था। इस संदर्भ में महान इतिहासकार श्री रमेश चन्द्र दत्त द्वारा रचित पुस्तक- 'ए हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन इन एन्सियेंट इण्डिया' के प्रथम-खण्ड, अध्याय-V का अवलोकन करें-

> "The first-thing that strikes us here in the absence of those unhealthy rules and restrictions, those marked distinctions between man to man, and between class to class, which form the most-unpleasant-feature of later. Hindu-society". We have seen too, that the Rishies did not form a separate and exclusive class, and did not pass their lives away from the world in penance and contemplation."

यहाँ सबसे पहले जो बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है, वह है विधि और निषेधों की अनुपस्थिति, जिसके कारण मनुष्य से मनुष्य और एक वर्ग से दूसरे वर्ग में विभेद पैदा होता है, जो बाद में हिंदू-समाज का बहुत ही दुखदायी अंग बन गया। ...... हमने यह भी देखा कि ऋषियों का अलग कोई वर्ग नहीं होता था, और वे संसार से विरक्त होकर तपस्या एवं ध्यान में अपना जीवन व्यतीत करते थे।

श्री दत्त के अनुसार ऋषिगण सर्वथा व्यावहारिक पुरुष थे, उनके पास बहुत बड़ी संख्या में गायें हुआ करती थी; वे कृषि-कार्य को चतुरता एवं निपुणता से संपादित करते थे तथा आवश्यकता पड़ने पर शत्रुओं से आत्मरक्षार्थ

युद्ध भी करते थे। सभी-परिवार के मुखिका ऋषि होते थे और अपने घर में ही अग्निहोत्र करके देवों की पूजा करते थे। अलग से कोई पुरोहित आकर पूजापाठ नहीं करता था। ऋग्वेद के मंत्रों के द्रष्टा ऋषिगण किसी भिन्न जाति के नहीं होते थे। वे सांसारिक जन थे, शादी-विवाह करते थे और सभी सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहते थे। कोई आपसी भेदभाव नहीं था। वर्णों का विचार केवल आर्यो एवं अनार्यो के बीच ही होता था।

हिंदू-समाज की उपर्युक्त स्थिति ईसा के दो हजार वर्ष पहले की है; पर भगवान बुद्ध के समय तक समाज काफी बदल गया था। अनेकों प्रकार की बुराइयाँ ढकोसलापन, दकियानूसी विचारों का बोलबाला हो गया था। धर्म वास्तविक अर्थ में गौण हो गया था और आचार ने उसका स्थान ले लिया था। श्रेष्ठ सामाजिक एवं नैतिक विधि-व्यवस्था को अस्वस्थकर जातीय भेदभाव ने, ब्राह्मणों के लिए विशेष सुविधा-प्रबंध ने तथा शूद्रों के लिए निर्दयी एवं कठोर कानून ने विकृत कर दिया था। ..... शूद्रों के लिए-जो आर्य-धर्म के घेरे में आ गये थे-धार्मिक शिक्षा, किसी धार्मिक कार्यों के आयोजन अथवा सामाजिक सम्मान का कोई स्थान नहीं था। अपने-समुदाय के अंदर सांस तो ले रहे थे, पर घृणित एवं पद दलित थे तथा परिवर्तन के लिए बिसर रहे थे।

इस प्रकार की सामाजिक-व्यवस्था ने भगवान बुद्ध को जन्म दिया था और उनके पदार्पण के साथ ही बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति हुई थी तथा ऐसा परिवर्तन हुआ था, जिसे देखकर दुनिया चकित हो गई थी और बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार संसार के हर कोने में हो गया था। पर समय फिर पलटा, बौद्ध धर्म में कालान्तर में विकृतियाँ आयीं और हिंदू-धर्म का सच्चा रूप तो पीछे ही रहा, उसका आचार, उसका अत्याचार फिर अपने रूप में आ धमका।

हिंदू-समाज में सच्ची धार्मिक भावना समाप्त हो गई; कठमुल्लापन, रूढ़िवादिता, कट्टरता ने अपना स्थान जमा लिया, हजारों हजार जातियाँ, उपजातियाँ बन गई तथा समाज के बहुत बड़ा उपयोगी अंग को अछूत बनाकर पशु-जीवन से भी बदतर जिंदगी जीने के लिए मजबूर कर दिया गया। इसी परिस्थिति ने महामना ज्योतिराव फूले तथा बाद में डॉ० अम्बेडकर को पैदा किया। यह बात नहीं है कि इनके पहले किसी ने भी समाज को इस विषम परिस्थिति से मुक्त करने का प्रयास नहीं किया। हमारे संत महात्माओं ने काफी प्रयास किए; किन्तु उनके

उपदेश जरूर सुने गये उनके भजनों पर हजारों की संख्या में उपस्थित लोगों ने अपने सिर अवश्य डुलाये, पर उनके तत्वों को किसी ने हृदयंगम नहीं किया। इधर सुने गये, उधर उड़ा दिये गये। समाज के दुर्गुण अपने पुराने रूप में ही मौजूद रहे। ऐसा इसलिए होता है कि समाज के सुविधाभोगी लोग इसे बुरा नहीं समझते; क्योंकि उन बुराइयों का आधार धर्मशास्त्रों में निहित है, जिसका विरोध वे नहीं कर सकते। इनको जन्मघुंटी में ही पिला दिया गया है कि ऊँच नीच ईश्वर ने ही पूर्वजन्म के कर्मों को आधार पर बना दिया है। इसे कोई भी बदल नहीं सकता; क्योंकि ऊँच और नीच जातियाँ शास्त्रों के द्वारा रची गई है।

रूढ़िवादी हिंदुओं के मन में दृढ़ता से यह बात बैठी हुई है कि हिंदू-समाज की किसी न किसी प्रकार से जाति के ढाँचे में ढाला गया है और यह एक ऐसी संस्था है, जिसे शास्त्रों के द्वारा रचा गया है। न केवल यह विश्वास अभी अस्तित्व में है; बल्कि इसे इस आधार पर युक्तिसंगत करार दिया जा रहा है और शास्त्र गलत नहीं हो सकता है, इसलिए जाति-प्रथा अच्छा करने के सिवा बुरा कर ही नहीं सकती है। **(डॉ० अम्बेडकर: कास्ट इन इण्डिया)**

इसी विश्वास और रूढ़िवादिता का फल है कि आधुनिक युग में भी भारत में जाति की जड़ें काफी मजबूत हैं और हमारी राजनीतिक पार्टियाँ और उनके नेता इसे खाद और पानी देकर इसकी मजबूती को चट्टान की दृढ़ता प्रदान कर रहे हैं।

जाति-व्यवस्था ने मुठ्ठी भर स्वार्थी लोगों को छोड़कर किसी का लाभ नहीं किया है। हजारों वर्ष तक देश गुलाम रहा तो इसका श्रेय जाति प्रथा को ही जाता है। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी कहानी 'चक्रपाणि' में इसे बड़े की स्पष्ट शब्दों में अंकित किया है:-

''हर्ष को मेरे सौ वर्ष भी नहीं गुजरे थे कि सिंध इस्लाम के शासन में चला गया। बनारस और सोमनाथ (गुजरात) तक के भारत को इस्लामी तलवार का तजुर्बा हो चुका था। इस नये खतरे से बचने के लिए नये तरीके की जरूरत थी; किंतु हिंदू अपने पुराने ढर्रे को छोड़ने के लिए तैयार न थे। सारे देश के लड़ने के लिए तैयार न थे। सारे देश के लड़ने के लिए तैयार होने की जगह वही मुठ्ठी भर राजपूत (पुराने क्षत्रिय तथा शादी-व्याह करके इनमें शामिल हो जानेवाले शक, यवन, गुर्जर आदि) भारत के सैनिक थे, जिन्हें भीतरी दुश्मनों से ही फुर्सत न थी।'' **(राहुल सांकृत्यायन-बोल्गा से गंगा-कहानी-चक्रपाणि)**

इतिहास साक्षी है कि जयचंद ने मुहम्मद गोरी को साथ दिया था और दिल्ली मुसलमानों के हाथ चली गई। जाति प्रथा ने केवल राजपूतों को ही देश की रक्षा का भार दिया था। शेष अन्य जातियाँ निष्क्रिय बनी रही और मुठ्ठी भर राजपूतों के हारने के बाद गुलामी की अटूट जंजीर में फँस गई।

हिंदू-समाज जहाँ एक ओर लोगों को विधि-निषेधों के द्वारा अनुशासित करता है, वहीं दूसरी ओर वर्ण एवं जाति-प्रथा को दृढ़ता प्रदान कर हिन्दुओं के आपसी मेलमिलाप एवं एकता की भावना को विखंडित करता है। शास्त्रों ने हिंदू-समाज को सीढ़ीनुमा ढांचा में कस दिया है। ब्राह्मण सबसे ऊपर की सीढ़ी पर है और दलित अछूत सबसे नीची सीढ़ी पर। बीच की अन्य सभी-जातियाँ एक दूसरे से श्रेष्ठ अथवा नीच हैं। इस प्रकार जातीय श्रेष्ठता के भाव ने सबों को अलग कर दिया और एक दूसरे का विरोधी बना दिया।

प्रश्न है कि ऐसा क्यों हुआ ? इसका सीधा उत्तर है जाति प्रथा के कारण। दरअसल हिंदू-समाज पहले चातुर्वर्ण्य व्यवस्था में बँटा और उसके बाद वर्ण समाप्त हो गये तथा हजारों हजार जातियाँ और उप-जातियाँ बन गई। उन जातियों को मनुस्मृति के द्वारा विभिन्न जातीय व्यवसायों के आधार पर बाँटकर दृढ़ कर दिया गया और कहा गया कि जो भी व्यक्ति दूसरी जाति के व्यवसाय को जीवन-यापन का साधन बनायेगा वह जाति-बहिष्कृत हो जाएगा। इसीलिए राजपूतों के देश रक्षार्थ कार्य में अन्य जाति के लोगों ने कोई सहयोग न किया। अगर करना चाहते तो भी वे ''श्रुति, स्मृति एवं सदाचार'' के विरूद्ध नहीं जा सकते थे। फल हुआ, देश गुलाम हो गया।

हिंदू-समाज जहाँ एक ओर लोगों को विधि-निषेधों के द्वारा अनुशासित करता है, वहीं दूसरी ओर वर्ण एवं जाति-प्रथा को दृढ़ता प्रदान कर हिन्दुओं के आपसी मेलमिलाप एवं एकता की भावना को विखंडित करता है। शास्त्रों ने हिंदू-समाज को सीढ़ीनुमा ढांचा में कस दिया है। ब्राह्मण सबसे ऊपर की सीढ़ी पर है और दलित अछूत सबसे नीची सीढ़ी पर। बीच की अन्य सभी-जातियाँ एक दूसरे से श्रेष्ठ अथवा नीच हैं। इस प्रकार जातीय श्रेष्ठता के भाव ने सबों को अलग कर दिया और एक दूसरे का विरोधी बना दिया। हिन्दुओं का पुराण साक्षी है ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों के बीच जानलेवा संघर्ष का। परशुराम के द्वारा पृथ्वी से इक्कीसवार क्षत्रियों को समूल नष्ट कर दिया गया था। इसकी कथा ब्राह्मणकथा वाचक बहुत ही विस्तार से सुनाते हैं और सभी हिंदू पूरी श्रद्धाभावना से सुनते हैं। जातियों के बीच वैमनष्य का पुराणों को छोड़कर दूसरा क्या साक्षी हो सकता है ?

इसीलिए डॉ० अम्बेडकर ने कहा कि अगर हिंदू एक राष्ट्र बनना चाहता है तो इसे जाति-प्रथा को समाप्त करना होगा और इस कार्य में अगर शास्त्र वाधक है, तो उसे भी तिलांजलि देनी होगी। तभी हिंदू-राष्ट्र संसार में फिर अपना वर्चस्व कायम कर सकेगा, एकता लाकर देश को सर्वथा दृढ़ स्वतंत्रता प्रदान करेगा, अन्यथा जाति-प्रथा के रहते हिंदू जाति का कोई भविष्य नहीं है; क्योंकि जातिप्रथा ने हिन्दुओं की प्रगति में बाधा पहुँचाती है, यह घृणा सिखाती है, इसके कारण संगठन कठिन है, यह सामूहिक भावना की हत्यारिनी है, और मानव-मानव के बीच समानता की विरोधिनी है। इसके कारण हमारे बीच राष्ट्रीय-भावना पनप नहीं सकती है। इस संदर्भ में ''सर हर्बर्ट रिजली, आई.सी.एस.-जो 1901 में भारत की जनगणना के अधीक्षक थे - का निम्न मंतव्य द्रष्टव्य है:-

"So long as a regime of caste persists, it is difficult to see how the sentiments of unity and solidarity can penetrate and inspire all classes of the community, from the highest to the lowest, in the manner that it has done in Japan where, if true caste aver existed, restrictions on inter marriage has long ago disappeared.

(सर हर्बर्ट रिजली, आई.सी.एस. पिपुल ऑफ-इण्डिया-पृष्ठ 293)

(जब तक जाति-प्रथा का शासन बरकरार है, यह परिलक्षित होना कठिन है कि एकता और रूचियों की घनिष्टता की भावना समुदाय के सभी वर्ग, छोटे और बड़ों के बीच किस हद तक प्रवेश करती है और उन्हें अनुप्रेरित करती है, जैसा कि जापान में घटित हुई, जहाँ अगर जातियाँ थीं भी, तो विभिन्न जातियों के बीच अन्तर्जातीय विवाह का विरोध बहुत पहले समाप्त हो गया था)

डॉ० अम्बेडकर ने कहा कि हिंदू-जाति को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए धर्म को उदार बनाना होगा, जहाँ सबों के बीच मित्रता, भाईचारा और समानता स्थापित हो सके। जातीय-अहंकार और कट्टरता को खत्म करके विभिन्न जातियों के बीच रोटी-बेटी का संबंध स्थापित करना होगा जैसा कि जापान, जर्मनी, चीन आदि देशों में हुआ। उन देशों में भी विभिन्न प्रकार की प्रजातियाँ थी, पर सभी मिलकर एक हो गई, सभी जापानी हो गये, सभी जर्मन हो गये, एक जबर्दस्त राष्ट्रवाद पनपा।

डॉ० अम्बेडकर के अनुसार ब्राह्मण-पुरोहित वाद सामुदायिक एकता एवं राष्ट्रीयता के जबर्दस्त विरोधी तत्व हैं। इसका उच्छेद ही कल्याणकारी है। कोई भी व्यक्ति जन्म से पूजापाठ कराने का अधिकारी नहीं हो सकता उसमें वैसी क्षमता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पुरोहित होने के लिए निम्नतम योग्यता निर्धारित हो और राज्य के द्वारा प्रमाण-पत्र दिया जाये कि अमुक व्यक्ति पूजा पाठ करने की अर्हता रखता है। प्रसन्नता की बात है कि हाल ही में माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक निर्णय द्वारा यह तय कर दिया है कि अगर कोई व्यक्ति पूजापाठ एवं कर्मकांड का ज्ञान नहीं रखता है तो केवल जन्म के आधार पर वह पुरोहित नहीं हो सकता। यह निर्णय हिंदू-धर्म के उदारवादी सुधार का पहला कदम है। केरल राज्यान्तर्गत एक मन्दिर में वहाँ के लोगों ने एक अयोग्य पुरोहित को हटाकर एक अर्हता प्राप्त दलित को पुरोहित बनाया था, जिसके विरूद्ध मुकदमा दायर हुआ था। उसी संदर्भ में माननीय उच्चतम न्यायालय का यह निर्णय है।

माननीय उच्चतम न्यायालय का उक्त निर्णय इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इससे सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त होता है। जहाँ परिवर्तन नहीं है, वहाँ ठहराव है, घुटन है, शीलन है; जिसके कारण सब कुछ सड़ने लगता है। हिंदू-समाज अगर जीवंत रहना चाहता है, तो पुरानी सड़ी-गली परम्परा को समाप्त करना होगा, जातिवाद को खत्म करके व्यक्ति की श्रेष्ठता को स्थापित करना होगा। इस संदर्भ में युरोपीय विद्वान मि० बर्के के इन शब्दों को स्मरण रखना आवश्यक है कि-

''जिस राज्य में परिवर्तन शीलता के तत्व नहीं हैं, वह राज्य विरासत को सुरक्षित रखने के साधन से हीन है। परिवर्तनशीलता के तत्व के बिना विरासत के उन बातों की भी सुरक्षा वह नहीं कर सकता, जिसे सुरक्षित रखने के लिए वह हृदय से चाहता था।''

मि० बर्के ने जो कुछ राज्य के लिए कहा वह उसी हद तक एक समाज के लिए भी लागू होता है। डा० अम्बेडकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में उच्चकोटि के देशभक्त और राष्ट्रनिर्माता थे। वे अपने हृदय से हिंदू-समाज की भलाई और हित चाहते थे। इसीलिए उन्होंने इसकी बुराइयों की ओर न केवल संकेत किया; बल्कि एक दक्ष सर्जन की तरह शल्य-चिकित्सा भी करना चाहते थे, पर ऐसा न हुआ। वे कहकर चले गये; किन्तु हिन्दुओं के धार्मिक अंधविश्वास की तंद्रा नहीं टूटी। डॉ० अम्बेडकर के विचार से तभी हिंदू-समाज अपनी रक्षा कर सकेगा, जब उसके बीच से जातिप्रथा समाप्त हो जायेगी। इस प्रकार की आन्तरिक ताकत के बिना हिन्दुओं के लिए स्वराज्य गुलामी की अगली कड़ी ही साबित होगी।'' ❖❖❖

संपर्क: पूर्व उपविकास आयुक्त,
मयूर विहार, खाजपुरा, पटना-14

पूर्वमंत्री श्यामसुंदर बाबू अब हमारे बीच नहीं रहे

विचार संवाददाता, नालंदा

बिहार के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व वित्त राज्यमंत्री श्यामसुन्दर प्रसाद का 82 वर्ष की आयु में विगत 13 जून, 2003 को निधन हो गया। पिछले कुछ समय से वे अस्वस्थ चल रहे थे। स्व० प्रसाद ने 1957 से पाँच बार नालंदा विधान सभा का प्रतिनिधित्व किया तथा महामाया प्रसाद सिन्हा एवं डॉ. जगन्नाथ मिश्र के मुख्यमंत्रित्व काल में वे मंत्री भी रहे।

हमेशा जमीन से जुड़े श्याम सुंदर बाबू आम आदमी की पीड़ा को बखूबी समझते थे और जनसमस्याओं को विधानसभा में उठाने में सदैव सक्रिय रहते थे। यही कारण था कि वे सर्वप्रिय रहे। राजनीति में निंतर गिरावट के बाबजूद उन्होंने अपनी ईमानदार छबि बरकरार रखी और उनके कार्यकलापों ने उन्हें एक विशिष्ट प्रतिष्ठा का हकदार बनाया। श्याम सुन्दर बाबू के देहावसान से नालंदा ने बहुत कुछ खोया है क्योंकि आज की राजनीति में उनके जैसा इंसान नेता बिरले मिलता है। वे एक अच्छे इंसान के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के प्रेमी भी थे। सच को सच और झूठ को झूठ कहने की हिम्मत उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। एक कवि की ये पंक्तियाँ मुझे याद आ रही है -

जिनकी यश-गाथाएँ गायीं,
उन्हें देख आ रही रुलायी,
अब किसको आवाज लगाएँ।

❊❊❊

आतंकवाद का स्वरूप एवं अपराधमुक्ति के उपाय

ज्योतिशंकर चौबे

मानव जीवन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य किसी न किसी रूप में आतंकवाद या आतंक की गतिविधियों के बीच से गुजरा है। जिसमें संपत्ति विनाश के साथ-साथ जन साधारण को अपमान तथा अनेक प्रकार के शोषण का शिकार होना पड़ा है, त्रासदी की शिकार अधिकतर महिलायें और बच्चे जो अभी तक जीवित बच गए हैं। अपने ऊपर वरपे अमानवीय एवं वीभत्स कुकृत्यों के भयावह परिदृश्य से अपने आपको उबार नहीं सके हैं। प्रतिशोध एवं घृणा के परिवेश में उनका जीवन आज भी कुंठित एवं तनाव ग्रस्त परिलक्षित है।

आतंकवाद से निपटने में हमने भी प्रतिशोधात्मक परिवेश में हिंसात्मक कृत्यों को हिंसा से ही दबाने की चेष्टा की है। जिससे हिंसा प्रतिहिंसा का चक्र आज भी अपनी ही गति में गतिमान है। अग्नि से अग्नि के शमन की प्रक्रिया में हवा को हवा देने से तूफान ही का सामना करना पड़ता है। समस्याओं का निदान नहीं हो पाता। इन तथ्यों की अनदेखी से समाज में आज आपसी सद्भाव, विश्वास, आत्मीयता एवं स्नेह में काफी गिरावट आई है। उपस्थित समस्याएं दिनों-दिन जटिल होती गई है।

हमारा वर्तमान मानवीय उत्कट समस्याओं के बीच भ्रमित है। अतीत के गर्भ में आतंकी कहर एवं त्रासदियों को छिपाये लोग आतंकवादी कुकृत्यों एवं कुप्रवृतियों को समूल नष्ट करने की घोषणायें करने लगे हैं। सर्वशक्तिमान देश अमेरिका के गत मात्र बीस-बाईस वर्षों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर यदि दृष्टि डाली जाय तो 1980 में निकारगुआ और ग्वाटेमाला की क्रूरत्तम एवं वीभत्स घटनायें ही सामने आती है। जिसमें इनके द्वारा प्रशिक्षित युवकों ने 30,000 निर्दोष लोगों की हत्यायें कर दी थीं। विश्व के निर्धनतम क्षेत्र हैती तथा सिल्वाडोर होंड्रास, चिली, गाजा, गुआना में भी अमेरिका में अनाधिकार हस्तक्षेप कर कहर ढाये। जिसमें लाखों लोग बेघरवार हुए तथा मारे गए। दक्षिण अफ्रीका का पक्ष लेकर पास के छोटे-छोटे देशों पर सीमावर्ती क्षेत्रों में आतंक फैलाने का आरोप लगाकर अमेरिकी राष्ट्रपति रीगन साहब ने हस्तक्षेप किया। जो पूर्णत: अनाधिकार चेष्टा थी। 1990 में कोलम्बिया में भी इनका हस्तक्षेप आतंकी प्रवृति का ही द्योतक था।

तालिबान जैसे आतंकवादी संगठन के जन्म की पृष्ठभूमि में 1992 में अफगानिस्तान के सर्वमान्य राष्ट्रपति नजीबुल्ला को उनके एक

सहयोगी के साथ देश की राजधानी काबुल के चौराहे पर फाँसी के फंदों से 4 दिनों तक लटकाये रखकर नागरिकों के बीच भय का वातावरण पैदा कर नई शासन व्यवस्था को सक्रिय करने का प्रयास किया गया। जो 1996 में मुल्ला मोहम्मद उमर के नेतृत्व में तालिबान के रूप में उजागर हुआ। और तदनुरूप ओसामा बिन लादेन जैसे कट्टर, मदांध आतंकवादी और उनकी आतंकवादी संस्था अल कायदा का प्रभुत्व बढ़ा जिससे आज विश्व के 72 देश भयाक्रांत एवं प्रभावित हैं। हिरोशिमा और नागासाकी में अमेरिका द्वारा आणविक शक्ति के प्रयोग ने पूरी मानवता को ही हिलाकर रख दिया था। उसके रसायनिक प्रभाव से आज भी वहां विकलांग वंशावली चल रही है। कहा नहीं जा सकता कि भविष्य में कब तक इस त्रासदी से वहां के लोग रू-ब-रू होते रहेंगे। अमेरिका द्वारा अपने वर्चस्व के स्थापनार्थ संगठित, तालिवान के ओसामा बिन लादेन और उनके कुछ सहयोगियों ने 11 सितम्बर 2001 को जब विश्व व्यापार केन्द्र पर आत्मघाती हमला किया तो अतीत के सारे कृत्यों की अनदेखी करते हुए आनन फानन में तालिबान को आतंकवादी संगठन घोषित किया गया और ओसामा बिन लादेन को मुल्ला मोहम्मद उमर के साथ जिन्दा या मुर्दा पकड़ने की घोषणा करते हुए आतंकवाद के समूल नाश के लिए छेड़े गए अभियान में सहयोग देने एवं सहभागी बनने के लिए विश्व के अन्य देशों से अपील जारी की गई।

'हर कुल मुजाहिद्दीन(हम) जमायते अलफकरा-लश्करे तोयबा एवं हिजाबुल मुजाहिदीन जैसे आतंकवादी संगठनों को पोषित एवं संगठित कर भारत में कश्मीर की सीमा पर अघोषित युद्ध छोड़कर घुसपैठिए के रूप में आतंकी कुकृत्यों को गत बीस-बाइस वर्षों से अंजाम देने में सक्रिय रहने वाला देश पाकिस्तान भी आज आतंकवाद के समूल नाश अभियान में सक्रिय सहभागी के रूप में अमेरिका के साथ खड़ा है। जबकि इसके द्वारा पालित पोषित आतंकवादी संगठनों के कृत्यों से भारत को अपने 60,000 नागरिकों एवं 9,000 सैनिक जवानों से इस अवधि में हाथ धोना पड़ा है। वर्तमान साक्ष्य परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में आतंकवाद को पुन: सही रूप में परिभाषित करने एवं उसके आधारभूत तत्वों के सही पहचान एवं खीज की आवश्यकता है।

आंतरिक आकांक्षाओं की पूर्ति अभियान क्रम में अपने पुराने सहयोगी एवं सहभागी मित्र इराक के तानाशाह राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन में

भी आतंकी प्रवृतियां आज अमेरिका को दृष्टिगोचर हुई है। फलस्वरूप 20 मार्च, 2003 को सुबह-सुबह इराक पर इन्होंने भीषण बमबारी शुरू कर दी। और रसायनिक हथियारों को भंडारित करने का आरोप लगाते हुए विधिवत युद्ध छेड़ दिया। विश्व जनमत एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ के द्वारा पारित प्रस्तावों की अनदेखी से एक नई शक्ति प्रदर्शन परम्परा का श्रीगणेश हुआ है, जिससे संयुक्त राष्ट्रसंघ के अस्तित्व एवं प्रभावी भूमिका को गहरी ठेस लगी है। ओसामा बिन लादेन, मुल्ला उमर तथा सद्दाम हुसैन जिन्दा या मुर्दा तो ने देखे जा सके और न पकड़े जा सके तथा रसायनिक हथियारों के भंडारों का इराक युद्ध के दौरान या बाद में अभी तक पता नहीं चल सका। लेकिन इराकी एवं विश्व जनमत के विरोध एवं अविश्वास के बीच मानव अस्तित्व के सम्मुख कुछ प्रश्न अवश्य अवतरित हुए हैं। तीसरे अभियान में कौन देश इनके निशान पर होगा। जैसी चर्चायें सार्वजनिक स्थानों, गली-कूचों, सड़कों, क्लबों में चर्चित है। भय और त्रासदी के बीच मानव जीवन कुण्ठित एवं तनाव ग्रस्त हैं। ''मत्स्य न्याय की मान्यता मानव जीवन परिवेश में आज साकार हुई है। शक्ति और प्रभुता सम्पन्न देशों के बीच अन्य देशों के अस्तित्व के सम्मुख प्रश्न चिन्ह लग चुका है। काश्मीर की विधान सभा पर। अक्टूबर 2001 एवं देश की राजधानी दिल्ली में भारतीय संसद पर 13 दिसम्बर के आत्मघाती हमलों ने भारत जैसे उदारवादी देश को भी तनाव पूर्ण वातावरण में जीने को विवश कर दिया है। 30 मार्च 2002 को जम्मू के रघुनाथ मंदिर पर हमला, 15 जून, 29 जूलाई, 30 जूलाई एवं 6 अगस्त को अमरनाथ तीर्थ यात्रियों पर डोडा, अनंतनाग और पहलगाम में हमलाकर 22 यात्रियों की हत्यायें 55 यात्रियों को घायल करने की घटनाओं ने भारत को नये सिरे से कारगर रूप में परिस्थितियों से निपटने के लिए सोचने पर विवश किया है। 24 दिसम्बर 2002 को अक्षरधाम मंदिर, गांधीनगर, गुजरात एवं पश्चिम बंगाल, काश्मीर विधानसभा तथा भारतीय संसद पर आत्मघाती हमलों के परिप्रेक्ष्य में पाकिस्तान ने हमारी सर्वभौमिकता एवं लोकतंत्रात्मक व्यवस्था को चुनौती दी है। लेकिन गोलियों, बमों का जवाब गोलियों और बम नहीं हुआ करते। हमारी यह मान्यता सदा से रहती आई है। उनके माध्यम से शांति की स्थापना नहीं की जा सकती। समस्याओं का समाधान भी इनके द्वारा संभव नहीं है। इसलिए अपने अंतर्विरोधों के बावजूद भी आपसी बातचीत एवं सद्भाव के दरवाजों को भारत ने सदा से खुला रखा है। हमारे यहां विद्वान साहित्यकारों ने भी आधुनिक विनाशकारी हथियारों के नकारात्मक पक्ष को न देखकर सकारात्मक रूप को ही देखने का प्रया किया है। सुमित्रानंदन पंत की इन पंक्तियों में ''अणु युग बन धरा-जीवन हित। स्वर्ण सृजन का साधन।

> **आतंकवाद पूर्ण रूप से प्रतिशोध, घृणा, अलगाववादी प्रवृति, एवं सांप्रदायिक मानसिक उन्माद, जातीय एवं वर्गीय वर्चस्व के अवसाद की अवधारणाओं पर आधारित हुआ करता है।**

मानवता ही विश्व सत्य। भू राष्ट्र करें आत्मार्पण। में हमारी चैतन्यता एवं भावों का स्पष्ट रूप परिदर्शित है। आज की समस्याओं के समाधान में तटस्था भी अभिशाप तथा अपराधबोध की द्योतक है। भारत ने अपनी समरनीतियों एवं आचरण की व्याख्या को व्यवहारिक रूप देने का प्रयास किया है। कर्म प्रधान जीवन क्षेत्र में 'समरक्षेत्र है नहीं' पाप का पापी केवल ब्याध। जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी अपराध। की मान्यता को ही प्रतीकात्मक रूप दिया है। लेकिन इराकी युद्ध के दौरान विश्व के अन्य देशों ने सहानुभूति के कुछ शब्दों से सहभागिता दर्शाने के अलावा अपनी तटस्था को ही प्रमुखता दी है। जिससे कुप्रवृतियों, शक्ति मदांधता और निजी आकांक्षाओं को ही बढ़ावा मिला है।

आतंकवाद पूर्ण रूप से प्रतिशोध, घृणा, अलगाववादी प्रवृति, एवं सांप्रदायिक मानसिक उन्माद, जातीय एवं वर्गीय वर्चस्व के अवसाद की अवधारणाओं पर आधारित हुआ करता है। देशवासियों ने बाबरी मस्जिद-अयोध्या मंदिर विवाद, गोधरा कांड और हिन्दुत्व-गैर हिन्दुत्व की अवधारणाओं के परिपेक्ष्य में निकृष्ट कृत्यों के फलस्वरूप हिंसा, प्रतिहिंसा के परिवेश में प्रतिशोधात्मक अमानवीय क्रूर घटनाओं के परिदृश्य को देखा है। सजीवता की खोज निर्जीव के बीच करने में कुप्रवृतियों के आगोश में बैठे अमानवीय वीभत्स रूप को निकट से देखा तथा पहचाना है। नकारात्मक पहचान के आलोक में सकारात्मक एवं मौलिक पहचान को विलुप्त होते हुए भी देखा है।

ह्दय परिवर्तन एवं सोच को पारदर्शी एवं विमल विवेक पूर्ण बनाकर धार्मिक मान्यताओं को मानवीय स्वाभाविक, आस्थायुक्त आचरण एवं आपसी सद्भावना तथा सहिष्णुता के परिवेश में वैचारिक क्रांति के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है। निर्जीव आवरण में सद्भाव, करुणा, स्नेह, आत्मीयता का परिदर्शन संभव नहीं है। विनाशकारी कृत्यों की संभावित एवं व्यवहारिक रूप का ही अवलोकन हो सकता है। चैतन्यता, विमल विवेक का उद्भव हृदय स्पन्दन एवं मानसिक तंतुओं के मर्मस्पर्षो के द्वारा ही संभव है। कोई व्यक्ति जन्म से बुरा नहीं होता। उसके अन्दर कहीं न कही देवत्व छिपा एवं सुसुप्त होता है। उसे जागृत करने की आवश्यकता होती है। ऐसा यदि नहीं होता तो रत्नाकर डाकू बाल्मीकि कैसे? बन जाते। दम्भी विश्वामित्र महर्षि विश्वामित्र कैसे हो जाते। अंगुलीमाल डाकू गौतम बुद्ध के सानिध्य से एक आदर्श बौद्ध भिक्षु कैसे परिवर्तित हो जाते। आजामिल आदि कई के विकृत मानसिक सोच में मनिषियों के सानिध्य एवं सदगुणों के प्रभाव से जीवन शैली परिवर्तित होती आई है।

हमें धैर्यपूर्वक अध्ययन के साथ-साथ उपस्थित समस्याओं के परिपेक्ष्य एवं वर्तमान स्वरूप के परिवेश का चिंतन करना चाहिए। गांधी के देश में गांधी की अवधारणाओं को प्रति स्थापित करने का प्रयास करना समय की मांग है। समस्याओं के निदान की सही एवं स्थाई परिणिति इसी माध्यम से संभव होगी। साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की सक्रियता एवं उसका शक्ति संवर्धन स्वरूप आज की समस्याओं के निदान में प्रभावी एवं समर्थ सहायक हो सकता है।

संपर्क: एम.आई.जी.-83,
हनुमान नगर, पटना-800020

भारतीय संस्कृति का बिगड़ता स्वरूप

सिद्धेश्वर

भारत एक आधुनिक विकासशील देश है। भारत का संविधान इस सच्चाई को मानता है कि भारत राष्ट्र एक भौगोलिक प्रभुत्ता सम्पन्न जनतांत्रिक देश है, जिसमें कई धर्मों के अनुयायी, कई भाषाओं के बोलनेवाले, कई संस्कृतियों को माननेवाले, विभिन्न रीति-रिवाजों को निभाने वाले लोग समान अधिकार से रहते हैं और उन्हें अधिकारों से धर्म, जाति क्षेत्र या भाषा के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। यही इस विशाल भारत का वास्तविक स्वरूप है।

एक अरब पाँच करोड़ की आबादीवाले इस विशाल भारत में छह बड़े धर्मों के अनुयायी, सैंकड़ों संप्रदायों, अठारह मुख्य भाषाएं और हजारों जातियों-उपजातियों के लोग रहते हैं और हजारों वर्षों से रहते आए हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों की वेशभूषा, खानपान, व्यवहार व आचरण, लोकगीत व लोकनृत्य, त्यौहार अलग-अलग हैं। विभिन्न देशों से कई नस्लों के लोग यहाँ के उत्तरी-पूर्वी राज्यों नगालैंड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश आदि में आकर शताब्दियों से बस गए और भारत के नागरिक हो गए। वे सब आधुनिक भारत के भौगोलिक क्षेत्र में कई विचारधाराओं, धर्मों, भाषाओं, रीति-रिवाजों एंव अपनी-अपनी जीवन शैली में विश्वास करते हैं। भारत में 6-7 करोड़ आदिवासी कबिले हैं जिनके अपने देवी-देवता, त्योहार, अपनी शैली है और प्रकृति से उनका अटूट रिश्ता है। वे सभी राष्ट्र के अभिन्न अंग है। भारत जैसे बहुधर्मी, बहुभाषी, बहुनस्लीय और बहुक्षेत्रीय विभिन्नता वाले देश का एक विशिष्ट संस्कृति विकसित हुई है जो धर्म पर नहीं बल्कि विभिन्नता में एकता, सहृदयता, सभी धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों में समन्वय और सामंजस्य पर आधारित है।

आधुनिक राष्ट्र का निर्माण अकेले संस्कृतिक आधार पर नहीं होता अन्यथा धर्म के नाम बना पाकिस्तान दो टूकड़ों में कैसे बँट गया। ऐसी स्थिति में जबतक हम भारत राष्ट्र के सत्य और उसके वास्तविक प्राणत्व को स्वीकार नहीं करेंगे तबतक सबल राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। आज की दिग्भ्रमित राजनीति धर्म-संप्रदाय में उलझी हुई है उससे न तो हमारी समस्या का समाधान निकल पा रहा है और न ही देश व समाज को सुरक्षा मिल रही है। शक्ति सम्पन्न और समर्थ होने के लिए हमें अपने भ्रम को दूर करना होगा।

आज भारतीय संस्कृति का आलम यह है कि सिने जगत तथा 'फैशन शो' में अंग प्रदर्शन का दौर प्रारंभ हो गया है। आज की अभिनेत्रियाँ सुपर एक्ट्रेस बनने की होड़ में छिलकों की तरह कपड़े उतार रही हैं और कपड़ों की तरह बॉयफ्रेंड बदल रही हैं। कम से कम हाल में रिलीज 'जिस्म' फिल्म में बिपाशा बसु को देखकर तो यही लगता है। दूसरी ओर युवा पीढ़ी में जो चौंकानेवाले अनैतिक संबंध हो रहे हैं, वह किस मूल्य के द्योतक हैं। उन्हें ये मूल्य हम घुट्टी में पिला रहे हैं। भारतीय समाज बड़ी तेजी से अमेरिका और फ्रांस के समकक्ष होता जा रहा है। हाँलाकि हमारा समाज अभी यह बोझ-उठाने को तैयार नहीं है। यहाँ आधुनिकता और परंपरा के बीच इतनी सीढ़ियां हैं कि एक किशोर जोड़ा प्रेम के अपराध में गांव की चौपाल पर गँड़ासे से काट दिया जाता है। निश्चित रूप से आज यहाँ एक संवेदनशील और भोगवादी पीढ़ी विकसित हो रही है जिसे सुधारने का कोई मैकेनिज्म विकसित करने का प्रयास नहीं हो पा रहा है। सच तो यह है कि अति उपभोक्तावादी संस्कृति अति उपभोग की द्योतक है। इस संस्कृति के अंधानुकरण के दुष्परिणाम हम आज विभिन्न क्षेत्रों में भुगत रहे हैं। समाज के नैतिक पतन में भी इस कुसंस्कृति का बहुत बड़ा हाथ है। अति उपभोक्तावादी संस्कृति के विरूद्ध गाँधी जी के पर्यावरण एवं विकास संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है किंतु उस पर अमल करने की यहाँ किसे फूर्सत?

विज्ञापनवाद भी हमारी संस्कृति को प्रदूषित कर रहा है। यहाँ आज हर कोई विज्ञापन के माध्यम से बेचा जा रहा है। चाहे वह खिलाड़ी हो या अभिनेत्री, नौजवान हो या बच्चे। विज्ञापन बनकर मैदान में उतरना अपना परम सौभाग्य समझते हैं। विज्ञापन-उद्योग नई पीढ़ी को सर्जनात्मकता की ओर न ले जाकर उपभोक्ता बनने की और संसार को भोग-उपभोग का मेला मानने की सीख दे रहा है। सबसे चिंता की बात तो यह है कि मुक्त मंडी का मीडिया व्यक्ति और विचारों को भी विज्ञापनबाजी के हथकंडों से बेच रहा है। प्रचार की इस बाढ़ में आम जन का विवेक डूबता चला जा रहा है जो मानवतावादी विवेक शील लोकतंत्र के भविष्य के लिए खतरे का संकेत है।

विज्ञापनों और समाचार पत्रों में आज जो तस्वीरें प्रकाशित की जा रही हैं और उनके शीर्षकों में जिस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है वह हमारी भारतीय संस्कृति की शालीनता

को ठेस पहुँचा रही है। पिछले दिनों अखबारों में चित्र सहित एक खबर प्रकाशित की गयी-'परफ्यूम के लिए निर्वस्त्र हुई सोफी ने पहना स्वेटर'। इस शीर्षक से यह सहज अंदाज लगाया जा सकता है कि स्वेटर के विज्ञापन वाली यह मॉडल, कभी परफ्यूम के विज्ञापन के लिए निर्वस्त्र हुई थी। विज्ञापन ही नहीं बल्कि समाचारों, विचारों, शीर्षकों और तस्वीरों के प्रकाशन तक में आज जिस प्रकार औरतों के प्रति अवांछित और लिंग भेदी भाषा का प्रयोग किया जाता है उससे हमारे युवाओं में सर्वाधिक उत्तेजना फैलती है जिसका दुष्परिणाम समाज के लोगों को भोगना पड़ता है। कुछ पत्र-पत्रिकाओं में तो प्राय: दिन अपने प्रत्येक अंक के आवरण अथवा भीतरी पृष्ठों में फैशन मॉडलों, फिल्मी अभिनेत्रियों, नायिकाओं, सुंदरियों या खिलाड़ियों के नग्न-अर्द्धनग्न रंगीन तस्वीरें अनिवार्य रूप से प्रकाशित किए जाते हैं। सिनेमा से समाचार पत्रों तक में महिलाओं के सेक्सीकरण से किशोरों में सेक्स के प्रति आकर्षण भी बढ़ रहा है और आपराधिक प्रवृतियाँ भी। आँकड़ें बताते हैं कि चालीस प्रतिशत किशोर अपराधी यौन अपराधों के दोषी हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में सरेआम छात्रा से बलात्कार, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज की छात्रा से दिन-दहाड़े मुख्य सड़क के किनारे किशोरों द्वारा बलात्कार, भाई-बहन द्वारा माँ की हत्या, तीन स्कूली छात्रों द्वारा सहपाठी छात्रा की हत्या और लाश को पेट्रोल छिड़क कर जलाना, क्या इन यौन छवियों का दुष्परिणाम नहीं ? क्या इससे हमारी संस्कृति पर आँच नहीं आती?

हमारी संस्कृति का यूँ ही पाश्चात्यीकरण। जारी रहा तो 'बिन फेरे हम तेरे' जीवन शैली वाला सहज और बंधनमुक्त रिश्ता भारतीय संस्कृति के लिए एक खतरनाक संकेत होगा। हम पर हावी होती पश्चिमी सभ्यता, सार्वजनिक स्थल व सड़क पर दिखते अश्लील फिल्मों के पोस्टर तथा केबुल पर लगातार दिखाई जा रही अश्लील फिल्में और फैशन शो का सीधा असर हमारी नयी पीढ़ी पर पड़ रहा है। बाजारों में खुलेआम बिकती अश्लील पुस्तकें आज की युवा पीढ़ी के जीवन को अंधकार की ओर ढकेल रही है। आजादी के नाम पर समाज में हो रहे भौड़े प्रदर्शन की वजह से हमारा नैतिक आचरण प्रभावित होता जा रहा है। इसलिए आज जरूरत है पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध से बचने की अन्यथा हमारी संस्कृति का विलुप्त होने में देर नहीं लगेगी और पश्चिमी सभ्यता की गंदगी हम पर हावी हो जाएगी।

हमारी संस्कृति का यूँ ही पाश्चात्यीकरण जारी रहा तो 'बिन फेरे हम तेरे' जीवन शैली वाला सहज और बंधनमुक्त रिश्ता भारतीय संस्कृति के लिए एक खतरनाक संकेत होगा।

आज जब बौद्धिक पूँजी की मान्यता बढ़ रही है, हमारी प्रतिभा पलायन कर रही है। मस्तिष्क की गुणवत्ता भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति से मिली है। भारत में शिक्षा, प्रशिक्षण और बौद्धिक दक्षता तथा अध्ययन, चिंतन, मनन की हजारों साल की बहुआयामी परंपरा रही है। आधुनिकता, बेशक एक सच्चाई है, किंतु आधुनिकता का आतंक कभी ठीक नहीं होता। अतीत से कटी आधुनिक सोच दरअसल इस्लामी आक्रामकता और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के षड्यंत्रों का परिणाम है।

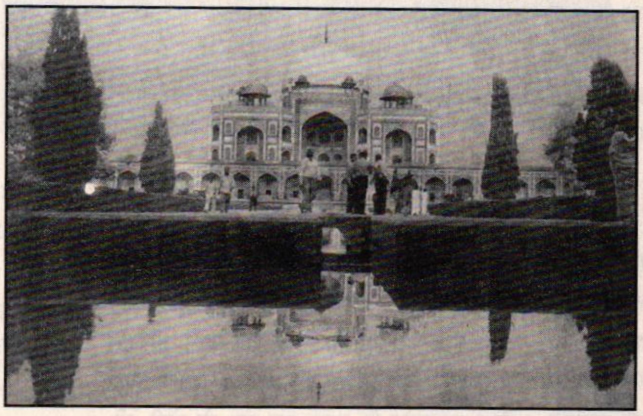

आज संसार की हर संस्कृति और सभ्यता अर्थ प्रधान जीवन दर्शन की पक्षधर है। भौतिकवाद की ओर तेजी से बढ़ती लिप्सा से आज एक ऐसी उपभोक्ता प्रधान संस्कृति का जन्म हुआ है, जिसमें मानव मात्र, एक यंत्र बनकर रह गया है। इस भौतिकवादी संस्कृति में मानवतावादी एवं नैतिक मूल्यों का जैसा ह्रास हुआ है और राष्ट्र स्तर पर जिस प्रकार स्वार्थवाद और भोगवाद बढ़ा है, उसके दुष्परिणाम आज सामने है। इस भोगवाद में स्वयं की संतुष्टि ही प्रधान है, जबकि सच तो यह है कि इंद्रियों की भूख को कभी भी कोई शांत नहीं कर सका।

इधर पिछले कई वर्षों में इस देश के हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन तथा बौद्ध धर्मों में स्पर्धा का भाव बढ़ा है। लोकतांत्रिकता और स्वतंत्रता के पक्षधर समाज के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक प्रकार की कट्टरता और संकीर्णता को बहस और समीक्षा के दायरे में लाया जाए। धर्मांध समय में धर्मनिरपेक्ष बने रहना, धर्मनिरपेक्ष समीक्षा का विकास करना चुनौती भरा काम है। खासकर जिस वक्त हिन्दुत्ववादी तत्व पंथनिरपेक्ष विचार को ही समुद्र में फेंक देने का ऐलान कर रहे हैं। उस समय सेकुलर विमर्श को बनाए-बचाए रखना बड़ी बात है।

गोधरा और गुजरात की घटनाओं के बाद भारत की संवेदनशील जनता, यातना में रही है। हिंदी के साहित्यकारों और पाठकों के दिल दिमाग गुजरात के बाद कई सवालों से टकराते हैं और वे चुप नहीं रहना चाहता है और उन्हें चुप नहीं रहना चाहिए। साहित्य-संस्कृति में सेकूलर विमर्श के अनगिनत चिन्हों को लगाता रेखांकित किया जाना चाहिए। नववर्ष के अवसर पर विभिन्न टी.वी. चैनलों पर तथा महानगरों के बड़े-बड़े होटलों में धूम्रपान व सूरापान करती लड़कियां एवं अर्द्धनग्न अवस्था में चल रही डांस पार्टियां क्या यह नहीं दर्शाती हैं कि हजारों वर्ष प्राचीन हम अपनी गौरवमयी संस्कृति को छोड़कर फूहड़ता भरी पश्चिमी संस्कृति का अपनाते जा रहे हैं? क्या इससे हमारी हस्ती कायम रह पाएगी ?

❖❖❖

''हिंदीप्रेमी-शो''

डॉ० शाहिद जमील

प्रेम की तीन अवस्थाएँ होती हैं। प्रथम: प्रेमी, प्रेम-प्रदर्शन करता, फिर उसे छुपाता और अन्तत: मौन धारण कर लेता है। इश्क में, खामोशी तवील होकर जब जुनून की सरहद में दाखिल हो जाती है तब हुस्न का मारा आशिक़ बेचारा मजनूँ बन जाता है और लैला अपने आशि़क के लिए लोकलाज को खूंटी पर टांग कर खुलेआम गिड़गिड़ा कर इल्तिजा करने लगती है-

''कोई पत्थर से न मारे मेरे दीवाने को''

देश की आज़ादी की अर्द्धसती बीत चुकी परन्तु हिंदी-प्रेम, अभी प्रदर्शन-अवस्था में है। रूपसी हिंदी को आज भी तुर्की के मुस्तफा कमाल पाशा जैसे दृढ़संकल्पी भाषा-प्रेमी शासक की तलाश है।

बात बहुत पुरानी नहीं, बल्कि विगत वर्ष की है। ---- मौसम हिंदी-दिवस के उपलक्ष में समारोह के आयोजन अर्थात् हिंदी-दिवस/हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी मास मनाने का था। ''सुपर हिंदी-प्रेमी'' कहलाने की लिप्सा में अधिकांश लोग गिरफ्तार थे।

''समय'' बार-बार समय नहीं देता। इसी आलोक में कतिपय समाचार-पत्रों के संपादकों ने देखने-सुनने में हिंदी-प्रेमी से लगते पत्रकारों का एक दल गठित किया। नवगठित दल को विशेष तौर पर यह निदेश दिया गया कि गठबंधन सरकार की तरह आपसी मतभेदों को स्थगित रखकर निर्धारित अवधि में अपना मिशन पूरा करने की कोशिश करें। वर्षों पूर्व प्रकाशित हिंदी-प्रेम से चपाचप और चाट-चनाचूर की तरह चटपटे लेख-आलेख, कविताएँ एवं भालू के नाखुन से नुकीले कार्टून्स और मान्यता प्राप्त ''महान हिंदी-प्रेमी'' व्यक्तित्व के वक्तव्यों के अंश की तलाश में उसी तरह लग जाएं जिस तरह सोना-गली की नाली से स्वर्ण-कण निकाले जाते हैं। मेहनत-मशक्कत और पसीने बहा कर हालिस किए गए स्वर्ण-कण सोनार के नहीं रह जाते। ठीक उसी तरह प्रकाशित रचना का स्वामित्व-सर्वाधिकार भी नैतिकता के वृत में ''C'' के रूप में मात्र अंकित रह जाता है। सद्य: प्रकाशित शब्द कोशों में नैतिकता का एक अर्थ ''मूर्खता'' भी है। ''पढ़े-लिखे बड़े लोग'' मूर्ख नहीं होते कि छोटी-मामूली बातों पर तुरत ''नैतिक जिम्मेदारी'' स्वीकार कर ''महामूर्ख'' बने और कहलाएं। ''आत्मबोध'' और ''जमीर की आवाज सुनाई पड़ने'' की

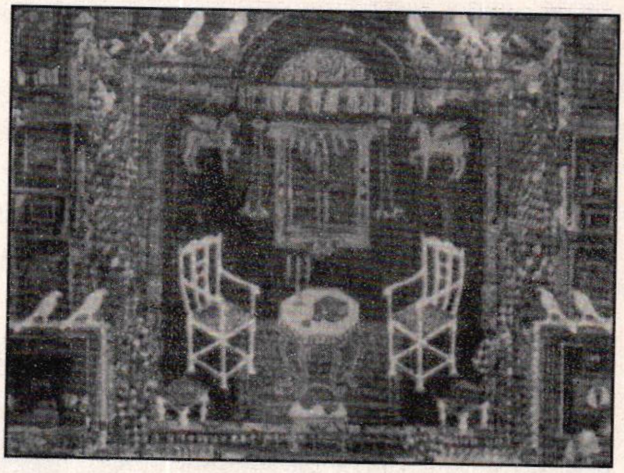

बीमारी अधिकतर पुराने लोगों-राजनेताओं आदि में थी, जो बिना किसी के सुझाए-ललकारे स्वत: ''नैतिक जिम्मेदारी'' स्वीकार कर सुख-सत्ता की कुर्सी से दामन झाड़कर उठ खड़े होते थे। टी.बी. रोगी की तरह ही इस ''बीमारी'' को अभियान चला कर देश निकाला दिया जा चुका है। परन्तु इस रोग के रोगी, टी. बी. रोग की तरह आज भी कहीं न कहीं मिल ही जाते हैं। नये ज़माने के लोगों को पुराने लोगों, पुरानी बातों और प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति से क्या लेना-देना-अगर हेरा-फेरी की छूट इतनी भी न मिले तो पाने-खोने और हंसने-रोने का सुख-दु:ख कैसे प्राप्त होगा? ''यूज एण्ड थ्रो'', ''डिस्काउन्ट'' और दुपट्टामुक्त-छातियों की तरह लुभाते नये-नये ''आकर्षक स्कीमस'' की सुविधावाले वर्तमान युग में ऐसा संभव है कि ''हल्दी लगे न फिटकरी रंग आए चोखा'', ''शोध-पत्र एक, डाक्टर बने अनेक'' तथा ''जाँच-परीक्षा दे कोई और नौकरी करे बेटा/बेटी/भाई/जमाई''। . .... नवगठित पत्रकार-दल ने धैर्यपूर्वक और कान खोल कर संपादक महोदय की ज्ञान-चक्षु खोल देनेवाली बातों को सुना और मन ही मन सोचा ''किसी भी पत्र-पत्रिका के संपादक को इतना ''ज्ञानी'' तो होना ही चाहिए।'' फिर वे चापलूस और पेयिंग-टेबुल के सरकारी मुलाज़िम की तरह इफ्-बट् किए बिना आवंटित कार्यों को संपन्न करने में लग गए।

प्रत्येक वर्ष गाँधी जयंती क बहाने कपड़ों पर डिस्काउंट रेट बढ़ाकर जाम स्टॉक से कुछ माल निकाल ही लिया जाता है। इसी नुस्खे पर अमल करते हुए हिंदी के एक प्रोफेसर साहब ने बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा को करारा झटका देने के उद्देश्य से ''हिंदी-दिवस'' के पावन अवसर पर शोध-पत्र लेखन की ''फिक्स रेट'' से दो हजार रुपये इस शर्त के साथ घटा दी-

''तीन थेसिस की लिखाई एकमुश्त जमा कराने पर चार आकर्षक ऑफर – 1. एक थेसीस मुफ्त लिखी जाएगी। 2. स्थानीय चिड़ियाँ घर में एक दिन जानवरों को छेड़ने की अनुमति के साथ नौका-सैर। 3. होटल 'दिवा स्वप्न-लोक' में बिना बिल चुकाए प्रेयसी/पत्नी/दो बच्चे सहित वन टाईम डट कर चाईनिज-डिश उड़ाने और बारातियों की तरह विदेशी-पेय और आईसक्रीम पर हाथ साफ करने की पूरी छूट। 4. पंजीकृत एक छात्र/छात्रा के संग एक अंग्रेजी/एडल्ट फिल्म देखने का सुनहला अवसर।'' अन्त में यह चेतावनी भी दर्ज थी कि ''यह डिस्काउन्ट मात्र 14 से 30 सितम्बर तक प्रभावी होगा। जल्दी कीजिए। इस भुलावे में हरगिज़ न पड़ें कि डिस्काउन्ट की तिथि पेट्रोल की कीमत की तरह बार-बार

बढ़ाई जाती रहेगी।'' प्रथम पृष्ठ पर बॉक्स में प्रकाशित इस विज्ञापन को पढ़ कर निकले एक पड़ोसी ने मछली बाजार में ही प्रोफेसर साहब से स्कूल मास्टर की तरह पूछा– ''प्रोफेसर साहब ! अनैतिक धंधे को खुलेआम डंके की चोट पर करते हुए आपको ज़रा भी शर्म नहीं आती।'' प्रोफेसर साहब ने पहले तो उन्हें एक मिनट तक खूब घूर कर देखा, फिर तैवरी पर कुछ ज़्यादा ही बल चढ़ाकर व्यंग्य और फटकार मिश्रित टोन में बोले–

''जय श्री राम ! वाह भाई वाह ! न दुआ न सलाम। लगता है श्रीमान् भारतीय सभ्यता-संस्कृति को घर पर ही छोड़ कर निकल पड़े हैं। ''नैतिकता'' जैसे घातक और लाइलाज रोग के शिकार तो नहीं ? ''एड्स रोगी'' के साथ घुमना-फिरना, साथ खाना-पीना और उसे छूना-चूमना भी वर्जित नहीं है, परन्तु नैतिकता-रोग से ग्रसित लोगों से तो दूर का संपर्क भी बड़ा ही घातक होता है। सेवा में शर्म कैसी? मेहनत के पैसे लेखता हूँ। नौकरी का झांसा देकर बेरोज़गारों को लूटता नहीं। आप जैसे लोग ही पारदर्शिता के लुप्त होने का रोना रोते हैं और पारदर्शी कार्यों पर भी उंगलियाँ उठाते हैं। स्पष्ट है आप इसे हिंदी भाषा की सेवा नहीं मानते, परन्तु मैं तो इसे हिंदी-सेवा के साथ-साथ समाज-सेवा भी मानता हूँ। इच्छुक व्यक्ति और मित्रमंडली के व्यक्तित्व-कृतित्व पर भला कौन बेवकूफ शोध करता-कराता है? वह तो मुझ जैसे लोग शेष रह गए हैं, जो सेवाभाव से उन्हें एडजस्ट कर लेते हैं। हिंदी भाषा में पीएच.डी. करना-कराना हिंदी-सोवा नहीं ? अब आप ही बताइए उतने ही ख़र्च में अगर अंग्रेज़ी या अन्य भाषा में भी पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की जा सकती है, तो कौन मूर्ख हिंदी-उर्दू में प्राप्त करेगा पी.एच.डी. की डिग्री। जब आप आसानी से बन सकते हैं एम.बी.बी. एस. तो वैद्य-हकीम या घोड़ा-डॉक्टर बनना और कहलाना पसंद करेंगे ?''

''एज पार्ट-टाईम जॉब, अगर चाहें तो, 10% कमीशन पर आप भी ''कलाईन्ट'' सप्लाई कर सकते हैं।'' पड़ोसी कुछ देर तक खड़ा अपनी अंगुलियाँ तोड़ता रहा, फिर बिना दुआ-सलाम आगे बढ़ कर सड़ी-गली मछलियों को भाव-मोल करते हुए, उंगली से दबा-दबा कर फ़िज़ा में फैली हुई बदबू को और बढ़ाने लगा। प्यादे से शह को मात देने वाले शतरंज-खिलाड़ी की तरह प्रोफेसर साहब चेहरे पर विजय मुस्कान बिखेड़ते हुए ''भीड़'' में भीड़ का हिस्सा बन गए।

पत्रिका के संपादकगण भी तो खुद को पत्रकारमूल के ही मानते हैं, फिर वे किसी से पीछे क्यों रह जाते, जबकि कृतिमान स्थापित करने के लिए, दो-चार क़दम आगे ही बढ़ना

पड़ता है। इसी आलोक में विशुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं के कुछ संपादकें ने तो पूर्व ही ''हिंदी भाषा-सेवी विशेषांक'', ''हिंदी ' विश्व-सम्पर्क की भाषा'' और ''विदेश में हिंदी'' आदि विषयक विशेषांक निकालने की बाक़ायदा घोषणा कर रखी थी। एजेन्टों से अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लेने का अनुरोध लगातार छाप रहे थे। ''लेखकों की तस्वीर और संक्षिप्त जीवन-वृत मल्टी-कलर में प्रकाशित की जाएगी। कृति के साथ फोटो, एक हजार शब्दों पर आधारित जीवन-वृत और मात्र सौ रुपये का क्रॉस पोस्टल आर्डर संलग्न करना न भूलें'' यह ''विशेषांक'' मुफ्त उपलब्ध कराई जाएगी। मात्र पाँच सौ रुपये की ''सहयोग-राशि'' पहली फ़ुरसत में उपलब्ध कराकर ''मुफ्त-वितरण योजना'' का लाभ उठाएं।''

पुस्तकालय में इस विज्ञापन को पढ़कर एक पाठक ने गुस्से में पत्रिका को टेबुल पर उछालते हुए कुछ ज़ोर से बुदबुदाया– ''हिंदी-सेवा या विशुद्ध व्यवसाय। राम-राम कुछ समझ में नहीं आता, देश किधर जा रहा है। विदेशी व्यवसायी कंपनियों ने तो .....''

रेल गाड़ियां भले ही समय की पाबन्द न हों, परन्तु "विभागीय कर्मी" इस मामले में बड़े ही सक्रिय, मुस्तैद और मात्र हिंदीप्रेमी ही नहीं बल्कि उनकी याददाश्त भी चुस्त-दुरूस्त है, तभी तो 14 सितम्बर से पहले ही रेलवे स्टेशनों पर पूर्व-लिखे हिंदी के गुण-गान वाले सलोगनों को नये रंगों से चमका दिया जाता है, जिन्हें गैर हिंदीभाषी यात्री भी उस वक्त पढ़ ही लेते हैं, जब उनकी गाड़ी स्टेशन पर बहुत देर तक खड़ी रह कर उन्हें उकता देती है।

बैंकों के प्रबंधक, बड़े "हिंदीप्रेमी" होते हैं, तभी तो बैंकों के पीकदानों के निकट भी (जहां आज कल देवी-देवताओं के लिए स्थान सुरक्षित है और धार्मिक एकता को फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया जा रहा है।) सलोगन-तख़्तियां लगवा रखते हैं-"हिंदी सरल भाषा है।", "हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है।" "संकोच न करें, आज से ही हिंदी लिखना-पढ़ना शुरू कर दें।" और "हिंदी में लिखे चेक सहर्ष स्वीकार किए जाते हैं।" जबकि खुद बैंक कर्मी पूरे वर्ष अपने सभी कार्यों को संपर्क भाषा अंग्रेजी में ही निष्पादित करते हैं। संपर्क भाषा अंग्रेजी के प्रयोग के बिना तो देश की हिंदी-भाषी राज्य सरकारें भी नहीं चल सकतीं तो, बेचारी बहुदलीय केंद्र सरकार को क्यों दोषी ठहराया जाए। हो सकता है, बैंक कर्मी "प्रिय हिंदी" का प्रयोग न कर पाने की आत्म-पीड़ा से मुक्ति प्राप्ति हेतु ही प्रत्येक वर्ष हिंदी-दिवस के अवसर पर निश्चित रूप से संगोष्ठी आयोजित करते और पत्रिका/स्मारिका प्रकाशित कराते हैं। पूरी निष्ठा से किए गए कार्यों को "खून लगाकर, शहीद होने की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

"अखिल भारतीय हिंदी भाषा विकास मंच", "हिंदी सेवा-दल", "हिंदी साहित्यकार-परिषद्", "अंग्रेजी छुड़ाओ, हिंदी सिखाओ फोरम", "विश्व-भाषा हिंदी सम्मेलन","नवजागृत हिंदीसेवी संघ" और "हिंदी भाषा उत्थान समिति" जैसी मान्यता प्राप्त साहित्यिक संस्थाएं, जिनकी

नियमावलियों में ही हिंदी भाषा-साहित्य का विकास-विस्तार और प्रचार-प्रसार अंकित है, भला वे हिंदी-प्रेमी मेराथन रेस में क्यों नहीं भाग लेतीं?

एक नवगठित संस्था ने हिंदी-प्रेम प्रदर्शन में अव्वल स्थान प्राप्त करने तथा नीहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु हिंदी-दिवस समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया। समारोह की सफलता के निमित्त गहन विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से कई प्रस्ताव पारित किए गए। संभावित व्यय का आकलन किया गया और इसकी पूर्ति के लिए आय के विभिन्न श्रोतों की निशानदेही और समीक्षा की गई। सबों की एक राय थी कि किसी भी बड़े सभागार का पेट सच्चे हिंदी-प्रेमियों से नहीं भरा जा सकता। भीड़ जुटाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम के बहाने नाच-गाने और साहित्यिक कार्यक्रम अंतर्गत कवि-सम्मेलन का रखा जाना अपरिहार्य माना गया। अफवाह फैलाकर भी भीड़ जुटाई जा सकती है। सदस्य एक मत थे कि श्रोता अब उतने भावुक और मूर्ख नहीं रह गए हैं कि सिर्फ नेताओं का भाषण सुनने के लिए चले आएंगे। वह भी ऐसे नेता जो "विश्व पर्यावरण दिवस" पर कौमी-एकता की आवश्यकता पर बल देते हैं। चूहा फंसाने के लिए भी चूहेदानी में पहले पनीर रखना पड़ता है।

आयोजन की गरिमा बढ़ाने और आयोजन-व्यय से अधिक कमाने हेतु उद्घाटनकर्त्ता, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि पद हेतु "सुयोग्य"तथा सत्ता-शासन के "शिखरपुरुषों" का चयन किया गया। एक सदस्य का कहना था कि हनुमान जी को भी महाबली होने का एहसास दिलाना पड़ता है, तब ही वह वीरता दिखा पाते हैं। इस आलोक में हमें सबसे पहले चयनित अतिथियों के मन में "हिंदीप्रेमी" को जगाना होगा। सबों को अलग-अलग यही एहसास और विश्वास दिलाना होगा कि वही सबसे बड़े और सच्चे हिंदीप्रेमी हैं। "प्रेम" शब्द बड़ा ही मादक होता है और प्रेम-वार्ता में व्यक्ति सरल-सहज और भावुक हो जाता है। माँगने का यही उचित क्षण होता है, जिसमें भावुक प्रेमी किसी को कुछ भी दे सकता है। बस थोड़ी चतुराई से समय-याचना के बाद संस्था की आर्थिक कठिनाइयों का भी जिक्र करना होगा।-अपनी पांडुलिपि के प्रकाशन की आर्थिक क्षमता न रखनेवाले सच्चे साहित्यसाधक भला संस्था को क्या दे सकते? उनसे अच्छे तो "मान्यताप्राप्त हिंदी-सेवी" होते हैं, जो मंचीय कुर्सी के बदले खुद गुप्तदान करते या अपने संपर्क-प्रभाव से कार्यक्रम को ही प्रायोजित करा देते हैं।

पार्क होती लाल-पीली बत्तियों वाली गाड़ियों, कारों और मोटरबाईक्स तथा बड़े, छोटे पत्रकारों-छायाकारों को आते देख कर आयोजक अपनी रणनीति की सफलता पर खुश और संतुष्ट थे। आमंत्रित कवियों के साथ उनके खास दोस्त-यार भी थे। उड़ाई गई अफवाह का भी लाभ मिला था कि कलकत्ते से आरकेस्ट्रा-पार्टी और पॉप-सिंगर आए हैं। "कृपया कार्ड अपने साथ अवश्य लाएं। सिर्फ दो व्यक्तियों के लिए मान्य।" आमंत्रण-पत्र में मोटे शब्दों और लाल रंग से लिखवाए गए इन दो वाक्यों ने भी झूठ पर सच की मुहर लगा दी थी। यद्यपि आने वालों में अधिकतर वैसे लोग थे, जो पुस्तक-मेला में पुस्तकों को देखने-खरीदने नहीं बल्कि खाने-पीने, मेला में लगे डिजनी-क्लब की सैर करने या फिर डिसकाउन्ट सेल के सामानों को उलट-पुलट कर देखने-खरीदने के लिए जाते हैं। कुछ राजनेता और सरकारी अधिकारी तो सिर्फ इस भय से चले आए थे कि उनकी गणना हिंदी-विरोधियों में न कर ली जाए। उनका भय स्वाभाविक था। ऊंट और मीडिया-मैन एक स्वभाव के होते हैं, न जाने कब किस करवट बैठ जाएं।

नये डिजाईन के परिधानों और चांदी-सोने से सजी-संवरी युवतियां पक्की उम्र वालों के लिए भी आकर्षण बिन्दु थीं। छायाकार समारोह के आरंभ-पूर्व ही सुंदर चेहरों को विभिन्न कोणों से अपने-अपने कैमरे में उतारने लगे थे। कुछ लोग कैमरे की आँखों में किसी तरह उतर जाने की जद्दोजेहद कर रहे थे, तो कुछ लोग झुक-झुक कर पत्रकारों-छायाकारों में जबरन हाथ मिला कर और खाहमखाह उल्टी-सीधी बातें इस उम्मीद से कर रहे थे, ताकि उनका नाम समारोह-समाचार में उपस्थित लोगों में "आदि" शब्द के पूर्व रहे और ताकते-झांकते हुए ही सही परन्तु प्रकाशित फोटों में उनकी सूरत भी नजर आ जाए। मचं पर अध्यक्ष, उद्घाटनकर्त्ता, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि का नाम-पट्ट रखा था। मंच के नीचे तीसरी कतार में भी जगह नहीं मिलने पर साहित्यकार खुली उपेक्षा से खिन्न थे, परन्तु मध्य-सभागार की सीट पर बैठ कर भी आमंत्रित कविगण प्रसन्न थे और आयोजक के "हिंदीसेवा-भाव" और "उत्तम व्यवस्था" की प्रशंसा कर रहे थे। मंच-संचालक समय-समय पर शांति बनाए रखने के सादर अनुरोध के साथ अतिथियों के शीघ्र आगमन की सूचना भी दे दिया करते थे।

उद्घाटनकर्त्ता, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के आते ही हल्की भगदड़ सी हुई। उन "महापुरुषों" के चरणों को छू लेने की लालसा में अनाधिकृत पंक्ति में बैठे घुसपैठियें ने अपनी सीट गंवाई। मौके की ताक में लगे अनुभवी श्रोताओं ने उन सीटों पर कब्जा जमाकर दार्शनिकों की तरह ध्यान में चले गए।

सभागार मे उपस्थित गैरहिंदी भाषी वी.आई.पी. लोगों का ख्याल रखते हुए आयोजक ने हिंदी मिश्रित अंग्रेजी शब्दों में आगत अतिथियों का स्वागत किया। सचिव के प्रतिवेदन में हिंदी भाषा की महत्त्वता और दैनिक जीवन में इसके शतप्रतिशत प्रयोग पर कुछ ज्यादह ही बल दिया और हिंदी को "विश्व-भाषा" घोषित करने के साथ-साथ अन्य प्रस्ताव भी रखे गए। जोरदार तालियाँ बजते ही उन प्रस्तावों को पारित मान लिया गया।

उद्घाटनकर्त्ता ने किसी तरह घी से लबालब भरे दीप को जलाया और लंबे उद्घाटन-भाषण के बाद समारोह का विधिवत् उद्घाटन किया। उनके भाषण का लुबोलुबाब यही था कि वर्तमान सरकार हिंदीप्रेमी है और इसी राज में हिंदी का समुचित विकास-विस्तार हो रहा है। अन्त में उन्होंने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि

हिंदी के विकास योजना को कार्यान्वित नहीं होने देने में विरोधी दल का ही हाथ है। अन्य मंचस्त अतिथियों ने अपना-अपना लिखित भाषण पढ़ा, जिसे संस्था ने उन्हें पूर्व में ही उपलब्ध करा दिया था। भाषण में जोशीले शब्द का अधिक प्रयोग किया गया था और घिसे-पिटे सेकेण्ड हैण्ड "संकल्प" लिए गए थे, जिन्हें लगभग हर वर्ष दुहराया जाता है। उबाऊ भाषण सुन कर एक युवक गुस्से में बड़बराया "जरूर एक ही आदमी ने सब भाषण लिखा है।......पता नहीं नाच-गाना कब शुरू कराएगा? गर्मी के मारे ग्रीनरूम में मेकअप किए नृतिकाओं का चोली जरूर भींग गया होगा।........"

आठ बजे शुरू हुआ संगीत और नृत्य का "विशेष" कार्यक्रम। हो-हल्ला तालियों और सीटियों की गूंज को प्रशंसा मान कर कलाकार दिल खोल कर कला-प्रदर्शन करने लगे। घड़ी देख कर ठीक नौ बजे उठ खड़े हुए उद्घाटनकर्त्ता और मुख्य अतिथि। अध्यक्ष अपने आदमी थे और अध्यक्षीय-भाषण देना था, इसलिए बैठे रहे परन्तु विशिष्ट अतिथि को मुख्य अतिथि के आसन पर बैठा कर रोका गया। उद्घाटनकर्त्ता और मुख्य अतिथि को बाहर तक छोड़ने गए लोग वापस नहीं लौटे। ग्यारह बजे समाप्त हुआ संगीत और नृत्य का "विशेष" कार्यक्रम। आयोजक, कलाकारों को पैसा और गाड़ी मुहैया कराने में लग गए और मंच-संचालक पर्दे के पीछे खड़ा होकर कोकाकोला पीने लगा तब आमंत्रित कविगण, आमंत्रण-अनुरोध के बिना ही मंच पर धावा बोल दिया। एक अधेड़ उम्र कवि ने झट माईक संभाला और पाटदार आवास में घोषणा की "अब कवि सम्मेलन आरंभ होता है।" जब जाने वालों के पैर नहीं रुके तब उन्होंने गिड़गिड़ा कर अनुरोध किया-"सभी जाने माने बड़े कवि आमंत्रित हैं। साहित्यप्रेमियों से विशेष अनुरोध है कि बिना उन्हें सुने नहीं जाएं।.......वचन देता हूं, एक घंटा में इक्कीस कवियों को पढ़वा दूंगा......लीजिए अब विधिवत् कवि सम्मेलन का श्रीगणेश करता हूं।" युवतियां-महिलाएं जा चुकी थीं। समझदार किस्म के लोग नजर नहीं आ रहे थे। पचीस-पचास लोग न जाने किस उम्मीद में अब भी इधर-उधर बैठे थे। मंच-संचालक ने उन्हें पहली पंक्ति में आकर बैठने का विनम्र अनुरोध किया। परन्तु वे टस से मस नहीं हुए तब उसने बुझी हुई आवाज में कहा-"कौन कहता है साहित्य-प्रेमियों की संख्या घट रही है। इक्कीस कवियों को सुनने के लिए बयालीस अर्थात दुगुने से भी ज्यादा श्रोता अभी भी मौजूद हैं। अब मैं बिना किसी परिचायत्मक टिप्पणी के आमंत्रित कर रहा हूं मंगल चम्बलपुरी जी को वह माईक के सम्मुख आएं और अपनी प्रसिद्ध कविता "जय हिंदी, जय राष्ट्रभाषा" सुनाने का कष्ट करें।" वृद्ध कवि को जल्दी से सहारा देकर दबाया गया। उन्होंने पहले मुट्ठी भर श्रोताओं को देखा फिर मंच पर बैठे कवियों पर पूरी उम्मीद निगाहें डालते हुए दाद पाने की आस में बिना गला साफ किए "जय हिंदी, जय राष्ट्रभाषा" की पहली पंक्ति सुनाई तो किसी मनचले युवक ने जोर से चिल्ला कर कहा-"भोजपुरी में, तनी गा कर।"

कवि लज्जित हुआ और आयोजक को भी अपनी गलती का एहसास हुआ कि बिना कवि सम्मेलन के भी भीड़ जुटाया जा सकता था। एक दो कवि ही अभी एक-एक कविता सुना पाए थे कि सभागार खाली हो गया।

फिर शुरू हुई आयोजक और कवियों में तूतू-मेमे। आयोजक का कहना था कि "जब कविता ही नहीं सुनाई तो नजराना कैसा?" कवि का कहना था कि "नजराना लेकर ही मंच छोड़ूंगा। कविता सुनाने से कहाँ पीछे हट रहे हैं हम। आप चाहें तो आप ही को तीन-चार कविताएं सुना देता हूँ, परन्तु निर्धारित रकम से फूटी कौड़ी भी कम न लूँगा।" आधा घंटा हुज्जत हवाजत में बीत गया, तब मंच-संचालक कवि ने 50% माइनस पेमेन्ट पर दोनों पक्षों में समझौता करा कर मामला रफादफा करा दिया।

दूसरे दिन सभी समाचार-पत्रों में फोटो के साथ उद्घाटनकर्त्ता और मुख्य अतिथि के वक्तव्यों के अंश और लिए गए संकल्पों को शीर्षक रूप में प्रकाशित किया गया था। टी.वी. चेनलों पर भी वही सूरतें नजर आईं परन्तु कवि और उनकी कविताओं का कहीं कोई ज़िक्र न था।

आश्वासन के बावजूद मंचस्थ अतिथियों द्वारा संस्था के लिए आर्थिक लाभ की कोई घोषणा नहीं की गई। व्यवसाय में कभी कभी "नो लौस नो प्रोफिट" का भी सामना करना पड़ता है। आयोजक फिर भी बड़े खुश थे कि "संस्था " को अनुदान नहीं मिला तो क्या हुआ? यह अवसर तो प्रत्येक वर्ष आएगा। सभी पौधे एक ही साल में फल नहीं देते। हिंदीप्रेमी की इस "पब्लिसिटी" का लाभ निश्चित रूप से मिलेगा।

संपर्क: आर. ब्लॉक, पथ सं.-5,
आवास सं. सी./6 पटना-1

रामसंजीवन शर्मा की काव्य-क्षणिकाएँ

1. काँटो के बीच जीना कोई मुश्किल काम नहीं
बर्शते कि तुम्हारा मिजाज फूल सा हो ।
इस दुनिया को मतलब काँटो की गोद में पले
फूल से है उसके शूल से नहीं ।

2. बगीचा में फूल भी उगते हैं और बगीचा में शूल भी उगते हैं
पर बगीचा की शोभा फूल से बढ़ती है शूल से नहीं ।
ठीक उसी तरह आदमी के भीतर सद्भाव भी उगते हैं और
दुर्भाव भी उगते हैं पर आदमी की शोभा सद्भाव से बढ़ती है

3. सिर्फ देखने में लगता है कि तुम मुझसे बहुत दूर हो गए
तुम मुझसे कितने करीब हो इसका पता किसी को नहीं हैं
यह तो चकोर ही बता सकता है कि चाँद से उसका रिश्ता क्या है।

4. हम तेरी पूजा करें ना करें, इससे क्या बनता बिगड़ता है
पर हम हर जगह, हर रोज, हर घड़ी तेरे बंदों से प्यार करते हैं
उनके साथ जीते हैं, और उनके साथ मरते हैं
उनके साथ हँसते हैं और उनके साथ रोते हैं ।

संपर्क: वित्त विभाग कॉलोनी-2, खाजपुरा, मौर्य पथ, पटना-14

डोन्ट टच माइ बॉडी मोहन रसिया

डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

गीतकार और संगीतकार का पता नहीं। धुन और लय से यह भारतीय संगीत है। इसे एक देहात के नाटक में ग्रुप साँग के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिसे देहाती दर्शकों ने खूब सराहा था और उन्हीं में से जब कुछ लोग पढ़ लिखकर शहर में नौकरी करने गये तो यह गीत शहरों में भी डिटरजेंट पॉउडर की तरह फैल गया। गाँव-शहर की कीर्तन मंडलियों ने श्रोताओं को बटोरने के लिए गणेश-वंदना की तरह इस गीत का इस्तेमाल किया। धीरे-धीरे इसको भजननुमा गीत मान लिया गया।

लेकिन शिक्षा क्षेत्र में जब कोई चीज आती है तो नयी क्रांति जन्म लेती है अथवा शिक्षा को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने वाले शिक्षकों को बेचैन करके रख देती है। शिक्षा ही एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ उपदेश का उत्पादन भारी मात्रा में होता है और मानवता की प्रगति के लिए पुरानें औजारों की तरह पुराने विचारों का भी इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए यह गीत जब शिक्षकों के कान में पड़ा तब सुनते ही उनके सुप्त आदर्शों ने करवट फेरी और इसे एक अश्लील गीत घोषित कर दिया गया। बच्चों-युवकों से कहा गया कि वे इस गीत को न गाएं। इसमें नैतिक पतन के बीज छिपे हैं। नैतिक और सात्विक जीवन में किसी की बॉडी टच करना परम पाप है। इससे परलोक भी कलंकित होगा।

चूंकि यह गीत महामारी की तरह देहात से शहर के स्कूलों तक में फैल चुका था इसलिए राष्ट्रीय विकास पर चिंतन करने वाले शिक्षकों का दिमाग भन्ना गया। इसी बीच किसी स्कूल में एक बच्चे को यही गीत गाते हुए हेडमास्टर ने सुन लिया। उन्होंने उस छात्र को ऑफिस में बुलाकर मुर्गा बना दिया। किंतु किशोरों और युवकों के लिए यह रचना इतनी लहरदार थी कि एक दिन फिर अपने साथियों के बीच उसी लड़के ने पूरी तरह गला खोलकर गा दिया-डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया।

आवाज हेडमास्टर से पहले किसी लड़की के कान में जा पहुंची। उसने घर जाकर अपनी माँ से कहा कि उसे देखकर ऐसे गीत गाए जा रहे हैं। माँ ने अपने पति से कहा। पिता आजादी

की लड़ाई में गांधी जी का नरम दल छोड़कर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के गरम दल में कुछ दिन रह चुके थे। सुनते ही वे गेहुंवन साँप की तरह क्रोध में फन उठाकर भारत की शिक्षा-नीति और शैक्षिक परिवेश पर फुत्कारने लगे। बोल-मास्टर जब बॉडी टच तक को नहीं रोक सकते तो फिर ये किस मर्ज की दवा है। भली जवान लड़कियों को ऐसी पंकितयां आज सुनने को मिल रही है। स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती में देश का जब यह हाल है तब न जाने हीरक जयंती में क्या होगा।

कुछ मित्रों ने लड़की के पिता के गुस्से को खारिज करते हुए कहा-जाने दो भाई, यह कोई गन्दा गीत नहीं है। यह तो कृष्ण कन्हैया के प्रति राधा की प्रेमाभिव्यक्ति है। राधाकृष्ण का प्रेम विश्व प्रसिद्ध है। गीत की स्टाइल थोड़ी फिल्मी है। मगर केवल फिल्मी स्टाइल हो जाने से कोई गीत अश्लील नहीं हो जाता। राधा छेड़खानी करने वाले कृष्ण को बरज रही हैं कि मेरा शरीर मत छूओ।

पिता-उपाधि का मुकुट पहने सज्जन का उत्तर था-स्कूल की फीस हम इसलिए नहीं देते कि हमारी बेटी-बहनों को ऐसे गीत सुनने को मिले।

उन्होंने जाकर हेडमास्टर से शिकायत की और सुझाव दिया कि विद्यालय के प्रधान को ऐसी चेष्टा करनी चाहिए कि विद्यालय के परिवेश में ऐसे ओछे गीत सुनने को न मिलें। दीवार पर टंगा कैलेंडर दिखाई पड़ गया जिसमें लिखा था-संयम महापुरुषों का गुण है। इसलिए कुछ नहीं बोले।

हेडमास्टर ने इस बार उस लड़के से प्री-टेस्ट क्वश्चन की स्टाइल में पूछा-एक्स्प्लेन, व्हाट् डू यू मीन बाई डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया?

लड़के की अंग्रेजी कमजोर थी, इसके दो कारण थे। पहला, उसके पिता का जन्म भारत के स्वतंत्र होने पर हुआ था और दूसरा कारण था कि अंग्रेजी वाले मास्टर हफते में दो दिन क्लास लेते थे। बाकी दिन हेडमास्टर साहब की निजी-पारिवारिक समस्याओं का हल निकालने में उनका सहयोग करते थे। इसलिए स्कूल की घंटी उनके लिए बेमानी थी।

छात्र को अबोला देख हेडमास्टर के क्रोध का पारा चढ़ गया। ऑफिस में लगे संयम वाले कैलेंडर का पन्ना उलट गया था। इस महीने के कैलेंडर पर छपा था-शिक्षक राष्ट्रीय चरित्र के

पहरूए हैं। इस वाक्य ने उनमें ऊर्जा भर दी और उन्होंने बेंत की छड़ी उठाकर उस लड़के को पीट दिया। लड़का दूसरी जाति से बिलौंग करता था। बात स्कूल से बाहर चली जाती तो जातीय दंगा भड़क जाता और एक दूसरे गुजरात की पुनरावृति हो जाती। इसलिए सामाजिक शिक्षा के एक मास्टर ने लड़के को समझाकर विदा किया कि गुरु पूज्य होता है। उसका क्रोध भी छात्र के लिए अमृत का काम करता है। आगे चलकर उस छात्र ने युग प्रचलित उपायों को अपना कर बी.ए. कर लिया और बाद में अपने प्रदेश का विधायक बन गया। विधानसभा की बैठक में उसने हेडमास्टर की बेंत की छड़ी को स्मरण करते हुए देश की शिक्षा-व्यवस्था तथा मास्टरों की भूमिका के प्रति अपना आभार प्रकट दिया। उसने कहा कि राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ये शिक्षक देश के भविष्य को बदल देने भी क्षमता रखते हैं। अखबारों में छपे इस खबर को पढ़कर बहुत से शिक्षकों ने अपने को सगर्व सराहा। हफ्ते भर तक शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में छात्रों के सामने कोटेशन रखा-सच्चे नागरिक पैदा करने की कूबत केवल शिक्षकों में है। किंतु एक मास्टर साहब ऐसे कोटेशन पर पीड़ित और निराश थे। उन्हें सात बच्चे थे। उनमें छः बेकार बैठे थे। घर में पत्नी कोसती थी-देश की आबादी का आंकड़ा तुम्हें मालूम था फिर भी तुमने अनाड़ीपन दिखा दिया।

उस विधायक के वक्तव्य का कुछ और लोगों ने भी विरोध किया। अपने चुनावपत्र में शिक्षा के महत्व और शिक्षकों के भविष्य की सुरक्षा की गारंटी लेने का वादा करने वाली पार्टी जब चुनाव में हार गई तब वह शिक्षा-विरोधी हो गई। पार्टी कहने लगी कि इन स्कूल-कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षक देश को लूट रहे हैं। तनख्वाह बड़ी लेते हैं और पढ़ाते कुछ नहीं। अगर उन्होंने ठीक से पढ़ाया होता तो आज के युवक ये फुलझड़ीनुमा गाने नहीं गाते-डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया। हम पूछते हैं कि इस देश में वे कौन लोग हैं जो अपना बॉडी टच करने से मना करते हैं और मोहन रसिया कौन है। सरकार जिसको चाहती है उसको राधायें प्रसन्न मुद्रा में नाचती रहती हैं। वे भी गाती हैं-डोन्ट टच माई बॉडी, मगर इस देश में, मैं पूछता हूँ, बिना बॉडी टच किए आज तक कोई बलात्कार या भ्रष्टाचार संभव हुआ है? यह राष्ट्र कहाँ जा रहा है, यह एक गंभीर प्रश्न है। शिक्षकों को इस पर सोचना होगा। शासक पक्ष के एक सदस्य ने कहा-बॉडी टच करना कोई गुनाह नहीं है। मेरे पास पूरे तीस साल का आंकड़ा है कि सनातन काल से आचार्यों और गुरूओं ने अपने शिष्यों से बॉडी टच करवाया है।

जिसका टच बढ़िया से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है वह तरक्की के पहाड़ पर जा बैठा है। जिसने टचिंग में कोताही कि वह कहीं का नहीं रहा। इसलिए इस देश को यह फार्मूला स्वीकार कर लेना चाहिए कि टींचिग में टचिंग के बिना काम नहीं चलता। जिस शिष्य या शिष्या की पीठ पर गुरु ने अपना हाथ फेर दिया वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। इसके लिए उसने क्या खोया यह बाद में पता चलता है। पर भविष्य को किसने देखा है।

जिसका टच बढ़िया से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है वह तरक्की के पहाड़ पर जा बैठा है। जिसने टचिंग में कोताही किवह कहीं का नहीं रहा। इसलिए इस देश को यह फार्मूला स्वीकार कर लेना चाहिए कि टींचिग में टचिंग के बिना काम नहीं चलता। जिस शिष्य या शिष्या की पीठ पर गुरु ने अपना हाथ फेर दिया वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। इसके लिए उसने क्या खोया यह बाद में पता चलता है। पर भविष्य को किसने देखा है।

एक आध्यात्मिक गुरु से भी इस विषय पर विचार माँगे गए। विषय को सुनते ही उनकी अपनी विषय-वासनाओं के स्वरूप याद आने लगे। मुस्कुराकर वे मौन हो गए, फिर फूटे-भक्त अपने भगवान के चरण-स्पर्श करता है क्या वह बॉडी टच नहीं है? शिष्य-गुरु में टचिंग-रिलेशन न हो तो गुरु-कृपा कभी प्राप्त ही नहीं हो सकती। इस पर राजनीतिक बहसें व्यर्थ हैं। शिक्षक आध्यात्मिक स्तर पर राष्ट्र में परिवर्तन लाने का प्रयास करें। वेतन की चिंता में कुछ नहीं रखा है। एक सच्चे राष्ट्रभक्त को बेतन होकर वतन की सेवा करनी चाहिए।

एक शिक्षक को इस दलीलों पर यकीन नहीं हुआ। अपनी मुंहफटई के लिए वे नौकरी से तीन बार सस्पेंड हो चुके थे। उनको बार-बार समझाया गया था कि नौकरी में स्पष्टवादी बनना खतरनाक होता है। स्पष्टवादिता के खेत में दुश्मनी के बीज बहुत जल्द अंकुरित होते हैं। फिर भी उन्होंने किसी की नहीं मानीं और बोल पड़े-'भूखे भजन न होई गोपाला'। पहले मास्टरों का पेट भरो, उन्हें डी.ए. टी. ए . दो। मास्टर खुश रहेंगे तो यह देश भी खुशहाल रहेगा।

हर जगह खबर फैली कि एक लड़के ने ऐसा गीत गाया कि शिक्षा जगत की आँखें खुल गई। यह गीत बड़ा प्रभावशाली है। इसमें पूरे राष्ट्रीय चरित्र को बदल डालने की क्षमता है। अतः शिक्षा के प्रत्येक कार्यालय में यह गीत दीवारों पर प्रदर्शित किया जाय-डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया।

दूसरे दिन एक स्कूल में कुछ समझदार लड़कों ने मोहन रसिया की जगह मिटाकर तीन मास्टरों के नाम लिख दिये। वे तीनों मास्टर गुस्से में जलते हुए प्रींसीपल के पास गए और शिकायत की। उन शरारती छात्रों को पनिश किया जाय। प्रिंसिपल ने उन्हें अपने पास बैठाकर समझाया-युग बदल गया है। इस स्कूल में कल एक मंत्री जी आ रहे हैं। जनता की शिकायत वे पहले सुनते हैं। वे अपने मंत्रिमंडल में स्वयं मोहन रसिया के रूप में प्रसिद्ध हैं। घोड़े से घास मत मांगिए। चुपचाप अपनी नौकरी देखिए और आप भी वही गीत गाइए जो यह देश गाता है।

अपने सिद्धांतों का शवदाह कर वे शिक्षक लौट गए।

संपर्क: राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली,
आर-7, वाणी विहार, उत्तमनगर, दिल्ली

विकलांगों के उपचार में युगांतकारी परिवर्तन

अनेक प्रोफेशंस में डिग्री स्तर का पाठ्य-क्रम चलानेवाला बिहार का पहला और एकमात्र संस्थान

इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकशन एण्ड रिसर्च, पटना

प्रस्तुतिः डॉ.अवनीश रंजन

विकलांगों के उपचार और उनके पुनर्वास के क्षेत्रों में काम करनेवाली विशेषज्ञताओं में नयी टेकनोलॉजी के विकास से इस क्षेत्र में युगान्तकारी और सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। इससे एक ओर जहां विकलांगता निवारण तथा विकलांगों उपचार में सफलता का दर बहुत तेजी से बढ़ा है, वहीं इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने वाले पुनर्वास कर्मियों का भी विशिष्टता के साथ देश-विदेश में रोजगार के बड़े अवसर प्राप्त हो रहे हैं। नई टेकनोलॉजी के विकास के साथ इस क्षेत्र में प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों जैसे फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच थेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियरिंग, स्पेशल एजुकेटर आदि में कोर्स का भी विस्तार हुआ है और उन्हें परिष्कृत कर अन्य चिकित्सकों की समकक्षता के काफी करीब ले आया गया है। इन पाठ्यक्रमों में डिग्री स्तर की शिक्षा में विशेषज्ञों को इतना योग्य बना दिया जाता है कि वे अपने-अपने कार्य में स्वतंत्र रूप से रोगियों की पहचान, और उपचार करने में दक्ष हो जाते हैं। फिलवक्त पूरे देश में विकलांगों क पुनर्वास से संबंधित पाठ्यक्रमों में डिग्री स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने वाले संस्थान कुछ एक ही है। उन्हीं में से एक संस्थान, इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, हेल्थ इंस्टीच्यूट रोड,बेऊर (सेंट्रल जेल क निकट), पटना है, जहां फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच थेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियरिंग तथा मेटल रिटार्डेशन में बैचलर डिग्री के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। यह संस्थान एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन मानव मानवी समाज कल्याण केन्द्र, पटना द्वारा बिहार चिकित्सा शिक्षा संस्थान (विनियमन एवं नियंत्रण) अधिनियम-1981 के प्रावधानों के तहत राज्य सरकार की पूर्वानुमति प्राप्त कर चलाया जा रहा है। यह बिहार का पहला और एक मात्र

संस्थान है, जिसे इन प्रोफेशन्स में डिग्री स्तर का पाठ्यक्रम चलाने तथा भारतीय पुनर्वास परिषद, भारत सरकार संबद्ध मगध विश्वविद्यालय बोधगया से मान्यता प्राप्त होने का गौरव मिला है।

पत्रकारिता से अपना कैरियर शुरू करनेवाले और इस समय राज्य के चर्चित समाज सेवी श्री अनिल सुलभ इस संस्थान के अध्यक्ष सह निदेशक प्रमुख हैं, जिनके निष्ठापूर्ण सतत प्रयास से यह संस्थान पिछले एक दशक में न केवल सैंकड़ों छात्रों को एक बेहतरीन कैरियर ही दिया है, बल्कि हजारों विकलांगों को विशेषज्ञ चिकित्सा एवं पुनर्वास सुविधाएं भी निःशुल्क उपलब्ध कराया है। इस संस्थान की शुरूआत 1990 में फिजियोथेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक, मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी, एक्स-रे टेक्नोलॉजी तथा हॉस्पीटल मैनेजमेंट में डिप्लोमा की पढ़ाई से हुई थी। शैक्षणिक सत्र 1997-98 से इसमें उपरोक्त डिग्री पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। मगध विश्वविद्यालय डिग्री पाठ्यक्रमों की परीक्षा ले रही है।

डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिए संस्थान की एक अलग परीक्षा समिति है, जिसे राज्य सरकार का अनुमोदन प्राप्त है। इस समिति में, बिहार क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में अपर निदेशक पदेन ''गवर्नमेंट नोमिनी'' सदस्य होते हैं, जो संस्थान से प्रदान किए जाने वाले मूल प्रमाण-पत्रों पर हस्ताक्षर भी करते हैं। संस्थान द्वारा शैक्षणिक सत्र 2002-2003 में नामांकन हेतु योग्य छात्र-छात्राओं से प्रेसाइब्ड फॉर्म में आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते है। आइए संक्षिप्त में इन डिग्री पाठ्यक्रमों क बारे में कुछ जानें:-

बैचलर ऑफ फिजियोथेरापी:- यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुएट फिजियोथेरापिस्टस तैयार करने क उद्देश्य से बनाया गया है, जो स्वतंत्र रूप से शारीरिक एवं मानसिक विकलांगता के मरीजों की जांच-पड़ताल एवं उपचार कर सके। यह बताने की जरूरत नहीं है कि इस विशेष चिकित्सा पद्धति के माध्यम से, पोलियो और लकवा सहित हड्डी, जोड़, नस एवं मांसपेशियों से संबंधित सभी प्रकार के दर्द एवं विकलांगता

का इलाज किया जाता है, जो किसी भी अन्य प्रकार से संभव नही है। इस पद्धति में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यायामों तथा इलेक्ट्रिकल एवं कम्प्यूटराइज्ड मशीनों एवं उपकरणों की मदद से उपचार किया जाता है, जिनमें लेजर थेरापी, माइक्रोवेव डायथर्मी, शॉर्ट वेव डायथर्मी, अल्ट्रासाउन्ड, ऑटोट्रैक्शन, मायोग्राफर, इलेक्ट्रिक स्टूमलेशन, हाइड्रोथेरापी, इंटर फेरेशियल करंट थेरापी आदि शामिल है। एक ग्रेजुएट फिजियोथेरापिस्ट की देश-विदेश में बड़ी मांग है। अमेरिका और खाड़ी के देशों के अलावा यूरोप के देशों में एक फिजियोथेरापिस्ट की मासिक आमदनी भारतीय मुद्रा में एक से डेढ़ लाख रुपये तक की है। विभिन्न अस्पतालों, विकलांग पुनर्वास केंद्रों, नर्सिंग होम, विकलांग विद्यालयों सहित चिकित्सा महाविद्यालयों में भी नौकरी के अवसर होते हैं। इनके अतिरिक्त निजी प्रैक्टिस के माध्यम से भी पर्याप्त उपार्जन किया जा सकता है।

साढ़े चार वर्षीय (जिसमें 6 माह का इंटर्नशिप शामिल है) इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडिएट विज्ञान है।

बैचलर ऑफ अकुपेशनलथेरापी:- यह पाठ्यक्रम भी बैचलर ऑफ फिजियोथेरापी कोर्स से बहुत हदतक मेल खाता है। किन्तु इस पद्धति में इलेक्ट्रिकल उपकरणों के इस्तेमाल कम होते हैं। इसके द्वारा ऐसे विकलांगों को पुनर्वासित करने का कार्य किया जाता है, जो फिजियोथेरापी की सीमा से आगे बढ़ चुक होते हैं और उनमें स्थायी विकलांगता आ चुकी होती है। एक अकुपेशन (प्रशिक्षण) अपनाने की सलाह भी देता है। वस्तुत: ऐसे विकलांगों के लिए एक अकुपेशनल थेरापिस्ट देवदूत सरीखा होता है।

संप्रति पूरे देश में गिनती के 6 संस्थानों में ही अकुपेशनल थेरापी में डिग्री की पढ़ाई होती है। इसलिए भी इसमें प्रशिक्षित स्नातकों की बड़े पैमाने पर कमी है। विदेशों में इसकी मांग फिजियोथेरापिस्टों, की तुलना में कहीं ज्यादा है। उपार्जन की दृष्टि से भी यह कमतर नहीं है।

बैचलर ऑफ स्पीच, लैंग्वेज एण्ड हियरिंग:- यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुएट हियरिंग एण्ड स्पीच पैथोलॉजिस्ट (हियरिंग एण्ड स्पीच थेरापिस्ट) तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया है, जो स्वतंत्र रूप से श्रवण (हियरिंग) एवं वाक् (स्पीच) दोषों क मरीजों की जांच और उपचार

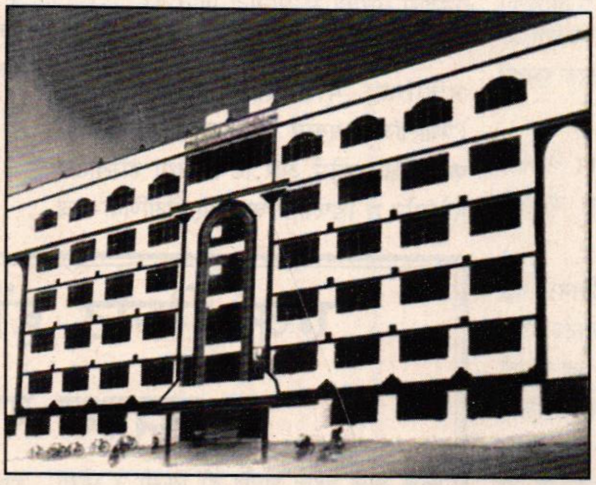

कर सके। स्पीच पैथोलॉजी तथा ऑडियोलॉजी एक दूसरे के पूरक चिकित्सा विज्ञान है और इसीलिए ये दोनों विषय एक साथ पढ़ाये जाते हैं ताकि इसके ग्रेजुएट दोनों ही क्षेत्रों में अपना कैरियर बना सके। स्पीचथेरापी के माध्यम से आवाज, वाक् तथा उच्चारण के दोषों को ठीक किया जाता है, जबकि ऑडियोलॉजी का संबंध श्रवण-दोष की विभिन्न प्रकार की जांच के तरीकों से है। इसके द्वारा श्रवण-क्षमता की सटीक जांच की जाती है तथा कम सुननेवाले एवं बहरे लोगों का उपचार और हियरिंग-एड (श्रवण-यंत्र) की सहायता से उनका पुनर्वास भी किया जा सकता है।

इसमें प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिए रोजगार एवं निजी प्रैक्टिस के व्यापक क्षेत्र हैं। इनका समायोजन अस्पतालों, स्पीच एण्ड हियरिंग केंद्रों, नाक, कान एवं गला विभाग, शिशुरोग विभाग सहित न्यूरोलॉजी, प्लास्टिक सर्जरी, रिहैबलिटेशन मेडिसीन, प्रिवेन्टीव मेडिसीन विभागों तथा गुंगे-बहरे एवं मानसिक विकलांग विद्यालयों में स्पीच पैथोलॉजिस्ट और ऑडियोलॉजिस्ट के पदों पर किया जाता है। इनके अतिरिक्त वे आर्म्ड मेडिकल सर्विस, औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा पुनर्वास केंद्रों में भी नियुक्ति पा सकते हैं। निजी प्रैक्टिस के माध्यम से भी अच्छा उपार्जन हो सकता है।

साढ़ेतीन वर्षीय (इसमें 6 माह का इंटर्नशिप शामिल हैं।) इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडिएट विज्ञान है।

बैचलर ऑफ प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियरींग: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ऐसे प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक ग्रेजुएट इंजिनीयर तैयार करना है, जो स्थायी रूप से विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास के लिये स्वतंत्र रूप से मरीजों की पहचान तथा उन्हें आवश्यक कृत्रिम अंग देकर उन्हें सामान्य जीवन जीने योग्य बना सके।

यह विज्ञान विकलांगों व्यक्तियों के पुनर्वास के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि स्थायी रूप से विकलांग हो गये व्यक्ति जिनके हाथ या पैर कट चुके होते हैं, उन्हें सारा जीवन कृत्रिम अंग के सहारे जीना पड़ता है। यह प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियर ही है, जो उनके शारीरिक बनावट और कटे हुये स्थान के मुताबिक कृत्रिम पैर या हाथ देकर उन्हें सामान्य जीवन जीने लायक बनाते हैं।

इस क्षेत्र में तेजी से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास हो रहे हैं। आज इस तरह के कृत्रिम हाथ-पैर बनाये जा रहे हैं, जो न केवल देखने में, बल्कि उपयोग में भी प्राकृतिक जैसे लगते हैं। इनके अतिरिक्त एक प्रोस्थेटिक इंजीनिपयर पोलियो क जूते, कैलिपर, बैशाखी, गर्दन के कॉलर, कमर के बेल्ट तथा कई अन्य सहायता सामग्री एवं उपकरण बनाते हैं, जिनकी फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी तथा पुनर्वास के लिये जरूरत होती है। एक प्रोस्थेटिक ऑर्थोटिक इंजीनियर के बिना किसी पुनर्वास केंद्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लिहाजा यह एक बहुत ही रोजगार परक क्षेत्र है। अपना "कृत्रिम अवयव निर्माण केंद्र" स्थापित कर लाभप्रद स्वरोजगार भी प्राप्त किया जा सकता है। भारत सरकार के अंतर्गत कल्याण

मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा देश के प्रत्येक क्षेत्र में अनुदान आधारित "लिम्ब फिटींग सेंटर" स्थापित करने के प्रस्ताव है। किंतु प्रशिक्षित व्यक्तियों के अभाव में भारत सरकार की शतप्रतिशत अनुदान राशि से चलायी जाने वाली यह योजना हर जगह नहीं लागू हो पा रही है। इस योजना के तहत एक बड़ी संख्या में प्रशिक्षित प्रोस्थेटिक ऑर्थोटिक इंजीनियरों की जरूरत है। अन्य रिहैब्लिटेशन प्रोफेशनल्स की तरह इसकी भी विदशों में बड़ी मांग है।

तीन वर्ष और 6 माह इंटर्नशिप के इस पाठयक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडियेट विज्ञान है।

बैचलर ऑफ मेंटल रिटार्डेशन: यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुएट स्पेशल एजुकटर तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया है, जो काफी हदतक स्वतंत्र रूप से मंदबुद्धि तथा मानसिक विकलांग बच्चों की जांच एवं उपचार सहित उनका पुनर्वास करते हुए उन्हें दैनन्दिनी के कार्यों सहित व्यवहारिक शिक्षा भी प्रदान कर सके।

पूरे देश में बड़ी तादाद में मंद-बुद्धि और मानसिक विकलांग बच्चे है, जिनके अनुपात में ऐसे प्रशिक्षित व्यक्तियों की भारी कमी है। प्रशिक्षित व्यक्तियों के अभाव में भारत सरकार की कई महात्वाकांक्षी योजनाएं जो मंदबुद्धि बच्चों क विद्यालयों से संबंधित है, नहीं पूरी हो पा रही है।

मेंटल रिटार्डेशन में स्नातक डिग्री प्राप्त प्रोफेशनल्स को पूरी उदारता के साथ शत-प्रतिशत अनुदान राशि के साथ विद्यालय चलाने की योजनाओं को भारत सरकार स्वीकृति प्रदान कर रही है।

तीन वर्ष और 6 माह इंटरर्नशिप के इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडियेट विज्ञान है।

डिप्लोमा धारकों क लिए एक वर्षीय एब्रिज्ड डिग्री कोर्स: उपरोक्त सभी डिप्लोमा कोर्स में अब नये सत्र से एब्रिज्ड डिग्री कोर्स शुरू किया गया है। यह पाठ्यक्रम भी मगध विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। वे छात्र जो फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, स्पीच थेरापी, आर्थोटीक एण्ड प्रोस्थेटीक तथा मेंटल रिर्टाडेशन में डिप्लोमा कर चुक हैं वे एक वर्ष के एब्रिज्ड डिग्री कोर्स में नामांकन करा सकते हैं यह कोर्स डिग्री के समकक्ष है।

बी.एड. स्पेशल एजुकेशन:-यह पाठ्यक्रम एम.पी. भोज युनिर्वसीटी, भोपाल एवं भारतीय पुनर्वास परिषद से मान्यता प्राप्त है।

इस संस्थान में उपरोक्त पाठ्क्रमों क अतिरिक्त, मेडिकल लैब, टेक्नोलाजी (पैथोलॉजी), एक्सरे टेक्नोलाजी(रेडियोग्राफी), फाउन्डेशन कोर्स और टिंचर तथा हॉस्पीटल मैनेजमेंट में डिप्लोमा क लिए शैक्षणिक-सत्र 2003-2004 क लिए नामांकन हेतु प्रेसक्राइब्ड फॉर्म में आवेदन-पत्र आमंत्रित किये गये हैं। फॉर्म तथा प्रोस्पेक्टस किसी भी कार्य दिवस में संस्थान कार्यालय, हेल्थ इंस्टीच्यूट रोड, बेऊर, पटना-2 से 100 रुपये मात्र का नगर भुगतान कर, अथवा 120 रुपये मात्र का बैंक डिमांड ड्राफ्ट, जो कि ''इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकशन एण्ड रिसर्च, पटना के नाम देय हो, भेजकर डाक से मँगाया जा सकता है। नामांकन जारी है।

संपर्क: इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, बेऊर, पटना-2

एक मिनट हंसिए और स्वस्थ रहिए

कुछ साल पहले शायद ही किसी ने सोचा हो कि हंसना भी इलाज हो सकता है या डाक्टर रोगियों से हंसने के लिए कहेंगे। लेकिन अब यह बात सच हो गई है। चिकित्सा क्षेत्र में हुए शोध से यह बात साफ हो गई है कि हंसने से रोगी को फायदा होता है। कई डाक्टरों का तो यहां तक कहना है कि अगर कोई व्यक्ति एक मिनट हंसता है तो उसके लिए एक मिनट व्यायाम के बराबर है। यही वजह है कि राजधानी के मूलचंद अस्पताल में कुछ कार्टून लगाए हैं। यह जानकारी हार्ट केयर फाउंडेशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी अध्यक्ष डा.केके अग्रवाल ने दी।

डॉ. अग्रवाल ने बताया की 27 अप्रैल को हास्य रस और स्वास्थ्य पर एक गोष्ठी की गई। इसे हार्ट केयर फाउंडेशन ऑफ इंडिया, माहेश्वरी क्लब और आईएमए की नई दिल्ली शाखा ने मिलकर किया। गोष्ठी के बाद हास्य कवि सम्मेलन भी हुआ। कवि सम्मेलन चिन्मय ऑडिटोरियम में हुआ। डा. अग्रवाल का कहना था कि हास्य रस से आरोग्य शक्ति मिलती है। तनाव कम होता है। हंसना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इससे मानसिक तनाव कम होता है। हंसना एक अच्छा व्यायाम है। जितनी कैलोरी तेज चलने से नष्ट होती है उतनी ही हंसने से ।

डा. अग्रवाल ने कहा कि रोगी अस्पताल में तनाव और चिंता की हालत में आता है। वह उस माहौल से अपरिचित होता है। रोगी चिकित्सक स्टाफ के साथ व्यक्तिगत रिश्ता चाहता है। उन्होंने एक सर्वे के हवाले से कहा कि 85 फीसदी रोगी चाहते हैं कि उनकी तिमारदारी में लगे नर्सिंग स्टाफ को हंसना चाहिए। 78 फीसदी रोगियों का कहना था कि रोगियों को हंसाने के लिए नर्सों की मदद करनी चाहिए।

डा. अग्रवाल ने बताया कि यह देखा गया है कि रोगियों को हंसाने से उनकी दवाइयों पर भी फर्क पड़ता है। रोगियों का दर्द कम होता है। उबकाई वाली दवाएं भी कम होती हैं। उनका कहना था कि हंसने से मांसपेशियों को आराम मिलता है। तनाव के हार्मोन कम होते हैं। रक्त में इम्यूनेग्लोबुलिन की मात्रा बढ़ती है। बी सेल और टी सेल भी बढ़ता है। इंडोरफिन और गामा इंटरफेरोंस बी की रक्त में मात्रा बढ़ती है।

साभार: जनसत्ता, दिल्ली

थापा नेपाल के नए प्रधानमंत्री

प्रस्तुतिः ज्ञानेन्द्र नारायण

नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र ने लोकेन्द्र बहादुर चंद के स्थान पर राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के ही नेता सूर्य बहादुर थापा को नेपाल के नए प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलाई। भारत के इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त श्री थापा को कम्युनिस्ट नेता माधव कुमार नेपाल के साथ कड़ी स्पर्धा के बाद पाँचवी बार नेपाल के प्रधानमंत्री के रूप में चुना गया। इससे पूर्व वे महाराजा वीरेन्द्र के शासनकाल में दो बार तथा उससे भी पूर्व महाराजा महेन्द्र के शासन में दो बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। थापा हालांकि नेरश समर्थक हैं किंतु पिछले अक्टूबर में निर्वाचित प्रधानमंत्री शेर बहादुर देऊबा को बर्खास्त करने, चुनावों को स्थगित करने और चंद को प्रधानमंत्री बनाने के नरेश के फैसले की उन्होंने अन्य विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मिलकर आलोचना की थी। विश्लेषकों का कहना है कि नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र द्वारा की गयी इस नियुक्ति से स्थिति संभलने की संभावना कम दिखती है।

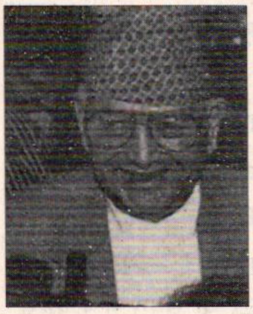

विदित हो कि नेपाल में माओवादी 1996 से ही खूनी संघर्ष छेड़े हुए हैं और नेपाल में सरकार और माओवादी विद्राहियों के बीच बातचीत के महत्वपूर्ण दौर में पहुँचने के थापा को प्रधानमंत्री के पद पर बैठाया गया है। महाराजा समर्थक राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के 75 वर्षीय थापा नेपाल संसद के ऊपरी सदन नेशनल एसेम्बली के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय यह भी है कि पाँच पार्टियों वाला गठबंधन महाराजा के अधिकारों में कटौती की माँग करता रहा है।

वाजपेयी की चीन यात्रा से विश्व राजनीति प्रभावित

विचार संवाददाता

भारत-चीन संबंधों का इतिहास पुराना रहते हुए भी आजादी के बाद इन संबंधों में उतार-चढ़ाव होता रहा है। 1962 के चीनी हमले के बाद आई खटास को कम करने का सबसे प्रथम प्रयास भारत की ओर से 1979 में हुआ जब विदेश मंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन की यात्रा की थी। बाद में जब 1981 में चीनी विदेश मंत्री हुआंग हुआ भारत दौरे पर आए तो इसमें गर्मजोशी का आभास हुआ। किंतु दोनों देशों के बीच राजनीतिक स्तर पर वार्ताओं की बहाली 1988 में ही हो सकी। 1992 में राष्ट्रपति वेंकटरमण और 1993 में प्रधानमंत्री नरसिंह राव की चीन यात्रा ने इस सिलसिले को आगे बढ़ाया और दोनों देशों के बीच सीमा पर शांति बनाए रखने का समझौता हुआ। संबंधों को सामान्य बनाए रखने के वास्ते राष्ट्रपति के. आर. नारायण ने भी 1994 में चीन का दौरा किया था। इसी प्रकार चीनी राष्ट्रपति ज़ियांग जेमिन के 1996 में भारत दौरे हुए और इस दौरान दोनों देशों ने सैन्य क्षेत्र में भरोसे की बहाली के बाबत समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

दोनों देशों के रिश्ते में कड़ुवाहट तब आई जब चीन 1998 में भारत द्वारा पोखरण में किए गए दूसरे परमाणु विस्फोट की आलोचना की। फिर कुछ समय तक की चुप्पी दूर हुई तब जब विदेशमंत्री जसवंत सिंह ने 1999 में चीन की यात्रा के दौरान 2000 में दोनों ने डब्लूटीओ के संबंध में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

फिर दोनों देशों ने आपसी राजनयिक संबंधों की स्वर्ण जयंती भी मनाई। जनवरी 2001 में चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष ली पेंग की भारत यात्रा के बाद जुलाई 2001 में भारतीय सांसदों, उद्योगपतियों और व्यापारियों का एक दल राज्यसभा की उपसभापति नजमा हेफतुल्ला के नेतृत्व में चीन का दौरा किया और दोनों देशों के रिश्तों में गर्मजोशी का माहौल बना। फिर जनवरी 2002 में चीन के प्रधानमंत्री जूरोंगजी की भारत यात्रा के बाद यह महसूस किया गया कि दो सबसे बड़े राष्ट्र होने के नाते भारत और चीन के कंधों पर एशिया में शांति, स्थिरता तथा संपन्नता का वातावरण बनाए रखने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इस दौरान दोनों देशों ने आतंकवाद के खिलाफ द्विपक्षीय वार्ताओं पर सहमति प्रकट की।

जून 2003 में हुए प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा से अगले दो तीन दशकों के लिए न केवल एशिया महाद्वीप बल्कि पूरे विश्व की राजनीति प्रभावित हुई। जहाँ तक भारत-चीन के सीमा विवाद का सवाल है चीन के अनुसार इस मसले का तार्किक और उचित हल निकालने का प्रयास किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि जम्मू-कश्मीर में लगभग 38 हजार वर्ग किलोमीटर भारतीय क्षेत्र को चीन से हासिल कर अवैध रूप से अपने कब्जे वाले कश्मीर (पी.ओ.के.) में मिला लिया है। दूसरी तरफ चीन ने अरुणाचल प्रदेश में 90 हजार वर्ग किलोमीटर भारतीय क्षेत्र पर दावा किया है। दरअसल आज भी भारत के साथ संबंध ों को बेहतर बनाने की चन की इच्छा के पीछे सीमा विवाद को सुलझाने की मंशा कम, बल्कि अमेरिका के साथ भारत के गहराते रिश्तों से अपजी चिंता का कारण ज्यादा है। भारत ने सदैव हर मोर्चे पर चीन का साथ दिया था। चीन ने भारत की इस दरिया-दिली को उसकी कमजोरी समझा और संयुक्त राष्ट्र से मान्यता मिलते ही उसके नेता भारत के तमाम भूभाग पर अपना दावा ठोंकने लगे। 1971 में भारत-पाक युद्ध के वक्त भी चीन का रूख भारत के खिलाफ ही रहा। इसी प्रकार चीन ने बांग्लादेश के आजादी आंदोलन के प्रणेताओं को पृथकतावादी कहकर संबोधित किया था। चीन ने अब तक आधिकारिक रूप से सिक्किम को भारत का हिस्सा नहीं माना है। तब है कि इधर हाल के वर्षों में दोनों देशों के रिश्तों का तनाव अवश्य कुछ घटा है। अटल जी की इस चीन यात्रा ने इसे और मजबूती प्रदान की है।

एक विस्तृत रपट

विश्व हिंदी सम्मेलन का सातवाँ सफर

हिंदी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने का प्रयास

विचार कार्यालय, दिल्ली

हिंदी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने के उद्देश्य से अटलांटिक महासागर की लहरों से अभिषिप्त सूरीनाम की सुरम्य राजधानी पारामारिबों में 5 जून से 9 जून तक आयोजित सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ। 5 जून जहां भारत में संपूर्ण क्रान्ति दिवस के रूप में याद किया जाता है वहीं यह दिन सूरीनाम के इतिहास में इसलिए महत्वपूर्ण है कि भारतीयों का पहला जत्था सूरीनाम की धरती पर इसी दिन 1873 में पैर रखा था और तब से लेकर आज तक साढ़े पाँच लाख की आबादी वाले सूरीनाम में भारतीय मूल के लोगों ने अपनी संस्कृति और भाषाई विरासत को संजोकर रखा है। भारत के लोग दुनिया में कहीं भी रहें अपनी धरती और अपनी संस्कृति की खुशबू कभी नहीं भूलते। उनकी जीवन शैली भले ही बदल जाए लेकिन उनके स्वभाव में भारतीयता सदा जिंदा रहती है। सूरीनाम इस बात का जीता जागता उदाहरण है जहाँ जर्रे-जर्रे में भरतीयता सांस लेती है।

सम्मेलन कब और कहाँ-सूरीनाम में हुए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के पूर्व पहला सम्मेलन 1975 में नागपुर (भारत), दूसरा 1976 में पोर्टलुई (मारीशस), तीसरा 1983 में नई दिल्ली, चौथा 1993 में पुन: पोर्टलुई(मारीशस), पाचवाँ 1996 में पोर्ट ऑफ स्पेन(त्रिनिडाड) (एंडटोबैगो) तथा छठा 1999 में लंदन में आयाजित किया गया था।

घोषित उद्देश्य

सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के निम्नलिखित पाँच उद्येश्य घोषित किए गए थे-

1. *अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका को उजागर करना*
2. *विभिन्न देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की स्थिति का आकलन करना और सुधार लाने के तौर-तरीकों का सुझाव देना।*
3. *हिंदी भाषा और साहित्य में विदेशी विद्वानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना।*
4. *प्रवासी भारतीयों के बीच अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी का विकास करना।*
5. *विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास और संचार के क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी का विकास करना।*

विचार-विमर्श के लिए प्रस्तुत आलेख

इस सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए और उन पर विचार विमर्श हुए-

1.हिंदी और इंटरनेट 2.हिंदी में कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के बदलते परिदृश्य 3. देवनागरी लिपी कम्प्यूटर के संबंध में 4. हिंदी के नए सॉफ्टवेयर 5.हिंदी और रेडियो 6. हिंदी और दूरदर्शन 7. हिंदी और सिनेमा 8. हिंदी के सीडी एवं ऑडियो कैसेट 9. नयी बाजार व्यवस्था और हिंदी 10. रोजगार और हिंदी 11. विज्ञापन और हिंदी 12. हिंदी और पर्यटन उद्योग 13. भारतेत्तर देशों में सांस्कृतिक केंद्रों में हिंदी शिक्षण 14. हिंदी शिक्षण का तकनीकी रूप 15. विश्व की अन्य भाषाएं और हिंदी कोश 16. हिंदी की उच्च शिक्षा के अध्ययन में विभिन्न देशों का योगदान 17. हिंदी पुस्तकालय के विभिन्न पहलू 18. हिंदी अनुवाद की समस्याएं 19. हिंदी भाषा व्याकरण और मानकीकरण की समस्या इसके अतिरिक्त कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें देश-विदेश तथा स्थानीय हास्य व्यंग्य के कवि एवं गीतकारों ने अपने काव्य सुधा-रस का पान कराया। इस प्रसंग में यह बताना यथोचित होगा कि प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि, दूसरे में 20 देश, तीसरे में 6556 प्रतिनिधि भारत के तथा भारत के बाहर के 26, चौथे में 22 देशों के प्रतिनिधि, पाँचवे में 35 देशों के 350 और छठे में 500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। भारत से 17 हजार किलोमीटर दूर सूरीनाम के इस सातवें सम्मेलन में भारतीय 70 प्रतिनिधियों के दल का नेतृत्व किया विदेश राज्य मंत्री दिग्विजय सिंह ने। इसके अतिरिक्त लगभग 300 लोगों का एक बड़ा दल भी भारत से सूरीनाम गया।

उद्घाटन सत्र

सम्मेलन का उद्घाटन 5 जून को हुआ। उद्घाटन सत्र का विषय था-हिंदी: नई शताब्दी की चुनौतियां और समाधान, जिसमें मुख्य व्याख्यान सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान , कवि और भारत में पोलैंड के राजदूत रह चुके प्रो. ब्रिस्की ने दिया। इस सत्र में इंग्लैंड,

अमेरिका और चीन के विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए। हिंदी सम्मेलन के सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान जहाँ भोजपुरी हिंदी एवं मगही की मशहूर गायिका प्रो. शारदा सिन्हा का गायन हुआ वहीं निजामी बंधुओं की कव्वाली भी प्रस्तुत की गयी। सूरीनाम के अश्वेत राष्ट्रपति वेनेत्सियान ने सम्मेलन का उद्घाटन अंग्रेजी में किया। सम्मेलन में सूरीनाम की पूर्व लोकसभाध्यक्ष तथा इन दिनों प्रतिपक्ष की नेता और सूरीनाम की सबसे बड़ी हिंदी सेविका इंदिरा ज्वाला प्रसाद की अनुपस्थित सबको खली। डॉ. वेद प्रकाश वैदिक ने राष्ट्रपति वेनेत्सियान और प्रधानमंत्री रत्नकुमार अयोध्या से उनकी अनुपस्थिति का कारण पूछा तो वे बगले झांकने लगे। इसी प्रकार प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित करनेवाले मधुकर राव चौधरी और ललन प्रसाद व्यास के अतिरिक्त हिंदी के अनेक दिग्गज इधर-उधर उपेक्षित बैठे हुए दिखे। डॉ. वैदिक के अनुसार हिंदी पर राजनीति हावी है।

हिंदी सम्मेलन के पहले ही दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख-पत्र 'पांचजन्य' के संपादक तरुण विजय के सम्मेलन में वितरित एक लेख को लेकर हंगामा हो गया क्योंकि उस लेख में कहा गया था कि वामपंथी विचारधारा वाले पत्रकारों ने देश में नफरत का वातावरण तैयार किया तथा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल तत्वों की उपेक्षा की। लेख का विरोध करनेवालों ने इस बात पर आपत्ति की। सत्र के अध्यक्ष प्रभाष जोशी ने इस घटना पर दुख प्रकट करते हुए कहा कि सम्मेलन में गैर आधिकारिक दस्तावेज का वितरण गलत है। श्री जोशी ने पूंजी के कसते शिंकजे के मुकाबले समाजोन्मुख पत्रकरिता की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूंजी प्रेरित भूमंडलीकरण और संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट से उपजी स्थितियों का सामना हिंदी पत्रकारिता कैसे करेगी। इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती है। स्तंभ लेखक महीप सिंह ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता का विकास होने के साथ-साथ वैचारिक, साहित्यिक-सामाजिक पत्रकारिता विनष्ट हुई है। डॉ. वेदप्रकाश वैदिक ने कहा कि विश्व के बड़े परिवर्तन हिंदी में प्रतिबिंबित होने चाहिए। मारीशस के डॉ. वीरसेन जागा सिंह ने आग्रह किया कि हम हिंदी की खामियों को नहीं, विशेषताओं को देखें। इस सत्र के संयोजक तथा प्रभात खबर के संपादक हरिवंश ने कहा कि अंग्रेजी का वर्चस्व टूटे बिना हिंदी पत्रकारिता का विकास संभव नहीं तथा हिंदी पत्रकारिता विचारविहीन होकर जी नहीं सकेगी। सत्र के विशिष्ट अतिथि तथा सांसद दीनानाथ मिश्र ने यह आशा व्यक्त की कि सन् 2025 तक हिंदी का वर्चस्व होगा बशर्ते हिंदी टेक्नोलॉजी पर कब्जा कर लें और यह होगा ही। इस सत्र के हिंदी पत्रकारिता विषय पर तरुण विजय, रामशरण जोशी संपादक ओम थानवी तथा सूर्यकांत बाली मनोहरपुरी, मारीशस के सरिता बुद्धू तथा शंभूनाथ ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी के समक्ष वैश्वीकरण और एकरूपता का संकट है।

सम्मेलन ने एक सत्र में संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी विषय पर विस्तार से चर्चा के बाद हिंदी को इस वर्ष के अंत तक संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकारिक भाषा बनाने के एक प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से आग्रह किया गया कि वह इस दिशा में तेजी से कदम उठाए। इस तरह के प्रस्ताव नागपुर में हुए पहले सम्मेलन से लेकर पिछले सभी छह सम्मेलन में पारित हुए पर वही ढाक के तीन पात। आज तक उन पर अमल नहीं हो सका। सरकार की तरफ से विदेश राज्य मंत्री दिग्विजय सिंह ने सम्मेलन में कहा कि वाजपेयी सरकार हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने पर आनेवाला 100 करोड़ रुपए का प्रारंभिक खर्च वहन करने को तैयार है। डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि राष्ट्र में तो हिंदी को हम मान्यता नहीं देते और संयुक्त राष्ट्र में उसे मान्यता दिलवाने के लिए करोड़ों खर्च करना चाहते हैं।

'विश्व का आर्थिक परिदृश्य और हिंदी' विषयक सत्र में रघुवीर सहाय की ये पंक्तियां छायी रहीं-अंग्रेजी इस दुख को कह नहीं सकती। हिंदी कह नहीं पाएगी अगले साल। विषय पर बोलते हुए भोपाल के डॉ. रवि भूषण ने कहा कि वित्तीय पूंजी का युग है जो अत्यंत निर्मम है और मानवीय मूल्यों को नष्ट करती है। किंतु चूंकि हिंदी जन की भाषा है इसीलिए वह वित्तीय पूंजी से भी लड़ने में समर्थ है। विचार सत्र में भाकपा सांसद सरला माहेश्वरी ने वैश्वीकरण के परिदृश्य में उभरी हुई चुनौतियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि विश्व सत्ता का केंद्र जिस भाषा से जुड़ा होगा वही भाषा जीवित रह पाएगी। जरूरी है कि भाषाएं अस्तित्व के लिए परस्पर आदान-प्रदान करें। लखनऊ के डॉ. रमेश दीक्षित ने कहा कि आज अभिजनों के वर्चस्व को तोड़ने का कार्य हर दौर में आम जनता और स्थानीय भाषाओं ने ही किया है। मारीशस के रामदेव धुरंधर, इंग्लैंड की उषा राजे सक्सेना और सूरीनाम के महातम सिंह समेत कई दिग्गजों ने कहा कि प्रवासी भारतीय तभी हिंदी पढ़ते हैं जब उन्हें हिंदी भाषियों से पाला पड़ता है।

हिंदी सम्मेलन को 'हिंदू सम्मेलन' में बदलने का प्रयास-

सम्मेलन के एक सत्र में विश्व हिंदी सम्मेलन को 'विश्व हिंदू सम्मेलन' में बदलने का भी प्रय्रस किया गया। ऐसा कहना था सम्मेलन में उपस्थित साहित्यकार भगवत रावत, कमला प्रसाद और राजेश जोशी का। हुआ यूँ कि 'भारतीय सांस्कृति और हिंदी' विषयक सत्र के अध्यक्ष धर्मपाल मैनी ने अपने भाषण के दौरान हिंदू संस्कृति की विशेषताओं का विस्तार से उल्लेख करते हुए वर्णाश्रम व्यवस्था और पुनर्जन्म की अवधारणाओं की व्याख्या

प्रारंभ कर दी। इस पर हालैंड की सनातन धर्म महात्मा के अध्यक्ष श्याम पाण्डेय ने आपत्ति जताते हुए कहा कि सिर्फ हिंदू संस्कृति को भारतीय संस्कृति कहना उचित नहीं है। त्रिनिदाद टोबैगो से आए एक साधू ब्रह्मदेव उपाध्याय ने आगे बढ़कर एक वक्ता के सामने से माइक छीन लिया जो भारतीय संस्कृति को समग्र संस्कृति की तरह पेश कर रहे थे। इसी अफरातफरी के दौरान बिहार के प्रतिनिधि डॉ. रामबचन राय, डॉ. श्याम नन्दन शास्त्री तथा डॉ. राधाकृष्ण सिंह ने मंच पर चढ़कर सत्र के अध्यक्ष मैनी की बातों का विरोध किया। विरोध करनेवालों में नरेंद्र कोहली,बलेरिया की वाई बायानोवा, डॉ. श्रीकृष्ण तथा सूरीनाम की सुशीला बलदेव भी शामिल थे। मंच पर दोबारा माइक लगने पर 'भारतीय संस्कृति और हिंदी पर चर्चा के बजाए रामचरित मानस की चौपाइयों का पाठ प्रारंभ हो गया।

सम्मेलन के अंतिम दिन भारत के जिन दस तथा विदेशों के पंद्रह हिंदी सेवियों को सूरीनाम के उपराष्ट्रपति के रतन कुमार अयोध्या द्वारा को सम्मानित किया गया, वे इस प्रकार हैं-भारत के कुंवरनारायण, मृदुला गर्ग, धर्मपाल मैनी, शंकरलाल पुरोहित, ए.वी, राजगोपालन, वी.राम संजीवैय्या, प्रभाष जोशी, वेदप्रताप वैदिक, दयाकृष्ण विजयवर्गीय तथा प्रो. तंकमणि अम्मा।

अनुवाद भाषाओं का सेतु

समापन के एक दिन पूर्व 'हिंदी अनुवाद की समस्याएं ' विषयक सत्र में केरल विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. तंकमणि अम्मा ने अनुवाद को दो भाषाओं के बीच सेतु बताते हुए कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण अनुवाद को गति मिल सकती है। जानेमाने साहित्यकार गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि अनुवाद वह खिड़की है, जिसके जरिए हम दूसरी भाषाओं के साहित्य, उन्हें बोलने वाले लोगों के जीवन उनके समाज और चिंतन को जान पाते हैं। इसलिए अनुवादक का दर्जा भी मूल लेखक से कम नहीं आंका जाना चाहिए। रूस से आए हिंदी के विद्वान प्रो. वारान्निकोव ने कहा कि अनुवाद के लिए मूल भाषा के वातावरण और संस्कृति को समझना आवश्यक है। मैसूर के डॉ. बी. राम संजीवैय्या ने स्तरीय अनुवाद के लिए प्रशिक्षण को आवश्यक बताते हुए अनुवाद को सम्मान दिलाने के लिए उसे रोजी-रोटी से जोड़ने की बात कही। इसी प्रकार इटली की मरियोला आफ्रीदी ने कहा कि कविता का अनुवाद आसान है लेकिन गद्य का अनुवाद चुनौती भरा है।

कुछ खट्टे कुछ मीठे

यह बात ठीक है कि सूरीनाम में आयोजित इस सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के महाकुंभ में पहली बार विश्व के आर्थिक परिदृश्य और हिंदी एवं सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषयों पर मनन-चिंतन हुआ किंतु सरकार ने ऐसे साहित्यकारों को तरजीह नहीं दी, जिनकी हिंदी की समृद्धि में एक अलग पहचान है। भारत से 300 प्रतिनिधियों के दल में अधिकतर लोग अँगूठा टेक रहे या जिनका हिंदी से कोई लेना-देना नहीं रहा। बिहार के राजभाषा विभाग द्वारा भेजे गए प्रतिनिधियों पर भी ऊँगलियां उठीं और विभाग के अतिरिक्त जो अपने खर्च से सम्मेलन में भाग लिये उनकी पहचान हिंदी को विकसित करने के रूप में तो नहीं ही रही है बल्कि सच तो यह है वे किसी न किसी स्तर पर माफिया के रूप में जाने जाते हैं। एक ओर 'हंस' के संपादक राजेन्द्र यादव लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन की दर्दनाक घटनाओं की जानकारी मिलने पर ऐसे आयोजनों में जाने की सोच नहीं सकते। उनका मानना है कि इस तरह के सम्मेलन पिकनिक मनाने और विदेशी सामान लाने का अवसर प्रदान करते हैं। साहित्यकार कृष्णा सोबती मानती हैं कि वहां अंगूठा टेक के बीच जाने का कोई मतलब नहीं है बल्कि सच तो यह है कि ऐसे आयोजन से हिंदी भाषा का अवमूल्यन हो गया है। इसी प्रकार साहित्यकार केदारनाथ सिंह का कहना है कि लंदन विश्व हिंदी सम्मेलन में जिस तरह की खराब व्यवस्था हुई थी उसे देखते हुए वे अब कभी भी इस तरह के सम्मेलनों में नहीं जाने का विचार कर रहे हैं। वैसे विदेश मंत्रालय की ओर से उन्हें सातवें सम्मेलन में जाने का निमंत्रण विलंब से मिला था। केदारनाथ सिंह की ही तरह कवि कुँवर नारायण को भी बुलावा पत्र देर से मिला, जिसके कारण वे भी भाग न ले सके। इसी तरह बिहार से डॉ. कुमार विमल भी निधि की निकासी में देर होने के चलते वे भी नहीं जा सके। एक जानकारी के अनुसार सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में आयोजकों के व्यवहार से व्यथित वरिष्ठ कथाकार कमलेश्वर सूरीनाम के राष्ट्रपति महल की सीढ़ियों पर फूट-फूटकर रो पड़े। प्रतिनिधिमंडल के एक अन्य सदस्य मुकंद द्विवेदी सूरीनाम से तत्काल पूरे प्रतिनिधिमंडल के साथ दिल्ली वापस लौटने की इच्छा जताई। खैर जो हो, विश्व हिंदी सम्मेलनों में अफरा-तफरी का माहौल कोई नया नहीं है। तमाम अव्यवस्था की शिकायतें मिलती रहीं हैं फिर भी इन सम्मेलनों की सार्थकता से इंकार नहीं किया जा सकता।

छह प्रस्ताव पारित

सम्मेलन के अंत में आयोजित एक विशेष सत्र में निम्नलिलिखत छह प्रस्ताव पारित किए गए- हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षण संस्थाओं के बीच समवंय स्थापित करने, भारतवंशियों के बीच हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने, हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना, आधुनिक तकनीक के माध्यम से हिंदी का प्रचार तथा दुनिया के हिंदी विद्वानों की एक निदेशिका बनाने का प्रस्ताव।

भारत की धरती से 17 हजार किलोमीटर दूर लातिन अमेरिकी देश सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में 5 से 9 जून 2003 के बीच आयोजित इस सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में करीब 30 देशों के 400 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कहा जाता है कि अपनी भाषा और संस्कृति पर नाज करनेवाली नस्ल ही समाज में सम्मान पाती है और इस उक्ति को सूरीनाम में बबसे भारतवंशियों ने शत-प्रतिशत चरित्तार्थ कर दिया जो 130 साल पहले गन्ने के खेतों में गिरमिटिया मजदूर के रूप में काम करने गए थे लेकिन अपने धर्म और भाषा के बल पर आज सूरीनाम पर राज कर रहे हैं। भारत में हम भले ही भारतीय हो गए हों लेकिन सूरीनाम भारतवंशी आज भी खूद को हिंदुस्तानी कहलाना पसंद करते हैं और हिंदी भाषा के प्रति इनका प्रेम गजब का है। आश्चर्य की बात यह है कि देवनागरी लिपि के ज्ञान के अभाव में यहाँ हिंदी का पठन-पाठन रोमन लिपि के सहारे ही होता है। सूरीनाम की राष्ट्रभाषा डच है लेकिन बोलचाल में अलग-अलग देशों से यहाँ आकर बसे लोग अपनी मूल भाषा को डच के साथ मिलाकर बोलते हैं और इसीलिए यहाँ बोली जानेवाली हिंदी को सरनामी हिंदी कहा जाता है जिसमें 70 प्रतिशत अवधी, 20 प्रतिशत भोजपुरी तथा 10 प्रतिशत डच भाषा के शब्द होते हैं।

राम राम भईया....... कइसे रहलो....... मोईसे देखा न जाए.......डाला(डालर) का दमवा चढ़ता जा है.......यह संवाद रामनगरी अयोध्या की गलियों में नहीं बल्कि यह सात समुंदर पार बसे कैरेबियाई देश सूरीनाम में बसे भारतवंशियों की बोली का अहम हिस्सा है जहाँ लोगों ने अपनी हिंदुस्तानी जबान को अपने खून से सींचा है। सूरीनाम की गलियों में लोगों के बीच अवधी बोली के ये ठाठ आसानी से सुने-देखे जा सकते हैं। यही नहीं सूरीनाम में रहनेवाले भारतवंशियों ने न केवल अपनी-अपनी भाषाओं के साथ भारत को अपने दिल में बसा रखा है बल्कि अपने वतन की यादों को ताजा रखने के लिए 'बाम्बे' और 'लखनऊ' के नाम पर मोहल्ले बसाए हैं और आपको यहाँ लखनऊ स्ट्रीट, इंदौर स्ट्रीट, दिल्ली स्ट्रीट, अहमदाबाद स्ट्रीट और बाम्बे स्ट्रीट भी मिल जाएंगे। गली-मोहल्ले के साथ ही सूरीनाम नदी तट पर बसे पारामारिबो शहर को देखकर काशी की गंगा और गंगा तट पर बसे सौ से अधिक घाटों की भारतीय प्राचीनता का वैभव स्मरण हो आता है।

उल्लेखनीय है कि पूरे विश्व के 136 देशों में भारतीय प्रवासी हैं लेकिन इनमें से केवल चार देशों यानी मारीशस, फीजी, सूरीनाम और डरबन में ही राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रयोग करनेवाले लोग बसे हैं। हिंदी की व्यापकता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह विश्व के सौ देशों में बोली जाती है। इस प्रकार संसार में दूसरी सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हिंदी, जिसकी स्थिति अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में नगण्य-सी है को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उचित सम्मान दिलाने की चिंता हर भारतीय को होनी चाहिए। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हिंदी को भारत में ही अपेक्षित सम्मान, स्वीकृति और व्यापक संरक्षण नहीं मिल पा रहा है जिसके बिना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलना आसान नहीं है। हिंदी आज अपने ही घर में परायी बनी हुई है। जब तक हम अपना भाषायी दृष्टिकोण नहीं बदलते तब तक भाषायी गुलामी से हमें मुक्ति नहीं मिल सकेगी और तब तक विदेशों में हिंदी सम्मेलनों की सार्थकता पर भी प्रश्न चिन्ह उठते रहेंगे।

❖❖❖

भगवान महावीर जयंती के अवसर पर उद्गार व्यक्त करते हुए मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश'

बिहार को भारतीय रेलों के दो और उपहार

राष्ट्रपति की बिहार यात्रा

प्रस्तुतिः सिद्धेश्वर

जमीनी, व्यावहारिक विज्ञानी तथा स्वप्नदर्शी भारत के राष्ट्रपति डॉ.एपीजे. अब्दुल कलाम की पिछले दिनों बिहार यात्रा ने जहाँ उपेक्षित विकास के मुद्दे को गरमाया वहीं प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा कोसी रेल पुल के शिलान्यास के साथ उम्मीदों-संभावनाओं की हलचल भी पैदा की। भारतीय रेलों द्वारा इधर बिहार को दो और उपहार मिले। राष्ट्रपति कलाम ने जहाँ दक्षिण बिहार स्थित नालंदा के हरनौत में 98.74 करोड़ रुपए की लागत से बननेवाले रेल कोच फैक्ट्री की आधारशिला रखी वहीं प्रधानमंत्री वाजपेयी ने उत्तर बिहार के निर्मली में 323 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले कोसी रेल पुल का शिलान्यास कर सत्तर साल से दो भागों में बँटी मिथिला को अब एक होने का संकेत दिया। इस पुल के बन जाने के बाद सुपौल जिला मुख्यालय में वहाँ के लोगों को समस्तीपुर दरभंगा होकर जहाँ 298 कि.मी. का चक्कर लगाना पड़ता था अब सिर्फ 22 किलोमीटर की दूरी तय कर एक सिरे से दूसरी ओर पहुँच जाएंगे। उल्लेखनीय है कि 1934 में कोसी की तेज धार से इस नदी पर बना रेल पुल ध्वस्त हो चुका था और तब से आज तक बिहार के कितने रेलमंत्री यहाँ तक कि मिथिलांचल के भी रेलमंत्री हुए किंतु इस पुल की गंभीरता और चुनौती को किसी ने नहीं स्वीकारा। कहना

नहीं होगा कि रेल मंत्री नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री से इस पुल का शिलान्यास कराकर विकास के नाम पर की जा रही राजीनति को दरकिनार किया। कोसी महासेतु के निर्माण से उत्तर बिहार के विकास के रास्ते खुलेंगे। छह साल के बाद उस इलाके की स्थिति वह नहीं रह जाएगी जो आज है। विदित हो कि रेलवे द्वारा देश में इस वर्ष चार महासेतु के निर्माण की स्वीकृति मिली है। इनमें से तीन बिहार में है। गत वर्ष प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ही पटना तथा मुंगेर में गंगा पर बननेवाले दो रेल पुलों की आधारशिला रखी थी और कार्यों की शुरूआत भी करा दी थी।

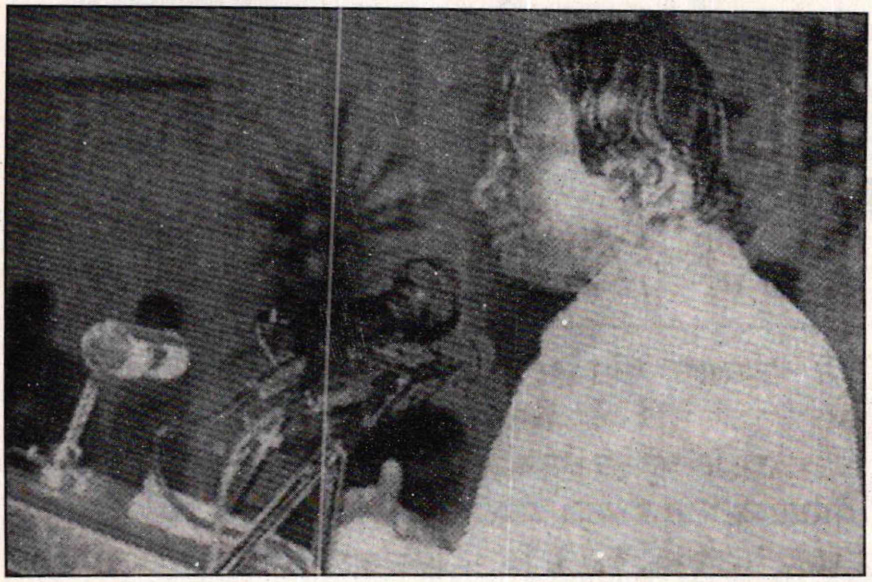

हरनौत रेल कारखाना का शिलान्यास

राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने हरनौत रेल कारखाने के शिलान्यास के पहले राजगीर में बनने वाले आयुध कारखाने का निरीक्षण भी किया। हरनौत रेल कारखाने की आधारशिला के वक्त राष्ट्रपति ने बिहार के चहुंमुखी विकास के लिए हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, लघु उद्योग क्रांति एवं शैक्षणिक क्रांति पर विशेष बल दिया। उन्होंने बिहारवासियों को सुझाव दिया कि जो बीता सो बीत गया, अब वर्तमान को गढ़े। बिहार के चौतरफा विकास के लिए सृजनात्मक नेतृत्व की जरूरत है, राष्ट्रपति ने कहा। अपने विजन-2020 से संबंधित आंकड़ों के पाँच

अलग-अलग चार्ट का प्रदर्शन करते हुए करीब आधे घंटे तक राष्ट्रपति ने करवट लेती दुनिया के बारे में बिहार के विधायकों को समझाया। राष्ट्रपति ने अपनी बिहार यात्रा के दौरान भगवान महावीर के समर्पित उपासक के समान पावापुरी (नालंदा) स्थित प्रसिद्ध जल मंदिर में पूजा की और तालाब के बीच पानी में निर्मित मंदिर से काफी प्रभावित हुए। फिर वहां से वे गांव मंदिर, जहाँ भगवान महावीर ने अंतिम प्रवचन दिया था, जाकर पूजा-अर्चना की और साध्वी ज्ञानमति माता से आशीर्वाद प्राप्त किया। डॉ. कलाम की बिहार यात्रा से आमजन जीवन तो आंदोलित होता दिखाई देता है पर पता नहीं सपनों में कुर्सी लिए राजनेताओं को जनता की धड़कनें सुनाई देगी या नहीं। व्यक्ति से बड़ा राष्ट्र होता है, राष्ट्रपति का यह उद्गार राजनेताओं के मानस को कितना झकझोर कर असर डालता है

यह तो आनेवाला समय ही बताएगा। बहरहाल इतना तो जरूर है कि राष्ट्रपति ने बिहार के विकास के लिए सृजनात्मक नेतृत्व की बात कहकर यहाँ के निवासियों पर एक बड़ा दायित्व दे डाला है। आर्थिक संपन्नता, उन्नत तकनीक, उत्पादकता और प्रबंधन की दक्षता और उससे जुड़ी सभी संभावनाएं कुशल नेतृत्व पर निर्भर है। आखिर रेलमंत्री नीतीश कुमार को उनके कुशल नेतृत्व के चलते ही तो सराहा जा रहा है और विकास पुरुष की संज्ञा दी जा रही है। गंगा और कोसी नदी पर तीन रेल पुलों के निर्माण बाढ़ में एन.टी.पी.सी. के 2000 किलोवाट का उर्जा संयत्र, राजगीर में आयुध कारखाने की शुरूआत तथा हजारों किलोमीटर राष्ट्रीय उच्चपथ के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाकर रेलमंत्री नीतीश कुमार ने बाजी मार ली है और कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत के साथ-साथ बिहार में रेलों का जाल बिछाकर विकास पुरुष के रूप में अपना नाम अंकित करा लिया है। इसमें कतई संदेह नहीं कि राजनीतिक उलट-फेर से लोग अब ऊबने लगे हैं और लोगों में विकास के लिए ललक पैदा हो गयी है आखिर तभी तो बिहार के हर मोड़ पर रेल मंत्री द्वारा रेल तथा सड़क के निर्माण की दिशा में उठाए गए कदम की चाप हर स्तर के लोगों के मुंह से सुनाई पड़ रही हैं। जाति और संप्रदाय से ऊपर उठकर लोग विकास की चर्चा करने के दौरान नीतीश कुमार का नाम लेना नहीं भूलते। हालांकि यह भी सच है कि कुछ राजनीतिक दलों के नेताओं की आँख के वे इसी के चलते किरकिरी बनते जा रहे हैं। चाहिए तो यह था कि नीतीश कुमार के कदमताल पर वे भी चलकर राज्य के विकास को गति प्रदान करते किंतु उनकी विचारधारा कुछ उलटी दिशा में बहती दिखती है, कारण कि उनकी नजर केवल वोट पर है न की विकास पर। क्या ऐसे राजनेता राज्य के विकास की खातिर अपनी नजरिया बदल नहीं सकते? यदि नहीं तो मतदाता और यहाँ की जनता उनकी नजरियां बदल देगीं।

रेल विकास के मामले में मॉडल राज्य बनेगा बिहार। रेलमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि बिहार रेल विकास के मामले में मॉडल राज्य बनेगा तथा सभी के व्यापक सहयोग से वे इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आजादी के बाद राष्ट्रीय रेल विकास योजना के अंतर्गत बिहार को अबतक की सबसे बड़ी राशि प्राप्त हुई है तथा पूरे देश में स्वीकृत चार में मेगाब्रीज में तीन बिहार के खाते में आए हैं और इन तीनों के बनने से संबंधित क्षेत्र का विकास होगा तथा लोगों को काफी फायदा होगा।

उल्लेखनीय है कि इस समय रेलवे की सबसे अधिक परियोजनाएं हाजीपुर में नवगठित मध्य पूर्व रेलवे में चल रही है। इस रेलवे में इन दिनों कुल मिलाकर 23 परियोजनाएं चल रही हैं। वैसे पूरे देश में इस समय तकरीबन 22125 करोड़ रुपए लागत से कुल 233 रेल परियोजनाओं पर काम चल रहा है जिनमें नई लाइनें बिछाने, दोहरीकरण करने, रेल पुल बनाने तथा रेल मार्गों का विद्युतीकरण शामिल हैं। इसी प्रकार पूर्वी रेलवे में 22 दक्षिण रेलवे में 22 तथा दक्षिण मध्य रेलवे को 20 परियोजनाएं की स्थिति में इन परियोजनाओं के पूरा होने से यातायात और मालवाहन की स्थिति में काफी सुधार होने की उम्मीद है, किंतु बढ़ती रेल दुर्घटनाओं के कारण भारतीय रेल की छवि पर असर तो पड़ ही रही है। पिछले दिनों मुंबई में हुई ट्रेन दुर्घटना ने आखिर 34 लोगों की जान ले ही ली।

❖❖❖

अपराध नहीं, आपराधिक मनोवृति बढ़ रही
"अहिंसा" में भाव, भंगिमा सब कुछ भरने का प्रयास

प्रधानमंत्री द्वारा "अहिंसा" का लोकार्पण

विचार कार्यालय, दिल्ली

अहिंसा को लेकर मेरे मन में हमेशा एक द्वंद्व रहा है। अहिंसा किस सीमा तक जाए या हिंसा किस सीमा तक जाए। एक द्वंद्व मन में देश की रक्षा, आत्मरक्षा यहाँ तक तो हिंसा की बात गले के नीचे उतर सकती है। लेकिन इसके बाद? भारत जैसे देश में बढ़ती हुई हिंसा इस संसार को क्या संकेत देती हैं। क्या हिंसा की कोई सर्वसम्मत परिभाषा हो सकती है? ऐसी परिभाषा, जो हर परिस्थिति में से हमको असमंजस से निकालकर ले जाए। मैं विद्वानों को इसके लिए निमंत्रण देता हूं। एक दिन इसी पर चर्चा करने के लिए हम इकट्ठा हों। ये उद्गार हैं प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के, जिसे उन्होंने पिछले दिनों नई दिल्ली में पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर द्वारा संपादित पुस्तक "अहिंसा" का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए। समारोह में मानव संसाधन एवं विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी तथा प्रखर सांसद डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी भी उपस्थित थे।

'अहिंसा' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए प्रधानमंत्री वाजपेयी के साथ हैं डॉ. मुरली मनोहर जोशी, डॉ. एल.एन. सिंघवी तथा लेखक पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर

प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने प्रभाकर जी को इस महाग्रंथ की रचना के लिए बधाई देते हुए कहा कि अहिंसा के संबंध में उनका योगदान उल्लेखनीय रहेगा। ग्रंथ की महत्ता डॉ. सिंधवी के आमुख से और भी बढ़ गयी है। प्रधानमंत्री ने पुनः कहा कि इस बढ़ती हुई हिंसा के मूल में क्या है? क्या हिंसा को हिंसा से रोका जाएगा? तब तो वह अहिंसा पर विजय नहीं होगी। वह तो पराजय होगी। हथियारों के बल पर अगर अहिंसा कायम रखनी है तो उसकी एक सीमा होगी। क्या मनुष्य का मन बदलेगा। क्या बदलते हुए मन के कोई संकेत मिल रहे हैं?

कठिनाई है अहिंसा को लेकर और मैं चाहता हूँ कि इस पर मंथन हो। रेखाएं खींची जाएं। हम अपने देश में रेखाएं नहीं खींच पा रहे हैं। अपराध नहीं बढ़ रहे हैं, आपराधिक मनोवृति बढ़ रही है। धर्म की इतनी चर्चा, संस्कृतिक का इतना गुणगान और परिणाम यह है कि अपराधों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। इसके बारे में कुछ विचार करने की आवश्यकता है। और आज का अगर यह कार्यक्रम इस संबंध में हमें विचार के लिए प्रेरित करता है तो मैं समझूंगा कि इस पुस्तक का दोहरा लाभ हो गया है, प्रधानमंत्री ने पुनः कहा।

सम्मान

साहित्य-संस्कृति को समर्पित राष्ट्रीय संस्थान साहित्यकार संसद की ओर से पिछले दिनों रेल सभा भवन, समस्तीपुर के इन्द्रालय में आयोजित सम्मान समारोह में सुशीला झा को उनके 'वामा बोलती है' काव्य-संग्रह के लिए वर्ष 2003 ई. के मीराबाई राष्ट्रीय शिखर सम्मान से विभूषित एवं अलंकृत किया गया।

'मैन ऑफ लेटर्स' से सम्मानित

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान में लगे विद्वानों को सम्मानित करना संतोषदायक होता है। ये उद्गार हैं दलाई लामा के, जिसे उन्होंने विश्व बैंक के पूर्व कार्यकारी निदेशक बाल्मिकि प्र० सिंह को 'मैन ऑफ लेटर्स' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए व्यक्त किए।

राष्ट्र में शांति एवं सुरक्षा के लिए शांति मिसाइल की जरूरत — राष्ट्रपति डॉ कलाम

पूरे साहित्य में अपने ढंग की अलग प्रस्तुति

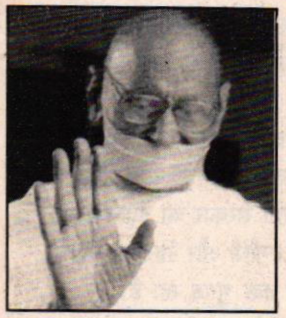

पिछले 23 जून, 2003 को आचार्य महाप्रज्ञ के दो ग्रंथों — "Finding your Spiritual centre" एवं "The Quest for Truth" का लोकार्पण करते हुए राष्ट्रपति डॉ ए. पी.जे. अब्दूल कलाम ने कहा कि आज देश को शांति एवं सुरक्षा के लिए परमाणु शस्त्रों के साथ-साथ अहिंसक एवं शांति मिसाइल की जरूरत है, अमन एवं शांति के लिए अहिंसक मूल्यों की अधिक आवश्यकता है। जैन श्वेताम्बर पंथ के दसवें आचार्य प्रमुख महाप्रज्ञ के चौरासीवें जन्म दिवस पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में भगवान महावीर के शांति, अहिंसा तथा अनेकांत के सिद्धांतों की आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ. कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ की 200 पुस्तकों में बिखरे विचारों की माला के रूप में प्रस्तुत उक्त पुस्तकों की उपादेयता पर प्रकाश डाला। आचार्य महाप्रज्ञ ने इन पुस्तकों पर विभिन्न धर्म एवं मतों के सार्वभौमिक सिद्धांतों को भी उजागर किया है।

इस अवसर पर उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने अंग्रेजी लेखक ऑलविन डॉल्फर की एक पुस्तक को उद्धृत करते हुए बताया कि यद्यपि इसमें शक्ति बल, नैतिक बल तथा धन बल शक्ति के इन तीन केंद्रों की चर्चा की गई है, किंतु हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही अध्यात्म को शक्ति का केंद्र माना गया है, जिसे आगे बढ़ाने का काम आचार्य महाप्रज्ञ कर रहे हैं।

ग्रंथ का लोकार्पण करते राष्ट्रपति डॉ. कलाम के साथ हैं लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. एल.एन.सिंघवी एवं देवचंद दुगड़

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रमुख शिष्य तथा अहिंसा यात्रा के प्रवक्ता मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्य संस्कृति की सुरक्षा करता है। वह युग-युग की आस्थाओं को बदलने की क्षमता रखता है। इस दृष्टि से आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक का सबसे बड़ा अवदान यह है कि इसमें ध र्म को विज्ञान से जोड़ा गया है और इस पुस्तक में प्रस्तुत उनके विचारों में समस्याओं के साथ-साथ अध्यात्म के धरातल पर उनके समाधान भी बताया गया है। विधि वेत्ता एवं सांसद डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने इन दोनों पुस्तकों को आचार्य महाप्रज्ञ की साधना, बुद्धि और ज्ञान का संपूर्ण पुस्तकालय बताया।

प्रारंभ में "Finding your Spiritual centre" के संपादक रंजीत दुगड़ के पिता देवचन्द दुगड़ तथा "The Quest for Truth" का हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करनेवाली श्रीमती सुधामही रघुनाथन ने राष्ट्रपति को लोकार्पण के लिए समर्पित किए। इसके बाद अहिंसा यात्रा केंद्रीय समिति के संयोजक सुरेन्द्र चोरड़िया ने राष्ट्रपति डॉ. कलाम को, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रधान ट्रस्टी कन्हैयालाल पटावरी ने उपप्रधानमंत्री को तथा शांतिकुमार जैन ने डॉ. एल.एन. सिंघवी को प्रतीक चिन्ह भेंट किए। मुनिश्री कुमुद कुमार तथा मुनिश्री अक्षय कुमार के मंगलाचरण से प्रारंभ कार्यक्रम का संचालन मांगीलाल सेठिया ने किया। कार्यक्रम में अन्य महत्वपूर्ण लोगों में डॉ. मनमोहन सिंह, साहिब सिंह वर्मा, हरेन पाठक, डॉ. संजय पासवान, मदनलाल खुराना के अतिरिक्त अनेक शिक्षाविद्, साहित्यकार, पत्रकार के साथ-साथ **विचार दृष्टि** के संपादक सिद्धेश्वर भी उपस्थित थे। आभार व्यक्त किया रंजीत दुगड़ ने।

बिजली, पानी को लेकर अनशन

पटना महानगर समता का प्रदर्शन

विचार संवाददाता, पटना

एक-दो दिन खाना न मिले तो पानी पीकर आदमी किसी तरह रह ले सकता है किंतु जब पीने का पानी भी उसे न मिले तो समझिए उसका दिन कैसे कटेगा। एक तो बिजली की आँख-मिचौनी ने बिहार के प्राय: सभी क्षेत्रों को तबाह कर रखा है तो जल-जमाव से लोगों का चलना-फिरना दूभर हो गया है। पिछले एक माह से पटना नगर निगम क्षेत्रांतर्गत निरंतर गंदे पानी की आपूर्ति और उसके बाद बिजली की बाधित आपूर्ति से एक ओर जहाँ नगर के लोगों को प्रचंड गर्मी से परेशान होना पड़ा तो दूसरी ओर थोड़ी ही वर्षा होने से नगर के निचले इलाके में जल-जमाव हो गया और उस क्षेत्र के लोगों के जीवन नारकीय हो गया।

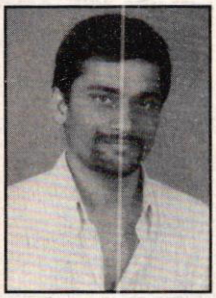

गर्मी के मौसम से त्रस्त नागरिकों को थोड़ी वर्षा से जहाँ राहत मिली वहीं निगम के दावों की पोल खुल गयी। इस बरसात के कारण शहर में जगह-जगह पर पानी भर गया। जल-जमाव के कारण नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। ध्यातव्य है कि निगम द्वारा लाखों रुपए सभी नाले व नालियों की सफाई करवाई जाती है पर इस भारी-भरकम राशि का खर्च कहाँ पर किया जाता है यह तो निगम के अधिकारी ही बता सकते हैं। यही हाल है बिजली बोर्ड का भी। घोषित अघोषित बिजली की कटौती के चलते एक तो गर्मी के मारे लोग परेशान रहते हैं तो दूसरी ओर बिजली के अभाव में पानी का पंप भी नहीं चल पाता है। फलस्वरूप पानी के लिए भी लोगों को परेशानी होती है।

बिजली, पानी तथा जल-निकासी के संकट को पिछले दिनों पटना महानगर समता की ओर से आयकर गोलंबर के समीप एक दिवसीय प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से उसके नव निर्वाचित अध्यक्ष नागेश्वर सिंह स्वराज ने एक दिन का सांकेतिक अनशन किया। इस अनशन में बिहार प्रदेश समता पार्टी के काफी सदस्यों ने उनका साथ दिया। इस अवसर पर समता विधायक दल के नेता उपेन्द्र प्रसाद कुशवाहा ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि पानी, बिजली तथा जल-निकासी की समस्याओं का निदान यदि सरकार शीघ्र नहीं निकालती तो इस सवाल को लेकर वे बिहार विधानसभा में सरकार की नींद हराम करेंगे। विधान सभा सदस्य रामचरित्र प्रसाद ने भी अपने उद्‌बोधन में इन समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। बिहार प्रदेश प्रबुद्ध समता के सिद्धेश्वर ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए इन ज्वलंत समस्याओं के निदान हेतु जन चेतना जागृत करने पर बल दिया और इसके लिए जनांदोलन की आवश्यकता जताई। इस अनशन कार्यक्रम में जिन अन्य नेताओं ने अपनी बातों को पूरजोर ढंग से रखते हुए जनता और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया उनमें रवीन्द्र कुमार, रामेश्वर सिंह, अजय कुमार घोष, जितेन्द्रजी, अनिल कुमार सिंह, धनंजय कुमार आदि का नाम प्रमुख है। युवा समता के मदन प्रसाद ने सफल मंच-संचालन किया। अंत में नींबू-पानी से स्वराज का अनशन तोड़वाया विधायक रामचरित्र प्रसाद ने।

संपूर्ण क्रांति दिवस पर पटना ने जे. पी. को याद किया

विचार कार्यालय, पटना

पिछले 5 जून को पटना के श्रीकृष्ण स्मारक भवन में अखिल भारतीय संपूर्ण क्रांति मंच द्वारा जे.पी. जन्म शताब्दी वर्ष में आयोजित संपूर्ण क्रांति दिवस समारोह के मुख्य अतिथि, तथा लोजपा अध्यक्ष रामविलास पासवान ने केंद्र तथा बिहार सरकार की नीतियों को आड़े हाथों लेते हुए वैचारिक क्रांति की आवश्यकता जताई। संपूर्ण क्रांति के जे.पी. के अधूरे सपने के कारणों का विश्लेषण करते हुए श्री पासवान ने कहा कि जे.पी. ने वही गलती की जो बापू ने आजादी के बाद नेहरू को सत्ता सौंपकर की थी। यदि गाँधी जी कुछ दिनों के लिए ही सही सरकार का नेतृत्व स्वयं संभाल लेते तो पूरे देश की दिशा बदल गयी होती। गाँधी और नेहरू के सपने अलग-अलग थे। इसका खामियाजा देश आज तक भुगत रहा है।

समारोह को जनता पार्टी के अध्यक्ष डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने भी संबोधित किया। इसके पूर्व स्थानीय विद्यापति भवन में जनता पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन में उन्होंने जहाँ एक ओर भाजपा को अपना टारगेट बनाया वहीं सोनिया गाँधी को भी जमकर कोसा। श्री स्वामी ने भाजपा के अंत होने की बात कही।

प्रारंभ में स्वागताध्यक्ष ब्रजमोहन सिंह ने कहा कि आज पक्ष-विपक्ष दोनों संदेह के घेरे में हैं क्योंकि सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों ने पिछले 22 वर्षों से भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है और जैसे भी हो, सत्ता में बने रहने का प्रयास किया। क्रांति और संघर्ष की भूमि रहते हुए भी बिहार के लोग आज मौन हैं जबकि चौहत्तर की तुलना में आज भ्रष्टाचार कई गुणा अधिक हो गया है। जन प्रतिनिधि जनता का विश्वास खो चुके हैं।

इस अवसर पर परेश सिन्हा ने जहाँ 'कौन जाने यहाँ कब होगा सबेरा' अपनी कविता सुनाई वहीं बाबू लाल मधुकर ने मगही कविता का पाठ कर आज की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थिति को सामने रखा। समाजवादी जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व विधायक अयूब खान ने आयोजन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए संपूर्ण क्रांति मंच के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा आज की विषम एवं भयावह स्थिति में लोकशक्ति जाग्रत करने पर बल दिया। विधायक आश्विनी कुमार चौबे ने आज के इस मंच पर जे.पी. आंदोलन से जुड़े नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं की अनुपस्थिति पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि लोकशक्ति, मातृशक्ति के बिखरने के साथ-साथ आंदोलन से जुड़े लोगों के बीच आपसी तालमेल नहीं होने के चलते भी आज बिहार की ऐसी स्थिति है।

विकलांगों के पुनर्वास के कार्यक्रमों में तेजी लाने की जरूरत

- कैलाशपति मिश्र

हेल्थ इंस्टीच्यूट, बेऊर में ऑडियोलॉजी विभाग का उद्घाटन

विकलांगों के उपचार और पुनर्वास का कार्य पीड़ित मानवता की एक बड़ी सेवा है। पूरे देश में विभिन्न तरह की विकलांगता के शिकार लोगों की एक बड़ी संख्या है, जिसके लिए आधुनिक तकनीक के साथ पुनर्वास के कार्यक्रमों में तेजी लाने की जरूरत है। यह विचार कल यहां बेऊर स्थित इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च के नवनिर्मित सहस्राब्दि भवन में ''ऑडियोलॉजी एण्ड, स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी विभाग'' का उद्घाटन करते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम कैलाशपति मिश्र ने व्यक्त किए।

श्री मिश्र ने गुजरात और बिहार की कार्य संस्कृति पर तुलनात्मक विवेचन करते हुए कहा कि जब तक बिहार प्रान्त के प्रबुद्धजन आपसी द्वेष भूल कर विकास के कार्यों में एक-दूसरे की मदद नहीं करेंगे, तब तक बिहार अपनी पुरानी प्रतिष्ठा नहीं अर्जित कर पायेगा। विकास और समृद्धि तभी आयेगी। उन्होंने कहा कि विकलांगों तथा अन्य रोगियों के लिए जो सुविधाएँ इस संस्थान द्वारा उपलब्ध कराई जा रही हैं, उससे उन्हें बहुत उम्मीदें जगी हैं। इस हेल्थ इंस्टीच्यूट को देखकर मुझे विश्वास हुआ है कि बिहार प्रांत में भी गुजरात में कार्य कर रही संस्थाओं की तरह कार्य किए जा सकते हैं। उन्होंने राज्य के प्रबुद्ध लोगों से इस तरह की संस्थाओं को सहयोग देने की अपील की।

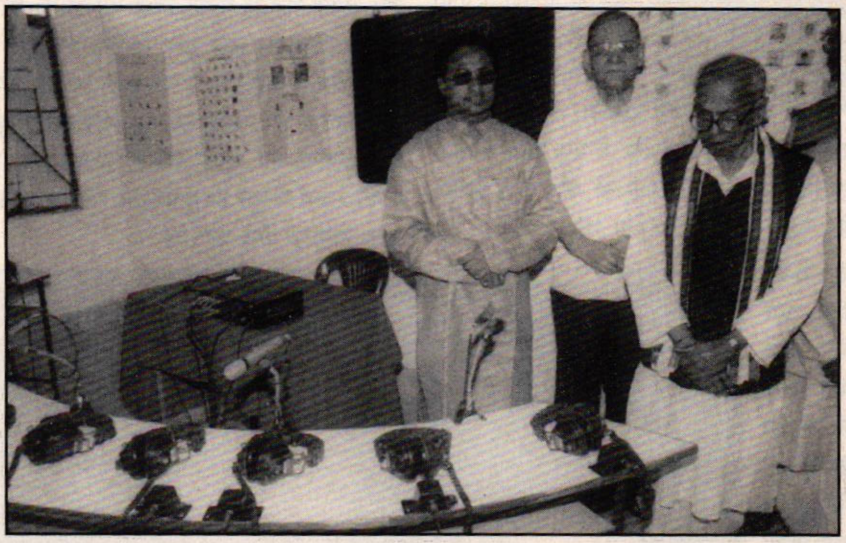

इसके पूर्व अतिथियों को स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक-प्रमुख अनिल सुलभ ने कहा कि उनके सद्यः लोकार्पित ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी विभाग में इम्पीडेन्स सहित कई कम्प्यूटराज्ड आधुनिक उपकरण लगाये गये हैं, जिसके द्वारा बहरेपन की एकदम सटीक जाँच की जा रही है तथा सुनने और बोलने से संबंधित सभी प्रकार के रोगों का उपचार किया जा रहा है।

श्री सुलभ ने कहा कि यह राज्य के लिए गौरव की बात है कि इस संस्थान में पहली बार फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, स्पीच थेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक और मेन्टल रिटार्डेशन जैसे पुनर्वास के पाठ्यक्रमों में स्नातक स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। यह राज्य का पहला संस्थान है, जिसे भारतीय पुनर्वास परिषद, भारत सरकार ने मान्यता प्रदान की तथा मगध विश्वविद्यालय ने संबंधन दिया। उन्होंने कहा कि इसी परिसर में शारीरिक, मानसिक और श्रवण तथा वाक् दोषों से पीड़ित विकलांगों की निःशुल्क चिकित्सा दी जा रही है तथा ऐसे विकलांग बच्चों के लिए ''ए न्यू होम'' नामक विशेष विद्यालय भी चलाया जा रहा है, जिसमें विशेष शिक्षा के अतिरिक्त व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं, ताकि वे समाज पर बोझ न बनें, बल्कि समाज को कुछ देने लायक बने।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि विधायक नन्दकिशोर यादव, विधान पार्षद गंगा प्रसाद, मगध विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर बलवीर सिंह भसीन, अवकाश प्राप्त आइ.ए.एस. अधिकारी एस.एन. सिंह, बिहार लोक सेवा आयोग की अध्यक्ष डा. रजिया तबस्सुम, के.सी. वाजपेयी, श्याम बिहारी प्रभाकर तथा प्रो. हाशिम खान ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध चिकित्सा शिक्षा शास्त्री डा. के.सी. ब्रह्मा ने की। धन्यवाद ज्ञापन स्पीचथेरापी के कोर्स निदेशक डॉ जे.एल.साह ने किया। संचालन सहयोग डा. विकास कुमार सिंह तथा डा. अवनीश रंजन ने किया।

इस अवसर पर इंडियन सोसाइटी ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स तथा हेल्थ इंस्टीच्यूट के संयुक्त तत्वावधान में राज्य के दस विशिष्ट व्यक्तियों को राज्य गौरव से सम्मानित किया गया। जिनमें डा. रजिया तबस्सुम, मेजर बलवीर सिंह भसीन, नन्द किशोर यादव, कृष्ण प्रसाद खत्री, प्रो. ध्रुव कुमार, आचार्य पुनीत आलोक 'छवि', डा. यशोधरा राठौर, डा. प्रतिभा शंकर, के. एम. झा तथा दीपक कुमार अग्रवाल के नाम शामिल हैं। समारोह के प्रारंभ में संगीताचार्य श्याम किशोर के निर्देशन में संस्थान के विकलांग बच्चों ने अभिनंदन गीत से अतिथियों का स्वागत किया।

संपर्कः इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, बेऊर, पटना-2

भाजपा का सत्ता चिंतन प्रकृति की गोद में

विचार कार्यालय, मुंबई

मुंबई से लगभग 70 किमी दूर अरब सागर के किनारे भायंदर के समीप उत्तन गांव में रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी संस्था के केशव सृष्टि संकुल में भाजपा की चिंतन बैठक हुई जिसमें इस साल होने वाले चार राज्यों के विधान सभा चुनावों की रणनीति तय करने के अतिरिक्त अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ। सत्ता चिंतन के इस में बैठक भाजपा के चोटी के नेताओं ने उक्त चुनाव के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों से तालमेल पर भी चर्चा की। 17 जून से 19 जून तक चलनेवाले इस शिविर में एक साल में पार्टी व सरकार द्वारा तय किए गए सफर की समीक्षा भी की गई। 'मिशन 2004' ही इस बैठक की विषय सूची और एजेंडा था।

भाजपा की इस चिंतन बैठक में इस बार प्रधानमंत्री एवं उपप्रधानमंत्री द्वारा चयनित सिर्फ 27 प्रतिनिधियों ने ही भाग लिया और उसमें भी पार्टी की कमान युवा-पीढ़ी को सौंपने की तैयारी स्पष्ट नजर आया। संघ तथा विहिप प्रतिनिधि के तौर पर भी इस बैठक में शामिल हुए व्यक्ति कुप सी. सुदर्शन, अशोक सिंहल या वाजपेयी के हमउम्र नहीं, बल्कि नायडू और महाजन के कदमताल करनेवाले संघ के संयुक्त महासचिव मदनदास देवी जैसे लोग थे। 'रार नहीं ठानूँगा, हार नहीं मानूँगा' के रचयिता श्री वाजपेयी लोकसभा चुनाव में सत्ता विरोधी लहर से चिंतित जरूर हैं मगर हार नहीं मानूँगा की प्रेरणा उन्हें 2004 के लिए कमर कसने को मजबूर कर रही है मगर संगठन की खामियाँ आपसी कलह, निजी महत्वाकांक्षा एवं सत्ता की लोलुपता फतह करने में बाधक होगी, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता।

उपचुनावों में कांग्रेस तथा माकपा ने बाजी मारी

विचार कार्यालय, दिल्ली

पिछले जून में पश्चिम बंगाल तथा हिमाचल प्रदेश के जिस लोकसभा तथा विधानसभा सीटों के लिए उपचुनाव हुए उनमें माकपा ने प. बंगाल के नवाद्वीप लोकसभा सीट तृणमूल कांग्रेस से छीन ली है। माकपा के उम्मीदवार अलोकेश दास ने तृमूकां के अब्बा रंजन विश्वास को 98 हजार 800 मतों से पराजित किया। इसी प्रकार प. बंगाल के ही विद्यासागर विधान सभा सीट पर भी माकपा के आनंद साहू ने कांग्रेस के मोहुआ मंडल को 22 हजार 829 मतों के अंतर से पराजित कर वह सीट कब्जा कर लिया।

हिमाचल प्रदेश में संपन्न तीन विधानसभा सीटों पर कांग्रेस ने फतह कर अपनी मजबूत पकड़ सिद्ध कर दी है। भरमौर में ढाका सिंह, लाहौल स्पीति में रघुवीर सिंह तथा किन्नौर में जगत सिंह नेगी का कब्जा होने से कांग्रेस वाकई भाजपा से आगे निकल गयी है और इस पराजय के बाद भाजपा का अगले साल के लोकसभा चुनाव के मद्दे नजर अपने कार्यकलापों का पुनर्मूल्यांकन करना होगा क्योंकि गुजरात को छोड़ बाकी राज्यों में हुए उपचुनावों के परिणाम बताते हैं कि उसकी छवि का ग्राफ लगातार गिर रहा है।

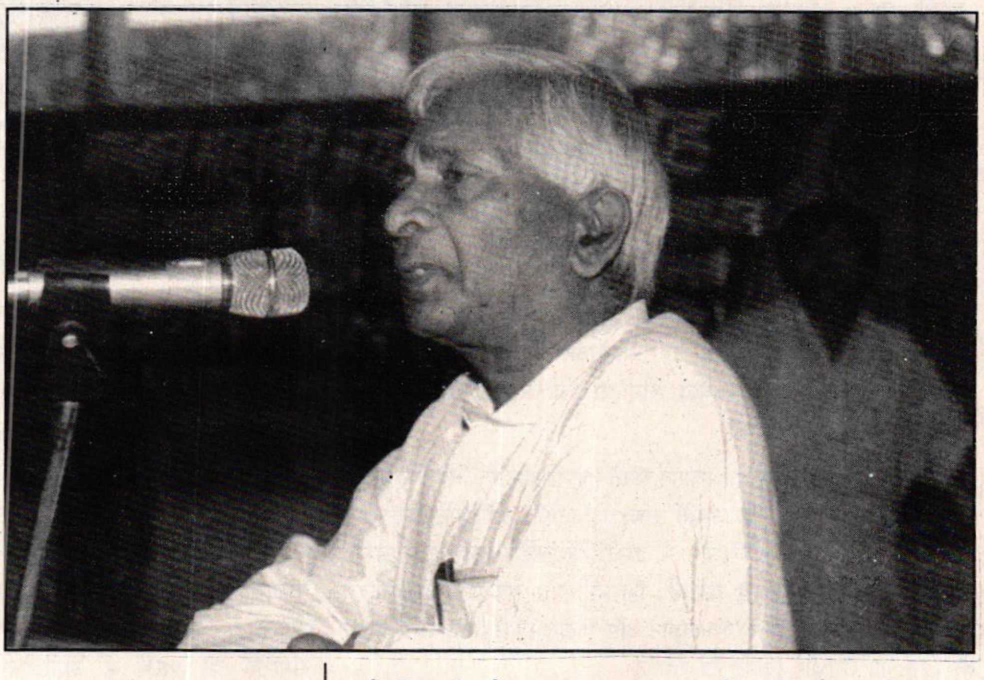

नई दिल्ली के अणुव्रत भवन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी द्वारा आयोजित भगवान महावीर जयंती समारोह में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर

साहित्य की समृद्धि में व्यंग्य का उल्लेखनीय अवदान

विचार कार्यालय, पटना

विगत 17 मई 2003 को राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार की ओर से सुप्रसिद्ध व्यंग्य रचनाकार डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव के सम्मान में मंच के पुरन्दरपुर स्थित 'बसेरा', कार्यालय प्रांगण में साहित्य की समृद्धि में व्यंग्य विधा का अवदान विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता की कवि सत्यनारायण ने। परिचर्चा के मुख्य अतिथि तथा मंच की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष डा. रमाशंकर श्रीवास्तव ने साहित्य की समृद्धि में व्यंग्य रचनाओं की अहम भूमिका पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि व्यंग्य को अनेक बिडंबनाओं से गुजरना पड़ता है तथा सामाजिक विसंगतियों की ही यह उपज है। इस दृष्टि से व्यंग्य रचनाकार को जन विरोधी शक्तियों का कभी-कभी कोपभाजन भी बनना पड़ता है। राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली के पूर्व हिंदी प्राध्यापक डा. श्रीवास्तव ने इस अवसर पर 'डोन्ट टच माई बॉडी मोहन रसिया' शीर्षक अपने एक व्यंग्य आलेख का भी पाठ किया, जिसको विचार दृष्टि के पाठकों के लिए अलग से इस अंक के 'व्यंग्य' स्तंभ में समावेश किया गया है।

प्रारंभ में मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने विषय को रखते हुए डा. श्रीवास्तव सहित परिचर्चा में पधारे रचनाकारों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। परिचर्चा में जिन अन्य व्यंग्य रचनाकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किए उनमें अभियंता बाँके बिहारी साव, अजय कुमार घोष, दुर्गाशरण मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। मंच के संयुक्त सचिव शिवकुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रबुद्ध खो चुके हैं प्रतिकार करने की क्षमता

सामाजिक-राजनीतिक परिवेश विषयक संगोष्ठी

विचार कार्यालय, पटना

मुर्ख अगर भ्रष्ट हो तो उसकी एक सीमा है किंतु बुद्धिजीवी अगर भ्रष्ट हो जाता है तो वह सीमा को पार कर जाता है। देश की वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक स्थिति में आज यही देखने को मिल रहा है और सबसे दुखद बात तो यह है कि आज के प्रबुद्धजन स्वयं हालात से इतना समझौता कर चुके हैं कि उनसे प्रतिकार की उम्मीद नहीं की जा सकती। सच तो यह है कि गलत को गलत और सही को सही कहने का साहस यदि बुद्धिजीवी में हो जाए तो परिवर्तन हो सकता है। विगत 27 अप्रैल को पटना के शेखपुरा स्थित ए.जी. कॉलोनी के के. बी. प्रसाद के निवास प्रांगण में राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा आयोजित संगोष्ठी में वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी उमेश प्रसाद सिंह तथा अन्य वक्ताओं ने ये उद्गार व्यक्त किए।

'वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य में हमारा दायित्व' विषयक इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि तथा विचार दृष्टि के संपादक सिद्धेश्वर ने इस अवसर पर कहा कि समाज के जो विचारवान व प्रबुद्धजन हैं और जिनका पेट भरा हुआ है उन्हें स्वयं के लाभ को छोड़ कुछ त्याग करना होगा खासकर सेवानिवृत प्रबुद्धजनों को कुछ लेने की बात न सोचकर समाज को कुछ देने का प्रयास करना चाहिए तभी परिवर्तन की आशा की जा सकती है। मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. साधुशरण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर चिंता प्रकट की कि आज जन विरोधी शक्तियाँ निरंतर शक्तिशाली होती जा रही है और दूसरी ओर समाज के अच्छे एवं विचारवान लोगों का हर स्तर पर दरकिनार किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में उन्हें अपनी तटस्थता त्यागकर मंच के क्रियाकलापों से जुड़ना होगा। संगोष्ठी में के. बी. प्रसाद, आर. बी.दास, नारायण झा, अवधेश प्रसाद सिन्हा, सुरेन्द्र प्रसाद सिंह, सत्यनारायण प्रसाद आदि ने भी अपने-अपने विचार रखे। ए.पी. सिन्हा ने आभार प्रकट किया।

लुप्त हो रही लोक की हिस्सेदारी और सक्रियता लोकतंत्र में

डॉ. गौतम के सम्मान में गीत-संध्या में

विचार कार्यालय, पटना

स्वातंत्र्योत्तर काल में लोकतंत्र की त्रासदी के पीछे घटिया राजनीतिक छल-प्रपंच की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, जिसका खामियाजा आज इस देश की आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। आजादी के बाद देश के संचालन के लिए अपनायी गई लोकतांत्रिक प्रणाली में आज लोक की हिस्सेदारी तथा सक्रियता ही लुप्त हो गयी है और जनता की जेबों में तंत्र भर दिया गया है। ये विचार हैं विचार दृष्टि के संपादक सिद्धेश्वर के, जिसे उन्होंने सुप्रसिद्ध नव गीतकार डॉ. राजेन्द्र गौतम के गीतों के संदर्भ में व्यक्त किए। पिछले 8 मई को पटना के सिन्हा लाइब्रेरी में राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय से पधारे डॉ. गौतम के सम्मान में आयोजित गीत संध्या में सिद्धेश्वर ने कहा कि निम्न पंक्तियाँ राजनीति के छल-प्रपंच को उजागर करती हुई रचनात्मक मन को उस द्वापर-प्रसंग की ओर खींच ले जाती हैं, जिसमें परमवीर कर्ण से उसकी शक्ति के अजेय स्रोत कवच-कुण्डल माँग लिए गए थे-

'' लो माँगने को कवच-कुण्डल का तुम्ही से वर
उगने लगे हैं मंच से फिर भाषणों के स्वर ।''

मंच की बिहार इकाई के अध्यक्ष जियालाल आर्य की अध्यक्षता में संपन्न इस 'साहित्य मिलन' की गीत-संध्या में सुपरिचित कवि सत्यनारायण ने कहा जिस चिंतन को लेकर डॉ. गौतम ने गीत विधा को आगे बढ़ाया तथा जिस परिस्थिति में आज लोग जी रहे हैं उसमें उन्होंने अपने जीवन को भी जोड़ने का प्रयास किया है और अपने गीत संग्रह 'बरगद जीते हैं' तथा 'गीत पर्व' आया है के माध्यम से गीतों को एक अलग पहचान दी है। 'तुम भी कितने बदल गए पिता सरीखे नाव' जैसे इनके गीतों की पंक्तियाँ हृदय को छू जाती हैं।

शेष पृष्ठ 50 पर .....

हम कहां सुन सकेंगे गीत गोपीवल्लभ के

गोपीवल्लभ को भावभीनी श्रद्धांजलि

विचार कार्यालय, पटना

पटना के प्रमुख साहित्यकारों, पत्रकारों एवं जे.0 पी. आंदोलन से जुड़े नागरिकों द्वारा पिछले 2 जून को पटना के बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के सौजन्य से राष्ट्रीय विचार मंच एवं राजेन्द्र साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक श्रद्धांजलि सभा में गीतकार गोपीवल्लभ सहाय को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। हिंदी साहित्य की समृद्धि में इस अकिंचन सेवक के उल्लेखनीय योगदान की चर्चा करते हुए 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने कहा कि उनके निधन से न केवल हिंदी साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है बल्कि मंच तथा 'विचार दृष्टि' का एक सुयोग्य मार्गदर्शक खो गया और देशभर का सुधि श्रोता सस्वर काव्य-पाठ करने वाले एक लोकप्रिय गीतकार के मधुर गीत, नवगीत एवं जनगीतों से वंचित हो गया।

जे.पी. आंदोलन तथा उसके पूर्व एक लंबे अरसे से कवि गोपीवल्लभ से जुड़े कवि सत्यनारायण, जिन्होंने इस श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता की, ने अपने कई मार्मिक संस्मरण सुनाए तथा कवि गोपीवल्लभ के कई चर्चित गीतों की पंक्तियाँ सुनाकर श्रोताओं को भाव विह्वल किया। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर ने भी स्व० सहाय के गीतों की चर्चा करते हुए बताया कि उनकी रचनाएं मानवीय मूल्यों और जन चेतना के सरोकारों से जुड़ी होती थीं और आज गीत परंपरा समाप्त होती जा रही है।

इस अवसर पर लेखक डॉ. वंशीधर सिंह, मदन कश्यप, प्रो० कर्मेंदु शिशिर तथा सुरेन्द्र स्निग्ध ने जहाँ कवि गोपीवल्लभ के फौलादी गीतों का विश्लेषण किया वहीं बाल साहित्याकार भगवती प्र० द्विवेदी, सतीश राज पुष्करणा, पांडे कपिल, के. के. विद्यार्थी, कृष्णानंद कृष्ण, डॉ. रवीन्द्र राजहंस, डॉ. जितेन्द्र सहाय तथा डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र ने उन्हें एक व्यक्ति नहीं आंदोलन बताते हुए कहा कि वे अंधकार के समय आलोक की एक जादुई किरण थे। अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संजय सरस्वती, बाबूलाल मधुकर, सितेन्द्र देव नारायण, बांकेनन्दन प्र. सिन्हा, हृषिकेश सुलभ, मार्कण्डेय प्रवासी, मृत्युंजय मिश्र करुणेश, डॉ. मेहता नगेन्द्र, कृष्णमोहन प्यारे, डॉ. रामशोभित प्र. सिंह, परेश सिन्हा, नृपेन्द्रनाथ गुप्त, बलभद्र कल्याण, प्रो. कैलाश स्वच्छंद तथा ज्योतिशंकर चौबे आदि ने कवि सहाय की कृतियों पर चर्चा करते हुए कहा कि उनका भाव फलक अत्यंत व्यापक और विस्तृत था। कुछ लोग युग और सीमाओं को लाँघने की क्षमता रखते हैं और गोपीवल्लभ जी निश्चय ही उनमें से एक थे। अपने श्रद्धांजलि अर्पण में प्राय: सभी साहित्यकारों ने गोपीवल्लभ की अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाशित करने का सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा कि अब हम कहां सुन सकेंगे गीत गोपीवल्लभ के। संचालन किया मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने। अंत में इस शोक सभा में एक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त-परिवार को सहनशक्ति प्रदान करने हेतु दो मिनट का मौन रख जगन्नियंता से प्रार्थना की गयी। ❖❖❖

......पृष्ठ 49 का शेषांश

समीक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने बाले इंजीनियर नचिकेता ने देश के जानेमाने समालोचकों पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि आलोचनाओं के बीच गीत को सदैव अपमान सहना पड़ा है फिर भी गीत विधा निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है। कथाकार मधुकर सिंह, भगवती प्रसाद द्विवेदी तथा गीतकार राजकुमार प्रेमी ने इस अवसर पर अपने गीत सुनाए तथा डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ. शोभित प्र० सिंह, ज्योति शंकर चौबे, डॉ. राधाकृष्ण सिंह, पत्रकार ध्रुव कुमार तथा डा. नरेश पाण्डेय 'चकोर' ने विभिन्न संगठनों की ओर से डॉ. गौतम का पाटलीपुत्र की धरती पर अभिनंदन किया। डॉ. गौतम ने अपने कई गीतों का पाठ कर उसके द्वारा कठिन समय-संवाद से परिचित कराया।

अंत में मंच की कार्यकारिणी सदस्य डॉ. कलानाथ मिश्र ने कार्यक्रम में पधारे सुधि श्रोताओं एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

गीत चेतना के सृजनधर्मी कवि गोपीवल्लभ

सत्यनारायण

गीत के सृजनधर्मी कवि गोपीवल्लभ सहाय नहीं रहे। उनका निधन संभावित था। पिछले तीन वर्षों से वह पारकिंसन रोग से जूझ रहे थे। शरीर दिन-ब-दिन छीझ रहा था। आँख की रोशनी काफी मद्धिम पड़ गई थी। ठीक से बोल भी नहीं पाते थे। विगत 9 जनवरी को कमरे में गिर जाने के कारण उनके कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। 22 मई को उनकी एकमात्र संतान, गरिमा उन्हें अपने साथ जमशेदपुर ले गई। वहीं 31 मई की सुबह दस बजे उन्होंने अंतिम सांस ली।

1 जनवरी, 1936 को जन्में गोपीवल्लभ सहाय मूलत: गीत-चेतना के सृजनधर्मी कवि थे। उनकी काव्य-प्रतिभा का विस्फोट सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में हुआ। अपने किशोर वय में ही उन्होंने रचना की यह जमीन तलाश कर ली थी जहाँ से जीवन को उसकी संपूर्णता में देखा जा सकता है। उनकी रागधर्मिता जीवन धर्मिता का पर्याय थी, 'युग-युग के/विष-बुझे कंठ से/जन्म-मरण/गीतों में गूँजा'

यह आकस्मिक नहीं था कि बिहार सरकार के पुलिस विभाग में रहते हुए गोपीवल्लभ 1974 के जे.पी. आंदोलन में शामिल होकर जोखिम मोल लिया था। अपने धारदार नुक्कड़ गीतों के साथ वे पटना के नुक्कड़ों-चौराहों पर आने का साहिस दिखाया। आम आदमी की चेतना को आम आदमी की भाषा में झकझोरने का काम किया। आज जब जनपक्षधरता के नाम पर कई उत्साही मित्र कविता को कोरा नारा बना रहे हैं, गोपीवल्लभ की कारयित्री प्रतिभा ने पूरी रचनात्मकता के साथ नारों को कविता की शक्ल दे दी-

'रोटी पर भूखे का नाम/लिखती सुबह, मिटाती शाम/ रोटी चाबुक, भूख गुलाम/नेताओं को करो प्रणाम/' अथवा 'भूखे प्यासे नंगे हमरु बोलो बम, बोलो बम/ या 'जहाँ-जहाँ, जुल्मों का गोल/ बोल जवानों हल्ला बोल।'

यह इतिहास की त्रासदी है कि चौहत्तर आंदोलन की संपूर्ण क्रांति का संकल्प केवल सत्ता परिवर्तन तक सिमट कर रह गया। गोपीवल्लभ ने मोहभंग की इस त्रासदी को इस तरह रखा, 'एक वही राजा बनकर/ एक वही रानी बनकर/मुल्क रह गया है अपना सिर्फ राजधानी बनकर/'

गोपीवल्लभ का संघर्षशील व्यक्तित्व पारिवारिक प्रतिकूलताओं से भी संघर्ष करता रहा। सन् 1960 के दशक में उनके पिता चले गये। फिर एक दुर्घटना में दुधमुंही बच्ची छोड़कर पत्नी चल बसीं। पांच नाबागिल भाई और कुंआरी बहन का भार आ पड़ा। पर वे टूटे नहीं। हालात से जूझते हुए पूरे परिवार को व्यवस्थित किया और स्वयं चालीस वर्षों तक विधुर का जीवन जिया।

गोपीवल्लभ मंचों के अत्यंत लोकप्रिय कवि रहे जिन्हें लोग (बिहार और बिहार के बाहर) आदर और प्यार से सुनते रहे। उनके स्वर का सम्मोहन श्रोताओं को आलोड़ित कर जाता था। किसी ने कभी कहा भी था कि द्वापर के कृष्ण की मुरली अब गोपीवल्लभ के कंठ में बस गई है।

आज बिहार में तेरह वर्षों से जे.पी. के शिष्य सत्ता में हैं। मुख्य विपक्ष भी खुद को जे.पी. के ाि भक्त कहता है। गोपीवल्लभ की घातक बीमारी के समाचार समय-समय पर अखबारों में आते रहे। मगर मौत से जूझते इस आंदोलनधर्मी कवि को चिकित्सा की सुविधा देना तो दूर, लालू-राबड़ी को उनका हाल-चाल लेना भी गवारां नहीं हुआ। और तो और, गोपीवल्लभ के निधन पर किसी ने औपचारिक शोक-संवेदना प्रकट करने की जहमत नहीं उठाई। ठीक ही है, सामाजिक न्यायवाली इस सरकार को साहित्यकार के नाम पर अपने छुटभइयों को पुरस्कार बाँटने और सूरीनाम का टिकट देने से फुरसत कहाँ है ? जाहिर है, मनुष्य के जीवन और समाज की बेहतरी के लिए संघर्षरत कवि और लेखक सत्ता-लोलुप नेताओं के ''वोट बैंक'' तो नहीं हो सकते न ?

सम्पर्क: डी. ब्लॉक, कदमकुँआ, पटना-3

शोकोद्गार

केदारनाथ सिंह

आया हूँ लौटकर
शोक-सभा से
मित्र कवि की,
सजन्नता भरी हुई,
हास युक्त
कैसी वह छवि थी !
अग्रज थे,
वरिष्ठ मुझसे थे
वय में,
कविताएँ कहते थे
सुर-ताल-लय में ।
जनता अभिभूत हो
सुनती थी,
प्रशंसा की चादर
परोक्ष में बुनती थी ।
देह और पीड़ा के संवाद को
मौन में लिखते रहे
अंत तक हँसमुख ही दिखते रहे ।
शोक की सभा में कुछ बोला नहीं,
संकोची स्वभाव ने
मुँह खोला नहीं ।
सत्य के नारायण
भाई सत्यनारायण जी सुनिये !
गोपी को गति दें जो वल्लभ हैं
प्राणी के
जीवों के
जड़ और चेतन के,
जिनकी अनुकंपा से
गोपीवल्लभ थे गोपीवल्लभ
जय हो लीलाधर की
लीला की जय-जय ।

संपर्कः उदयाचल, राष्ट्रकवि
दिनकर पथ(रोड नं. 12),
राजेन्द्र नगर, पटना-16

मत खेलो इतनी घृणित राजनीति

डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी

मत खेलो इतनी घृणित राजनीति
बंद करो चरित्र हनन की प्रथा।
अरे चाँद पर थूकनेवालों।
उसका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा
उल्टे तुम्हारा ही मुख-वंसन मैला होगा।
तुम्हें नहीं दिखायी, पड़ती अपनी चादर
तो यह मत समझो कि दूसरा भी नहीं देखेगा।
तुम कैसे छिपाओगे काले धब्बों को ?
हो सके तो अपने चरित्र को उठाओ
इतना ऊँचा कि दूसरे का चरित्र बौना हो जाए
तुम्हारे चरित्र के सामने।
तुम मन वाणी और कर्म से
बन जाओ इतने निश्चछ, निर्मल एवं उज्जवल
कि तुम्हारे व्यक्तित्व में आ जाए आकर्षण
लोग अपने आप अपने अपनों को छोड़कर
तुम्हारी ओर खिंचे चले आएंगे;
इसी में है तुम्हारा भला और इसी में है।
इस देश का, विश्व का, और मानवता का कल्याण

सम्पर्कः गर्ल्स हाई स्कूल एंड कॉलेज, 25 एल्गिन रोड, पो. बॉक्स-3, इलाहाबाद

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

विचार दृष्टि

अब नये तेवर व कलेवर में

- ❖ विचारोत्तेजक एवं प्रभावोत्पादक आलेख जाने-माने लेखकों की कलम से
- ❖ शानदार कागज पर जानदार छपाई
- ❖ आकर्षक साज-सज्जा में बोलती तस्वीरें
- ❖ सामाजिक राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ व कविताएँ
- ❖ सम-सामयिक मुद्दों पर निष्पक्ष एवं निर्भिक विचार व दृष्टि
- ❖ शिक्षा, सेहत, महिलाओं पर विशेष सामग्री
- ❖ कला, संस्कृति एवं साहित्य पर गहरी पड़ताल
- ❖ दिखने में सुंदर और पढ़ने में बेहतर

सदस्यता ग्रहण कर आप अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ और एक अच्छी मानसिक खुराक पायें।

प्रबंध संपादक, विचार दृष्टि

टूट गई गीत परंपरा की एक और मजबूत कड़ी

सिद्धेश्वर

गीत परंपरा के एक सशक्त हस्ताक्षर तथा जे.पी आंदोलन को अपनी रचनाओं के माध्यम से एक खास पहचान दिलानेवाले गोपीवल्लभ सहाय के असामयिक निधन से साहित्य जगत को एक गहरा धक्का लगा। खासकर बिहार के सहित्यकार उनके निधन से मर्माहत हैं। जीवन में चंद लोग होंगे जिन्हें रचनाकारों ने देखा-समझा और अच्छा पाया। जिनमें अपनापन पाया उनमें गोपीवल्लभ जी एक थे, उनमें अपूर्व धैर्य, साहस और तितिक्षा का मेल था। अस्तु उन्होंने अपने दुख और आँसुओं को अंदर ही अंदर सहा, उन्हें प्रकट नहीं होने दिया और न किसी हीन भावना को अपने पास फटकने दिया। वस्तुत: जीवन भर संवेदना का संबल लेकर पनपनेवाले अक्षयवर गोपीवल्लभ जी ने संघर्षमय परिस्थितियों एवं कंटकाकीर्ण मार्गों में अपनी दृढ़ता को बनाये रखा। 'जातस्य हि ध्रुवम् मृत्युः जन्म मतस्य च', अर्थात् जन्म लेने की मृत्यु और मरनेवाले का जन्म सुनिश्चित है। इस ब्रह्मसत्य को स्वीकारना ही आस्तिकता है। सो अपनी दीर्घकालिक अस्वस्थता के बाद गोपीवल्लभ जी अनंत में विलीन हो गये 31 मई, 2003 को। इस पर विश्वास तो नहीं होता पर सत्य तो बहुत कठोर है। दरअसल उनकी यह मृत्यु अनेक मामलों में एक ईमानदार गीतकार के गीत-सृजन की मृत्यु है।

गोपीवल्लभ जी कवि थे, कविहृदय रखते थे। जीवन में उन्हें कई विकटतम परिस्थितियों में रखा। 25 वर्ष की उम्र में ही पत्नी-शोक भी उन्हें मिला। उससे उत्पन्न हृदय की टीस को भी उन्होंने इस प्रकार कविताबद्ध किया था -

गीत दो लिखे मैंने, जन्म के, मरण के।
एक तुम न सुन सकी, एक मैं न गा सका।

1964 में ही 25 वर्ष के उम्र में उन्होंने अपनी पत्नी कृष्णा के निधन पर पुन: लिखा-

बिखर जो गया स्वप्न मेरा तुम्हारा
न तुमने सवाँरा न हमने सवाँरा,
विदा लो, उसी हाथ से अब विदा लो
भरी माँग जिससे, उसी से चिता लो

दर्द से उनका अटूट रिश्ता था, दूसरे के दर्द को भी वे भली-भाँति अवगाहते थे। हिंदी में गीत तो बहुत लिखे गए और लिखे जा रहे हैं, किंतु अपने देश और व समाज की वर्तमान स्थिति को विषय बनाकर गीत लिखने का जो प्रयास गोपीवल्लभ ने किया वह स्तुत्य है। उनके

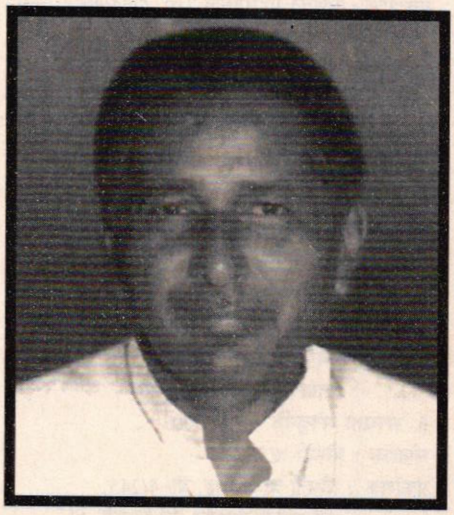

निधन से गीत परंपरा की एक और मजबूत कड़ी टूट गई। निश्चित रूप से स्वार्थपरक राजनीति के धरातल पर पनपनेवाली अवसरवादी व्यवस्था की नींद में खलल डालने का कार्य उन्होंने जे.पी. आंदोलन के वक्त किया। गोपीवल्लभ की कलम ने आग को गीतों में ढालकर जनता की बेचैनी को शब्दों में बाँधा। उनका कहना था - 'जो कविता जन-जीवन के दुख-दर्द को नहीं सहलाती वह चिरजीवी नहीं हो सकती।' आखिर तभी तो उनकी निम्न पंक्तियाँ अपने समय की धड़कनों पर ऊँगली रखती दिखाई देती हैं -

अगर चाहते नया सबेरा लाना तुम
सिर्फ सूर्य ही नहीं, गगन को भी बदलो
अगर चाहते हो बहार इस धरती पर
केवल माली नहीं चमन को भी बदलो ।

कवि गोपीवल्लभ का मानना था कि वास्तविक बदलाव मात्र सत्ता परिवर्तन से नहीं, व्यवस्था के आमूल-चूल परिवर्तन से ही संभव है। आज की राजनीति से क्षुब्ध गोपीवल्लभ ने मुझसे एक साक्षात्कार में कहा था कि जे.पी. ने जिन आदर्शों और मूल्यों को लेकर संपूर्ण क्रांति के रूप में देश के अंदर समस्याओं के पैदा करनेवालों पर चोट की थी उसे उनके सहयोगियों ने भूला दिया। जे.पी. की संपूर्ण क्रांति के अधूरे सपनों के सवाल पर उन्होंने कहा था- हमारे बेटे और बेटियों की पीढ़ी जबतक नहीं बदलेगी, तबतक संपूर्ण क्रांति के सपने अधूरे रहेंगे। हमको बदलना था, हम बदल गये। हमारी बेटियों और बेटों के रक्त में शायद वह तेजी और तनाव नहीं है, जो 74 आंदोलन में हमसबों में था। भ्रष्ट राजनीति एवं जातिवादी नेतृत्व और निहित स्वार्थों के बोझ तले कराहते हुए देश में नागरिकों के आंसू पोछनेवाला कोई नजर नहीं आता, इसपर उनकी प्रतिक्रिया थी- राजनीति में अच्छे लोग जबतक नहीं आएँगे, तबतक गंदा साफ कैसे होगा।

लगभग 300 गीतों, 100 कविताएँ, 'बंजर में बीज' काव्य-संग्रह के रचयिता गोपीवल्लभ एक व्यक्ति नहीं बल्कि आंदोलन थे, वे अंधकार के समय आलोक की एक जादुई किरण थे। उनका भाव-फलक व्यापक और विस्तृत था। कुछ लोग युग और सीमाओं को लांघने की क्षमता रखते हैं और गोपीवल्लभ जी निश्चय ही उनमें से एक थे। उनके निधन से राष्ट्रभाषा हिंदी ने जहाँ एक ओर अपना एक अनन्य आकिंचन खोया है, वही **विचार दृष्टि** पत्रिका एक समर्थ मार्गदर्शक से वंचित हो गई। वे अपने पीछे अपनी एकमात्र बेटी, रूग्न-शैया पर पड़े भाई रामाजी, छोटे भाई प्रेमवल्लभ तथा हिंदी जगत के सैंकड़ों शुभेच्छू छोड़ गये हैं। वे अविस्मरणीय हैं। उनकी कर्मठता, पौरुष और सृजनशीलता के समक्ष हमसब मन ही मन नतमस्तक हैं। अचानक हमारे बीच से उठकर वे वहाँ चले गये जहाँ से कोई वापस आता नहीं। उनकी याद भर से आँखों में आँसू भर आते हैं-

सुख के आँसू दुखी,
मित्रों की जाया के
भर आए आँखों में
गोपी की माया से ।

उनकी स्मृति को नमन !

❖ ❖ ❖

साभार-स्वीकार

पुस्तकें :

1. स्याह सच - लघुकथा संग्रह
लेखक - हृषीकेश पाठक
प्रकाशक: आनंदाश्रम प्रकाशन, सीडीए कॉलोनी, केसरीनगर, पटना-24

2. नीर भरे नयना - काव्य संग्रह
कवि - मनु सिंह
प्रकाशक: श्रुति प्रकाशन, पटना-1

3. जीवन दीप - कहानी
कथाकार: विष्णु प्रभाकर
प्रकाशक: जीवन प्रभाव प्रकाशन, ए 4/1, कृपानगर, मुम्बई-56

4. स्वरूपा: एक स्मृति - उपन्यास
उपन्यासकार: वन्दना वीथिका
प्रकाशक: दरअसल प्रकाशन, दक्षिणी मंदिरी, पटना-1

5. मालूम नहीं अंजाम - गज़ल संग्रह
लेखिका: वन्दना वीथिका
प्रकाशक: दरअसल प्रकाशन, पटना-1

6. माँ की आत्मकथा - आत्मकथा
लेखिका: राधा देवी
प्रकाशक: दरअसल प्रकाशन, पटना-1

7. नालन्दा के 2500 वर्ष (भाग-1)
संपादक: डॉ. गोपालशरण सिंह
प्रकाशक: शैक्षणिक विकास संस्थान, नालन्दा-803111

8. सुमिरास्को ऑन रामकृष्ण - काव्य-संग्रह
संपादक: कामेश्वर प्रसाद, शैलेश्वर सती प्रसाद
प्रकाशक: ए. के. झा, नोवल्टी एण्ड कं., अशोक राजपथ, पटना-4

9. मेरे स्वर हैं भाव तुम्हारे - काव्य संग्रह
संपादक: रामचरण सिंह साथी
प्रकाशक: अमृत प्रकाशन, 1/5170, लेन नं.-8, बलवीर नगर, शाहदरा, दिल्ली-32

10. श्री भागवत प्रवचन दृष्टांत मंजरी
लेखक: आचार्य श्री अवस्थी
प्रकाशक: वैदिक आध्यात्म चेतना मिशन, वैष्णव कॉलोनी, पिपरली रोड, सीकर(राजस्थान)

11. (1) Finding your Spiritual Centre
(2) The Quest for Truth
ग्रंथाकार: आचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशक: जैन विश्वभारती इंस्टीच्यूट, लाडनू, राजस्थान

12. गाँव गाय ग्रामोद्योग स्वाभिमान
लेखक: कमल टावरी
प्रकाशक: समग्र प्रशिक्षण अनुसंधान और विकास संस्थान, वर्धा

पत्रिकाएँ

1. हम सब साथ साथ - मई, जून, 2003
संपादक: श्रीमती शशि श्रीवास्तव,
प्रकाशन: प्लाट न० 175ए, आनंदपुरमधाम, कराला, दिल्ली-110081

2. अणुव्रत - 16-30 जून, 2003
संपादक : डॉ० महेन्द्र कर्णावट,
प्रकाशक : अणुव्रत महासमिति 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, दिल्ली-2

3. प्रारम्भ शैक्षिक संवाद
संपादक: कमलेशचन्द्र जोशी
प्रकाशक: एफ-4, चन्द्रा इन्क्लेव, 104, चाँदगंज गार्डन, लखनऊ

4. राष्ट्रभाषा- मई, 2003
संपादक: प्रा० अनंतराम त्रिपाठी
प्रकाशक: राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003

5. शब्द - मई 2003
संपादक: आरसी यादव
प्रकाशक: शब्दपीठ, सी-1104, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016, ऊ०प्र०

6. सभ्यता संस्कृति - मई, 2003
संपादक : श्रीमती ऋचा सिंह
प्रकाशक : श्रीमती ऋचा सिंह, बी-4/245, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-29

7. सदीनामा -1-30 अप्रैल, 2003
संपादक : जितेन्द्र जितांशु
प्रकाशन : एच-5, गवर्नमेंट क्वार्टर, बजबज, 24 परगना(द), पश्चिम बंगाल

8. भारतीय रेल - मार्च-अप्रैल, 2003
संपादक : प्रमोद कुमार यादव
प्रकाशक: रेल मंत्रालय, 309, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1

9. लोक शिक्षक - मार्च-अप्रैल, 2003
संपादक: डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी
प्रकाशक: के-14,अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-1

10. शोषित मुक्ति - मार्च, 2003
संपादक : श्री उन्तीसवाँ व्यास
प्रकाशक: कुर्मी विकास परिषद, डी-सी-23, कंकड़बाग, पटना-20

11. अम्बेडकर मिशन पत्रिका-मार्च-मई, 03
संपादक: बुद्धशरण हंस
प्रकाशक: अम्बेडकर मिशन, चितकोहरा, पो० अनीशाबाद, पटना-2

12. जन संसार अंक-6, 2003
संपादक: गीतेश शर्मा
प्रकाशक: फोरम फोर नेशन एफेयर्स, 19-बी, चौरंगी रोड, कोलकाता-87

13. अलका मागधी - अप्रैल, मई, 2003
संपादक : अभिमन्यु प्र० मौर्य
प्रकाशक : नंदा आर्य, रामलखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना-1

14. कालान्तर - मार्च, 2003
संपादक: डॉ० पुष्पेश पंत
प्रकाशक: कालान्तर प्रकाशन, प्रथम तल, 29, बाजार लेन, बंगाली मार्केट, दिल्ली

15. संकल्प रथ - मार्च, 2003
संपादक : राम अधीर
प्रकाशन : 108/1, शिवाजी नगर, भोपाल-16

16 रैन बसेरा - मई 2003
प्रधान संपादक : डॉ. जय सिंह 'व्यथित'
प्रकाशक : गुजरात हिंदी विद्यापीठ
कमलेश पार्क, महेश्वरी नगर ओढ़व, अहमदाबाद-382415

17. मित्र संगम पत्रिका - जून, 2003
संपादक : प्रेम वोहरा
प्रकाशक : मित्र संगम संस्था, 35बी - पुरानी गुप्ता कॉलोनी दिल्ली-9

18. शक्तिरूपा - मासिक(प्रवेशांक), 2003
संपादक : संगीता रमण
प्रकाशक : मंगल भवन, चित्रगुप्त मार्ग, पटना-1

19. झिलमिल जुगनू - मार्च, अप्रैल, 2003
संपादक : सुमन्त
प्रकाशक : ईस्ट एण्ड वेस्ट एजुकेशनल सोसाइटी, आरोग्य मंदिर परिसर, आर.के. एवेन्यू, पटना-4

20. भाषा-भारती संवाद जन०-अप्रैल-03
संपादक: नृपेन्द्रनाथ गुप्त
प्रकाशक: अ०भा०भा०साहित्य सम्मेलन, बिहार
श्री उदित आयतन, शेखपुरा, पटना-14

21. मेरा रक्षक - 2003
प्र०संपादक: डॉ. मधुधवन
प्रकाशक: तामिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ, पांचाली अम्मन, ओविल स्ट्रीट, असम्बाक्कम, चेन्नई-600106

22. कूर्मि क्षत्रिय जागरण - मार्च, अप्रैल,03
संपादक: पटेल जे. पी. कनौजिया
प्रकाशक : अ०भा०कू०क्ष० महासभा, पटेल धर्मशाला, 2014, विराट नगर, यशोदानगर, वाईपास चौराहा, किदवईनगर, कानपुर, 208011

23. साहित्य सेतु सागर-अक्टू.02, अप्रैल 03
संपादक: प्रभाकर शेजवाडकर
प्रकाशक: कला वैभव, एम-116, 20वी. लेन, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, आल्टोबेतीन, परवरी, गोवा

Solutions Point

For

SOLUTIONS IN :

- **Hardware**
- **Software**
- **Networking Support**
- **Graphic Designing**
- **Web Designing**
- **Composing**
- **Scanning**
- **Art Work**

AMC, Maintenance of IBM, COMPAQ, H.P., Zenith and can be had assembled Pc's

Contact :

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92

Ph. : 011-22530652

Mobile : 9811281443, 9811279351, 9868073101

Branch Office : 102, Sec 1, Vaishali, Ghaziabad, U.P.

E-mail : Solutionspoint@hotmail.com

HURRY UP

New Books New Syllabus

Then Why Struck to old

Join Study Point

Contact For Tuition

Up to 7th Class-All Subjects

8th to 10th Class-Science Subjects

Phone : 011-22530653

Mobile : 9811281443

त्रिमूर्ति ज्वैलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष : 65765, फैक्स : 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज, पटना-800004

दूरभाष : 662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चांदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। सम्पादक-सिद्धेश्वर

स्मृति चित्र

एक वही राजा बनकर, एक वही रानी बनकर
मुल्क रह गया है अपना, सिर्फ राजधानी बनकर।

भूखे प्यासे नंगे हम, बोलो बम बोलो बम
जहाँ जहाँ जुल्मों का गोल, बोल जवानों हल्ला बोल।

अगर चाहते नया सवेरा लाना तुम
सिर्फ सूर्य ही नहीं, गगन को भी बदलो
अगर चाहते हो बहार इस धरती पर
केवल माली नहीं चमन को भी बदलो।

वर्ष : 5 अंक : 16 जुलाई–सितंबर 2003 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

INDIAN INSTITUTE OF HEALTH EDUCATION & RESEARCH

HEALTH INSTITUTE ROAD, BEUR, PATNA

(Recognised by the Govt. of Bihar and Rehabilitation Council of India)

Affiliated to the Magadh University, Bodh Gaya

The Institute is Presently Conducting the Following Courses :

Degree Courses :

1. Bachelor of Physiotherapy (B.P.T.)
2. Bachelor of Occupational Therapy (B.O.T.)
3. Bachelor of Prosthetic & Orthotic (B.P. & O.)
4. Bachelor of Audiology, Speech & Language Pathology (BASLP)
5. Bachelor of Mental Retardation (BMR)
6. B. Ed. (Special Education)

Diploma Courses :

1. Diploma in Physiotherapy
2. Diploma in Prosthetic & Orthotic
3. Diploma in X-Ray Technology
4. Diploma in Medical Laboratory Technology
5. P.G. Diploma in Hospital Management

Certificate Course :

1. E.C.G. Technician
2. Dresser
3. O.T. Technician
4. Foundation Course for Teachers in Disability

निम्नलिखित निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पधारें :

स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श, टीकाकरण, फिजियोथेरापी, अकुपेशनलथेरापी, स्पीचथेरापी, सभी प्रकार की विकलांगता, पोलियो, लकवा, गठिया, हड्डी जोड़ों एवं नस से संबंधित सभी प्रकार के रोगों की जांच एवं उपचार, हकलाना-तुतलाना सहित गूंगे-बहरों की जांच एवं उपचार, हियरिंग-एड, मानसिक विकलांगता तथा मंद बुद्धिमता-जांच एवं उपचार, कृत्रिम हाथ, पैर कैलिपर, पोलियो के जूते, वैशाखी, सरवाइकल कॉलर, बेल्ट आदि का निर्माण एवं वितरण, लाचार विकलांगों को तिपहिया साइकिल तथा व्हीलचेयर, विकलांगों की शल्य चिकित्सा (सर्जिकल करेक्शन), रियायती दर पर पैथोलोजिकल जांच, एक्स-रे तथा शल्य चिकित्सा।

Dr. K.C. Brahma
Director, Academy

Forms & Prospectus :

Can be obtained from the office against payment of Rs. 100/- only send a D/D of Rs. 120/- only in favour of "Indian Institute of Health Education & Research, Patna" for Postal delivery.

Anil Sulabh
Chairman-Cum-Director-in-Chief